"અહો ! શ્રુતજ્ઞાનમ્" ગ્રંથ જીર્ણોદ્ધાર ૧૯૧

સંગીત મકરન્દ

: દ્રવ્ય સહાયક :

પૂ. આ. શ્રી જિનચન્દ્રસૂરીશ્વરજી મ.સા.ના આજ્ઞાનુવર્તિની
પૂ. સા. શ્રી સુલોચનાશ્રીજી મ. ના શિષ્યા
પૂ. સા. શ્રી સુર્યકળાશ્રીજી મ. ની પ્રેરણાથી
શ્રી હસ્તગિરિ એપાર્ટમેન્ટ, સાબરમતી
શ્રાવિકા ઉપાશ્રયની જ્ઞાનદ્રવ્યની ઉપજમાંથી

: સંયોજક :

શાહ બાબુલાલ સરેમલ બેડાવાળા
શ્રી આશાપૂરણ પાર્શ્વનાથ જૈન જ્ઞાનભંડાર
શા. વિમળાબેન સરેમલ જવેરચંદજી બેડાવાળા ભવન
હીરાજૈન સોસાયટી, સાબરમતી, અમદાવાદ-૫
(મો.) 9426585904 (ઓ.) 22132543

સંવત ૨૦૭૧ ઈ. ૨૦૧૫

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com
शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६५ (ई. 2009) सेट नं.-१

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

ક્રમાંક	પુસ્તકનું નામ	કર્તા-ટીકાકાર-સંપાદક	પૃષ્ઠ
001	श्री नंदीसूत्र अवचूरी	पू. विक्रमसूरिजी म.सा.	238
002	श्री उत्तराध्ययन सूत्र चूर्णी	पू. जिनदासगणि चूर्णीकार	286
003	श्री अर्हद्गीता-भगवद्गीता	पू. मेघविजयजी गणि म.सा.	84
004	श्री अर्हच्चूडामणि सारसटीकः	पू. भद्रबाहुस्वामी म.सा.	18
005	श्री यूक्ति प्रकाशसूत्रं	पू. पद्मसागरजी गणि म.सा.	48
006	श्री मानतुङ्गशास्त्रम्	पू. मानतुंगविजयजी म.सा.	54
007	अपराजितपृच्छा	श्री बी. भट्टाचार्य	810
008	शिल्प स्मृति वास्तु विद्यायाम्	श्री नंदलाल चुनिलाल सोमपुरा	850
009	शिल्परत्नम् भाग-१	श्रीकुमार के. सभात्सव शास्त्री	322
010	शिल्परत्नम् भाग-२	श्रीकुमार के. सभात्सव शास्त्री	280
011	प्रासादतिलक	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	162
012	काश्यशिल्पम्	श्री विनायक गणेश आपटे	302
013	प्रासादमञ्जरी	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	156
014	राजवल्लभ याने शिल्पशास्त्र	श्री नारायण भारती गोंसाई	352
015	शिल्पदीपक	श्री गंगाधरजी प्रणीत	120
016	वास्तुसार	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	88
017	दीपार्णव उत्तरार्ध	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	110
018	જિનપ્રાસાદ માર્તણ્ડ	શ્રી નંદલાલ ચુનીલાલ સોમપુરા	498
019	जैन ग्रंथावली	श्री जैन श्वेताम्बर कोन्फ्रन्स	502
020	હીરકલશ જૈન જ્યોતિષ	શ્રી હિમ્મતરામ મહાશંકર જાની	454
021	न्यायप्रवेशः भाग-१	श्री आनंदशंकर बी. ध्रुव	226
022	दीपार्णव पूर्वार्ध	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	640
023	अनेकान्त जयपताकाख्यं भाग-१	पू. मुनिचंद्रसूरिजी म.सा.	452
024	अनेकान्त जयपताकाख्यं भाग-२	श्री एच. आर. कापडीआ	500
025	प्राकृत व्याकरण भाषांतर सह	श्री बेचरदास जीवराज दोशी	454
026	तत्त्पोपप्लवसिंहः	श्री जयराशी भट्ट, बी. भट्टाचार्य	188
027	शक्तिवादादर्शः	श्री सुदर्शनाचार्य शास्त्री	214
028	क्षीरार्णव	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	414
029	वेधवास्तु प्रभाकर	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	192

030	**शिल्परत्नाकर**	**श्री नर्मदाशंकर शास्त्री**	**824**
031	**प्रासाद मंडन**	**पं. भगवानदास जैन**	**288**
032	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-१**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**520**
033	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-२**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**578**
034	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-३ (१)**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**278**
035	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-3 (२) (३)**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**252**
036	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-५**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**324**
037	વાસ્તુનિઘંટુ	પ્રભાશંકર ઓઘડભાઈ સોમપુરા	302
038	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૧	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	196
039	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૨	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	190
040	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૩	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	202
041	સપ્તસન્ધાન મહાકાવ્યમ્	પૂ. વિજયઅમૃતસૂરિશ્વરજી	480
042	સપ્તભઙ્ગીમિમાંસા	પૂ. પં. શિવાનન્દવિજયજી	228
043	ન્યાયાવતાર	સતિષચંદ્ર વિદ્યાભૂષણ	60
044	વ્યુત્પત્તિવાદ ગુઢાર્થતત્ત્વાલોક	શ્રી ધર્મદત્તસૂરિ (બચ્છા ઝા)	218
045	સામાન્યનિર્યુક્તિ ગુઢાર્થતત્ત્વાલોક	શ્રી ધર્મદત્તસૂરિ (બચ્છા ઝા)	190
046	સપ્તભઙ્ગીનયપ્રદીપ બાલબોધિનીવિવૃત્તિઃ	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	138
047	વ્યુત્પત્તિવાદ શાસ્ત્રાર્થકલા ટીકા	શ્રીવેણીમાધવ શાસ્ત્રી	296
048	નયોપદેશ ભાગ-૧ તરઙ્ગિણીતરણી	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	210
049	નયોપદેશ ભાગ-૨ તરઙ્ગિણીતરણી	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	274
050	ન્યાયસમુચ્ચય	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	286
051	સ્યાદ્યાર્થપ્રકાશઃ	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	216
052	દિન શુદ્ધિ પ્રકરણ	પૂ. દર્શનવિજયજી	532
053	બૃહદ્ ધારણા યંત્ર	પૂ. દર્શનવિજયજી	113
054	જ્યોતિર્મહોદય	સં. પૂ. અક્ષયવિજયજી	112

શ્રી આશાપૂરણ પાર્શ્વનાથ જૈન જ્ઞાનભંડાર

સંયોજક – બાબુલાલ સરેમલ શાહ
શાહ વીમળાબેન સરેમલ જવેરચંદજી બેડાવાળા ભવન
હીરાજૈન સોસાયટી, રામનગર, સાબરમતી, અમદાવાદ-૦૫.
(મો.) ૯૪૨૬૫૮૫૯૦૪ (ઓ) ૨૨૧૩૨૫૪૩ (ઇ-મેલ) ahoshrut.bs@gmail.com

અહો શ્રુતજ્ઞાનમ્ ગ્રંથ જીર્ણોદ્ધાર – સંવત ૨૦૬૬ (ઈ. ૨૦૧૦) – સેટ નં-૨

પ્રાયઃ જીર્ણ અપ્રાપ્ય પુસ્તકોને સ્કેન કરાવીને ડી.વી.ડી. બનાવી તેની યાદી.

આ પુસ્તકો www.ahoshrut.org વેબસાઇટ પરથી પણ ડાઉનલોડ કરી શકાશે.

ક્રમ	પુસ્તકનું નામ	ભાષા	કર્તા-ટીકાકાર-સંપાદક	પૃષ્ઠ
055	श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहद्न्यास अध्याय-६	सं	पू. लावण्यसूरिजी म.सा.	296
056	विविध तीर्थ कल्प	सं	पू. जिनविजयजी म.सा.	160
057	ભારતીય જૈન શ્રમણ સંસ્કૃતિ અને લેખનકળા	ગુજ.	पू. पूण्यविजयजी म.सा.	164
058	सिद्धान्तलक्षणगूढार्थ तत्त्वलोकः	सं	श्री धर्मदत्तसूरि	202
059	व्याप्ति पञ्चक विवृत्ति टीका	सं	श्री धर्मदत्तसूरि	48
060	જૈન સંગીત રાગમાળા	ગુ.	श्री मांगरोळ जैन संगीत मंडळी	306
061	चतुर्विंशतीप्रबन्ध (प्रबंध कोश)	सं	श्री रसिकलाल एच. कापडीआ	322
062	व्युत्पत्तिवाद आदर्श व्याख्यया संपूर्ण ६ अध्याय	सं	श्री सुदर्शनाचार्य	668
063	चन्द्रप्रभा हेमकौमुदी	सं	पू. मेघविजयजी गणि	516
064	विवेक विलास	सं/ગુ.	श्री दामोदर गोविंदाचार्य	268
065	पञ्चशती प्रबोध प्रबंध	सं	पू. मृगेन्द्रविजयजी म.सा.	456
066	सन्मतितत्त्वसोपानम्	सं	पू. लब्धिसूरिजी म.सा.	420
067	ઉપદેશમાલા દોઘટ્ટી ટીકા ગુર્જરાનુવાદ	ગુજ.	पू. हेमसागरसूरिजी म.सा.	638
068	मोहराजापराजयम्	सं	पू. चतुरविजयजी म.सा.	192
069	क्रियाकोश	सं/हिं	श्री मोहनलाल बांठिया	428
070	कालिकाचार्यकथासंग्रह	सं/ગુ.	श्री अंबालाल प्रेमचंद	406
071	सामान्यनिरुक्ति चंद्रकला कलाविलास टीका	सं.	श्री वामाचरण भट्टाचार्य	308
072	जन्मसमुद्रजातक	सं/हिं	श्री भगवानदास जैन	128
073	मेघमहोदय वर्षप्रबोध	सं/हिं	श्री भगवानदास जैन	532
074	જૈન સામુદ્રિકનાં પાંચ ગ્રંથો	ગુજ.	श्री हिम्मतराम महाशंकर जानी	376

075	જૈન ચિત્ર કલ્પદ્રૂમ ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	**374**
076	જૈન ચિત્ર કલ્પદ્રૂમ ભાગ-૨	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	**238**
077	સંગીત નાટ્ય રૂપાવલી	ગુજ.	**श्री विद्या साराभाई नवाब**	**194**
078	ભારતનાં જૈન તીર્થો અને તેનું શિલ્પસ્થાપત્ય	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	**192**
079	શિલ્પ ચિન્તામણિ ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री मनसुखलाल भुदरमल**	**254**
080	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	**260**
081	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૨	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	**238**
082	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૩	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	**260**
083	આયુર્વેદના અનુભૂત પ્રયોગો ભાગ-૧	ગુજ.	**पू. कान्तिसागरजी**	**114**
084	કલ્યાણ કારક	ગુજ.	**श्री वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री**	**910**
085	**विश्वलोचन कोश**	सं./हिं	**श्री नंदलाल शर्मा**	**436**
086	કથા રત્ન કોશ ભાગ-1	ગુજ.	**श्री बेचरदास जीवराज दोशी**	**336**
087	કથા રત્ન કોશ ભાગ-2	ગુજ.	**श्री बेचरदास जीवराज दोशी**	**230**
088	હસ્તસઞ્જીવનમ્	સં.	**पू. मेघविजयजीगणि**	**322**
089	એન્દ્રચતુર્વિંશતિકા	સં.	**पू.यशोविजयजी, पू. पुण्यविजयजी**	**114**
090	સમ્મતિ તર્ક મહાર્ણવાવતારિકા	સં.	**आचार्य श्री विजयदर्शनसूरिजी**	**560**

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com

शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन

हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६७ (ई. 2011) सेट नं.-३

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / टीकाकार	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
91	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-१	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	272
92	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-२	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	240
93	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-३	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	254
94	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-४	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	282
95	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-५	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	118
96	पवित्र कल्पसूत्र	पुण्यविजयजी	सं./अं	साराभाई नवाब	466
97	समराङ्गण सूत्रधार भाग-१	भोजदेव	सं.	टी. गणपति शास्त्री	342
98	समराङ्गण सूत्रधार भाग-२	भोजदेव	सं.	टी. गणपति शास्त्री	362
99	भुवनदीपक	पद्मप्रभसूरिजी	सं.	वेंकटेश प्रेस	134
100	गाथासहस्त्री	समयसुंदरजी	सं.	सुखलालजी	70
101	भारतीय प्राचीन लिपीमाला	गौरीशंकर ओझा	हिन्दी	मुन्शीराम मनोहरराम	316
102	शब्दरत्नाकर	साधुसुन्दरजी	सं.	हरगोविन्ददास बेचरदास	224
103	सुबोधवाणी प्रकाश	न्यायविजयजी	सं./गु	हेमचंद्राचार्य जैन सभा	612
104	लघु प्रबंध संग्रह	जयंत पी. ठाकर	सं.	ओरीएन्ट इन्स्टीट्युट बरोडा	307
105	जैन स्तोत्र संचय-१-२-३	माणिक्यसागरसूरिजी	सं,	आगमोद्धारक सभा	250
106	सन्मति तर्क प्रकरण भाग-१,२,३	सिद्धसेन दिवाकर	सं.	सुखलाल संघवी	514
107	सन्मति तर्क प्रकरण भाग-४,५	सिद्धसेन दिवाकर	सं.	सुखलाल संघवी	454
108	न्यायसार – न्यायतात्पर्यदीपिका	सतिषचंद्र विद्याभूषण	सं.	एसियाटीक सोसायटी	354
109	जैन लेख संग्रह भाग-१	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	337
110	जैन लेख संग्रह भाग-२	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	354
111	जैन लेख संग्रह भाग-३	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	372
112	जैन धातु प्रतिमा लेख भाग-१	कांतिविजयजी	सं./हि	जिनदत्तसूरि ज्ञानभंडार	142
113	जैन प्रतिमा लेख संग्रह	दौलतसिंह लोढा	सं./हि	अरविन्द धामणिया	336
114	राधनपुर प्रतिमा लेख संदोह	विशालविजयजी	सं./गु	यशोविजयजी ग्रंथमाळा	364
115	प्राचिन लेख संग्रह-१	विजयधर्मसूरिजी	सं./गु	यशोविजयजी ग्रंथमाळा	218
116	बीकानेर जैन लेख संग्रह	अगरचंद नाहटा	सं./हि	नाहटा ब्रधर्स	656
117	प्राचीन जैन लेख संग्रह भाग-१	जिनविजयजी	सं./हि	जैन आत्मानंद सभा	122
118	प्राचिन जैन लेख संग्रह भाग-२	जिनविजयजी	सं./हि	जैन आत्मानंद सभा	764
119	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-१	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	404
120	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-२	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	404
121	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-३	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	540
122	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-१	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	274
123	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-४	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	414
124	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-५	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	400
125	कलेक्शन ऑफ प्राकृत एन्ड संस्कृत इन्स्क्रीप्शन्स	पी. पीटरसन	अं.	भावनगर आर्चीऑलॉजीकल डिपा.	320
126	विजयदेव माहात्म्यम्	जिनविजयजी	सं.	जैन सत्य संशोधक	148

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com

शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन

हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६८ (ई. 2012) सेट नं.-४

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / संपादक	भाषा	प्रकाशक	पृष्ठ
127	महाप्रभाविक नवस्मरण	साराभाई नवाब	गुज.	साराभाई नवाब	754
128	जैन चित्र कल्पलता	साराभाई नवाब	गुज.	साराभाई नवाब	84
129	जैन धर्मनो प्राचीन इतिहास भाग-२	हीरालाल हंसराज	गुज.	हीरालाल हंसराज	194
130	ओपरेशन इन सर्च ओफ सं. मेन्यु. भाग-६	पी. पीटरसन	अंग्रेजी	एशियाटीक सोसायटी	171
131	जैन गणित विचार	कुंवरजी आणंदजी	गुज.	जैन धर्म प्रसारक सभा	90
132	दैवज्ञ कामधेनु (प्राचिन ज्योतिष ग्रंथ)	शील खंड	सं.	ब्रज. बी. दास बनारस	310
133	करण प्रकाशः	ब्रह्मदेव	सं./अं.	सुधाकर द्विवेदि	276
134	न्यायविशारद महो. यशोविजयजी स्वहस्तलिखित कृति संग्रह	यशोदेवसूरिजी	गुज.	यशोभारती प्रकाशन	69
135	भौगोलिक कोश-१	डाह्याभाई पीतांबरदास	गुज.	गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी	100
136	भौगोलिक कोश-२	डाह्याभाई पीतांबरदास	गुज.	गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी	136
137	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-१ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	266
138	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-१ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	244
139	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-२ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	274
140	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-२ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	168
141	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-३ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	282
142	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-३ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	182
143	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-१	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	384
144	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-२	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	376
145	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-३	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	387
146	भाषवति	शतानंद मारछता	सं./हि	एच.बी. गुप्ता एन्ड सन्स बनारस	174
147	जैन सिद्धांत कौमुदी (अर्धमागधी व्याकरण)	रत्नचंद्र स्वामी	प्रा./सं.	भैरोदान सेठीया	320
148	मंत्रराज गुणकल्प महोदधि	जयदयाल शर्मा	हिन्दी	जयदयाल शर्मा	286
149	फक्कीका रत्नमंजूषा-१, २	कनकलाल ठाकूर	सं.	हरिकृष्ण निबंध	272
150	अनुभूत सिद्ध विशायंत्र (छ कल्प संग्रह)	मेघविजयजी	सं./गुज	महावीर ग्रंथमाळा	142
151	सारावलि	कल्याण वर्धन	सं.	पांडुरंग जीवाजी	260
152	ज्योतिष सिद्धांत संग्रह	विश्वेश्वरप्रसाद द्विवेदी	सं.	ब्रीजभूषणदास बनारस	232
153	ज्ञान प्रदीपिका तथा सामुद्रिक शास्त्रम्	रामव्यास पान्डेय	सं.	जैन सिद्धांत भवन	160
	नूतन संकलन				
१	आ. चंद्रसागरसूरिजी ज्ञानभंडार – उज्जैन	हस्तप्रत सूचीपत्र	हिन्दी	श्री आशापुरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार	
२	श्री गुजराती श्वे.मू. जैन संघ-हस्तप्रत भंडार – कलकत्ता	हस्तप्रत सूचीपत्र	हिन्दी	श्री आशापुरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार	

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com

शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन

हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६९ (ई. 2013) सेट नं.-५

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / संपादक	विषय	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
154	उणादि सूत्रो ओफ हेमचंद्राचार्य	पू. हेमचंद्राचार्य	व्याकरण	संस्कृत	जोहन क्रिष्टे	304
155	उणादि गण विवृत्ति	पू. हेमचंद्राचार्य	व्याकरण	संस्कृत	पू. मनोहरविजयजी	122
156	प्राकृत प्रकाश-सटीक	भामाह	व्याकरण	प्राकृत	जय कृष्णदास गुप्ता	208
157	द्रव्य परिक्षा और धातु उत्पत्ति	ठक्कर फेरू	धातु	संस्कृत /हिन्दी	भंवरलाल नाहटा	70
158	आरम्भसिध्धि – सटीक	पू. उदयप्रभदेवसूरिजी	ज्योतीष	संस्कृत	पू. जितेन्द्रविजयजी	310
159	खंडहरो का वैभव	पू. कान्तीसागरजी	शील्प	हिन्दी	भारतीय ज्ञानपीठ	462
160	बालभारत	पू. अमरचंद्रसूरिजी	काव्य	संस्कृत	पं. शीवदत्त	512
161	गिरनार माहात्म्य	दौलतचंद परषोत्तमदास	तीर्थ	संस्कृत /गुजराती	जैन पत्र	264
162	गिरनार गल्प	पू. ललितविजयजी	तीर्थ	संस्कृत/गुजराती	हंसकविजय फ्री लायब्रेरी	144
163	प्रश्नोत्तर सार्ध शतक	पू. क्षमाकल्याणविजयजी	प्रकरण	हिन्दी	साध्वीजी विचक्षणाश्रीजी	256
164	भारतिय संपादन शास्त्र	मूलराज जैन	साहित्य	हिन्दी	जैन विद्याभवन, लाहोर	75
165	विभक्त्यर्थ निर्णय	गिरिधर झा	न्याय	संस्कृत	चौखम्बा प्रकाशन	488
166	व्योम वती-१	शिवाचार्य	न्याय	संस्कृत	संपूर्णानंद संस्कृत युनिवर्सिटी	226
167	व्योम वती-२	शिवाचार्य	न्याय	संस्कृत	संपूर्णानंद संस्कृत विद्यालय	365
168	जैन न्यायखंड खाद्यम्	उपा. यशोविजयजी	न्याय	संस्कृत /हिन्दी	बद्रीनाथ शुक्ल	190
169	हरितकाव्यादि निघंटू	भाव मिश्र	आयुर्वेद	संस्कृत /हिन्दी	शीव शर्मा	480
170	योग चिंतामणि-सटीक	पू. हर्षकीर्तिसूरिजी	आयुर्वेद	संस्कृत /हिन्दी	लक्ष्मी वेंकटेश प्रेस	352
171	वसंतराज शकुनम्	पू. भानुचन्द्र गणि टीका	ज्योतिष	संस्कृत	खेमराज कृष्णदास	596
172	महाविद्या विडंबना	पू. भुवनसुन्दरसूरि टीका	ज्योतिष	संस्कृत	सेन्ट्रल लायब्रेरी	250
173	ज्योतिर्निबन्ध	शिवराज	ज्योतिष	संस्कृत	आनंद आश्रम	391
174	मेघमाला विचार	पू. विजयप्रभसूरिजी	ज्योतिष	संस्कृत/गुजराती	मेघजी हीरजी	114
175	मुहूर्त चिंतामणि-सटीक	रामकृत प्रमिताक्षय टीका	ज्योतिष	संस्कृत	अनूप मिश्र	238
176	मानसोल्लास सटीक-१	भुलाकमल्ल सोमेश्वर	ज्योतिष	संस्कृत	ओरिएन्ट इन्स्टीट्यूट	166
177	मानसोल्लास सटीक-२	भुलाकमल्ल सोमेश्वर	ज्योतिष	संस्कृत	ओरिएन्ट इन्स्टीट्यूट	368
178	ज्योतिष सार प्राकृत	भगवानदास जैन	ज्योतिष	प्राकृत/हिन्दी	भगवानदास जैन	88
179	मुहूर्त संग्रह	अंबालाल शर्मा	ज्योतिष	गुजराती	शास्त्री जगन्नाथ परशुराम द्विवेदी	356
180	हिन्दु एस्ट्रोलोजी	पिताम्बरदास त्रीभोवनदास	ज्योतिष	गुजराती	पिताम्बरदास टी. महेता	168

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com
शाह विमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-380005.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०७१ (ई. 2015) सेट नं.-६

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची।
यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / संपादक	विषय	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
181	काव्यप्रकाश भाग-१	पूज्य मम्मटाचार्य कृत		संस्कृत	पूज्य जिनविजयजी	364
182	काव्यप्रकाश भाग-२	पूज्य मम्मटाचार्य कृत		संस्कृत	पूज्य जिनविजयजी	222
183	काव्यप्रकाश उल्लास-२ अने ३	उपा. यशोविजयजी		संस्कृत	यशोभारति जैन प्रकाशन समिति	330
184	नृत्यरत्न कोश भाग-१	श्री कुम्भकर्ण नृपति		संस्कृत	श्री रसीकलाल छोटालाल	156
185	नृत्यरत्न कोश भाग-२	श्री कुम्भकर्ण नृपति		संस्कृत	श्री रसीकलाल छोटालाल	248
186	नृत्याध्याय	श्री अशोकमलजी		संस्कृत /हिन्दी	श्री वाचस्पति गैरोभा	504
187	संगीरत्नाकर भाग-१ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	448
188	संगीरत्नाकर भाग-२ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	444
189	संगीरत्नाकर भाग-३ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	616
190	संगीरत्नाकर भाग-४ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	632
191	संगीत मकरन्द	नारद		संस्कृत	श्री मंगेश रामकृष्ण तेलंग	84
192	संगीत नृत्य अने नाट्य संबंधी जैन ग्रंथो	श्री हीरालाल कापडीया		गुजराती	मुक्ति-कमल-जैन मोहन ग्रंथमाला	244
193	न्यायबिंदु सटीक	पूज्य धर्मोतराचार्य		संस्कृत	श्री चंद्रशेखर शास्त्री	220
194	शीघ्रबोध भाग-१ थी ५	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	422
195	शीघ्रबोध भाग-६ थी १०	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	304
196	शीघ्रबोध भाग-११ थी १५	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	446
197	शीघ्रबोध भाग-१६ थी २०	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	414
198	शीघ्रबोध भाग-२१ थी २५	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	409
199	अध्यात्मसार सटीक	पूज्य गंभीरविजयजी		संस्कृत/गुजराती	नरोत्तमदास भानजी	476
200	छन्दोनुशासन	एच. डी. वेलनकर		संस्कृत	सिंघी जैन शास्त्र शिक्षापीठ	444
200	मग्गानुसारिया	श्री डी. एस शाह		संस्कृत/गुजराती	ज्ञातपुत्र भगवान महावीर ट्रस्ट	146

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543. E-mail : ahoshrut.bs@gmail.com
शाह विमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-380005.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०७२ (ई. 201६) सेट नं.-७

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की डिजिटाइझेशन द्वारा डीवीडी बनाई उसकी सूची।

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / टिकाकार	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
202	आचारांग सूत्र भाग-१ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	285
203	आचारांग सूत्र भाग-२ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	280
204	आचारांग सूत्र भाग-३ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	315
205	आचारांग सूत्र भाग-४ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	307
206	आचारांग सूत्र भाग-५ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	361
207	सुयगडांग सूत्र भाग-१ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	301
208	सुयगडांग सूत्र भाग-२ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	263
209	सुयगडांग सूत्र भाग-३ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	395
210	सुयगडांग सूत्र भाग-४ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	386
211	सुयगडांग सूत्र भाग-५ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	351
212	रायपसेणिय सूत्र	श्री मलयगिरि	गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	260
213	प्राचीन तीर्थमाळा भाग-१	आ.श्री धर्मसूरि	सं./गुजराती	श्री यशोविजयजी ग्रंथमाळा	272
214	धातु पारायणम्	श्री हेमचंद्राचार्य	संस्कृत	आ. श्री मुनिचंद्रसूरि	530
215	सिद्धहेम शब्दानुशासन लघुवृत्ति भाग-१	श्री हेमचंद्राचार्य	सं./गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	648
216	सिद्धहेम शब्दानुशासन लघुवृत्ति भाग-२	श्री हेमचंद्राचार्य	सं./गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	510
217	सिद्धहेम शब्दानुशासन लघुवृत्ति भाग-३	श्री हेमचंद्राचार्य	सं./गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	560
218	तार्किक रक्षा सार संग्रह	आ. श्री वरदराज	संस्कृत	राजकीय संस्कृत पुस्तकालय	427
219	वादार्थ संग्रह भाग-१ (स्फोट तत्त्व निरूपण, स्फोट चन्द्रिका, प्रतिपादिक संज्ञावाद, वाक्यवाद, वाक्यदीपिका)	विविध कर्ता	संस्कृत	महादेव शर्मा	88
220	वादार्थ संग्रह भाग-२ (षट्कारक विवेचन, कारक वादार्थ, समासवादार्थ, वकारवादार्थ)	विविध कर्ता	संस्कृत	महादेव शर्मा	78
221	वादार्थ संग्रह भाग-३ (वादसुधाकर, लघुविभक्त्यर्थ निर्णय, शाब्दबोधप्रकाशिका)	विविध कर्ता	संस्कृत	महादेव शर्मा	112
222	वादार्थ संग्रह भाग-४ (आख्यात शक्तिवाद छः टीका)	रघुनाथ शिरोमणि	संस्कृत	महादेव शर्मा	228

GAEKWAD'S ORIENTAL SERIES

Edited under the supervision of the Curator of State Libraries, Baroda.

No. XVI.

नारदविरचितः

सङ्गीतमकरन्दः ।

SANGÎTA-MAKARANDA

OF

NÂRADA

EDITED WITH INTRODUCTION AND APPENDICES

BY

MANGESH RÂMAKRISHNA TELANG,
Retired Head Shirastedar of the Bombay High Court,
EDITOR OF SANGÎTA RATNÂKARA,
MAHÂVIDYÂ-VIDAMBANA, &C.

PUBLISHED UNDER THE AUTHORITY OF THE GOVERNMENT OF
HIS HIGHNESS THE MAHARAJA GAEKWAD OF BARODA.

CENTRAL LIBRARY,

BARODA.

1920.

Published by Janardan Sakharam Kudalkar, M. A., LL. B., Curator of State Libraries, Baroda, for the Baroda Government, and Printed by Ramchandra Yesu Shedge, at the 'Nirṇaya-Sâgara' Press, 23, Kolbhat Lane, Bombay.

Price Rs. 2

INTRODUCTION

The present book entitled *Sangîta Makaranda* by Nârada is one of the very few Sanskrit works on Music that have been hitherto printed and published.

Materials for a history of ancient Indian Music— If the reader will just have a glance at the list, which is by no means complete, of Sanskrit works specially appended to this edition for the information of the researchers in the Department of Music, he will have an idea of the extent of the literature on the subject. The list does not include the names of a number of works written by many ancient masters of Music such as Venâ, Matanga, Kohala, Tumburu, Yâshtika, Vis'vâvasu, Hanumân alias Ânjaneya, Dantila, Kambala, As'vatara, Rudrata, Kâs'yapa, Umâpati[1], Gopâla Nâyaka &c. from whose works quotations have been made by Chatura Kallinâtha (about A. D. 1400-1500) in his commentary on *Sangîta Ratnâkara.* Unfortunately Kallinâtha mentions only the names of the authors and not the names of their works. Hence the names of the works of these authors could not be included in the list. In the above commentary Chatura Kallinâtha has quoted one whole chapter from a work called *'Sangîta Meru'* by Kohala[2]. In this chapter Kohala mentions the names of the following writers on Music (probably dancing) :—Bhatta Tandu, S'ambhu, Sumantu, Purâri, Kshemarâja and Lohita Bhatta. He also mentions the name of a work entitled *Des'i Nritta Samudra* by Nârada. S'ârngadeva mentions a work called *Brihaddes'î* by Yâshtika[3]. Besides these, names of numerous other authors have been mentioned by S'ârngadeva in his *Sangîta Ratnâkara* without specifying their works. As research work is being carried on by various Scholars and Institutions, it is likely that many of these works may come to light hereafter.

---

1. The Baroda Central Library has secured a copy of Umâpati's work entitled "*Aumâpatya*" from the Ms, in the Madras Govt. Library.

2. Vide *Sangîta Ratnâkara* Vol. II, p. 679.

3. Vide *Sangîta Ratnâkara* Vol. I, p. 154.

If all this vast hidden literature on Music existing in manuscripts at present be published, it will supply sufficient material to scholars to construct an authentic history of the origin and development of Aryan Music in India. Besides these works, the Vedâs, Brâmhaṇas, Âraṇyakas, the various Suttras, Śmritis, Purâṇas, and the Kâvyas and all such ancient literature, if studied critically with a view to collect materials for a history of Music, will surely disclose much interesting and valuable information. As an instance I may quote here the following passage from *Aitareya Ârṇyaka* which incidentally furnishes a description of the Vîṇâ that was in vogue in those times :—

" अथ खल्वियं दैवी वीणा भवति, तदनुकृतिरसौ मानुषी वीणा भवति । यथास्याः शिर एवममुष्याः शिरः, यथास्या उदरमेवममुष्या अम्भणम् । यथास्यै जिह्वा एवममुष्यै वादनम्, यथा अस्यास्तन्त्रयः एवममुष्या अङ्गुलयः । यथास्याः स्वरा एवममुष्याः स्वराः, यथास्याः स्पर्शा एवममुष्याः स्पर्शाः, यथा ह्येवेयं शब्दवती तर्द्मवती एवमसौ शब्दवती तर्द्मवती, यथा ह्येवेयं लोमशेन चर्मणाऽपिहिता भवति एवमसौ लोमशेन चर्मणाऽपिहिता । लोमशेन ह स्म वै चर्मणा पुरा वीणा अपिदधति । स यो हैतां दैवीं वीणां वेद श्रुतवदनो भवति, भूमिप्राऽस्य कीर्तिर्भवति, यत्र क्वचार्या वाचो भाषन्ते विदुरेनं तत्र " इति

ऐतरेयारण्यक आ० ३ अ० २ खं० ५
(आनन्दाश्रमपुस्तक पृ० २२२)

Now this passage furnishes a good deal of information about the Vîṇâ then in vogue. The words Ambhaṇa, Vâdana, Tantrayah, Svarâh, Spars'âh, S'abda and Tardma as applied to Vîṇâ have a technical sense and prove that the Modern Vîṇâ (Bîna) has much in common with the ancient Vîṇâ. Besides, the passage specially records the fact that in earlier times prior to the composition of the work *(Aitareya Brâmhaṇa)* a part of the Vîṇâ was coverved with leather and that the practice had disappeared at the time of the said work.

Origin of Âryan Music—The elements of the art of Music seem to have originated with the Vedic songs called " Sâmas " which were sung at the time of performing particular ceremonies during a sacrifice. The rules about the singing of these " Sâmas " are recorded in some ancient Sanskrit treatises. We have no means of ascertaining the process by which the " Sâma " Music

developed into the more refined Music practised at the time of Bharata who is known as the founder of the present system of Music, although subsequent professors of the art may have further developed it and established different schools of Music by introducing innovations by their talents.

Bharata's *Nâtya S'âstra*—Bharata's *Nâtya S'âstra* is the most ancient of the books on Music handed down to posterity. Some scholars assign it to the first century after Christ, others to the fourth century. It is well-known that it is difficult to decide precisely the dates of ancient authors. Although as already hinted above many writers on Music came after Bharata, we have no means of giving any historical account of their lives and works.

S'ârngadeva's *Sangîta Ratnâkara*—the next author, whose work is available in print, is S'ârngadeva, the author of *Sangîta Ratnâkara*, who lived in the reign of King S'inghaṇa of Devagiri Modern Doulatâbâd (A. D. 1210–1247). Among the authors of books on Music, besides the names of deities such as Sadâs'îva &c., S'ârngadeva mentions the following names :—

Bharata, Kas'ypa, Matanga, Yâs'tika, S'ârdûla, Kohala, Vis'akhila, Dantila, Kambala, As'vatara, Vâyu, Vis'vâvasu, Arjuna, Nârada, Tumburu, Ânjaneya, Matrigupta, Swâti, Guṇa, Bindurâja, Kshetrarâja, Râhala, Rudrata, Nânya-bhûpâla, Bhojarâja and Paramardî Somes'a Mahipati. Among the commentators on Bharata's *Nâtya S'âstra* he mentions the names of Lollata, Udbhata, S'ankuka, Abhinavagupta and Kîrtidhara.

I do not take any account of several other books such as *Sangîta Pârijâta*, *Râgavibodha*, *Sangîta Darpaṇa*, *Rhidaya-Koutuka*, *Rhidaya-prakâs'a* &c., because all of them are of a later date.

Nârada, the author of the present work *Sangîta Makaranda*—The present work viz., *Sangîta Makaranda* is said to be the work of Nârada on the authority of the manuscript. It is difficult to say anything with certainty about Nârada's life and time. I shall place before the reader whatever can be gathered from internal evidence available in the book itself.

But before doing so I must mention that three works on music are ascribed to Nârada viz., 1 नारदी शिक्षा, 2 रागनिरूपण and 3 नारदसंहिता. Of these the first is available in print. On comparing it with the present work, I am of opinion that the authors of both these works are not identical. The *Nâradî S'ikshâ* appears to be an older work. For its language is archaic and it treats more of "Sâma-gâna" (Vedic Music) than later music. As regards the other two works I am unable to give any opinion as the manuscripts of these works are not available. Another work of this name *Sangîta Makaranda* by Veda is mentioned in the list of works on music appended to this book. But as the name of the author is Veda and not Nârada, it is likely that it might be different from the present work.

The two systems of Music now in vogue in India— Before entering into a critical examination of the present work, it is necessary here to state that at present there are two systems of Music in vogue in India. The one is called the Hindustani or Northern India system which prevails in Northern India, Bengal, Sindha, Gujarâtha and Mahârâshtra. The other is called the Dakshinâdi or Southern India system which prevails in the Madras Presidency including Tailangaṇa, Karṇâtaka and Malabâr countries. At present we have no definite material to ascertain the time when these two systems grew differently from the original system of Bharata and other ancient musicians who founded the scientific system of Indian music. This bifurcation seems to have taken place long before S'ârngadeva, the author of *Sangîta Ratnâkara* A. D. 1210–1247.

Points of difference between the Northern and Southern India systems of Music—The points of difference in the two systems are many, such as the names of the Râgas and their scales, the *Gamakas* or blending of notes, the construction of the species of songs &c., but the chief difference seems to be that the Northern India Musicians divided the Râgas primarily into six principal Râgas and each principal Râga had five Bhâryâs (wives). *Sangîta Darpaṇa, Sangita Ratnâvalî*, &c., support this system. But the Southern India system does not divide the Râgas on the

above principle. In that system the Râgas are divided according to the different scales on which they are based. *Sangîta Ratnâkara, Sangîta Pârijâta, Râgavibodha* &c., follow this system.

Division of Râgas followed in the present work—The present book (*Sangîta Makaranda*) mentions two different divisions of the Râgas into six principal Râgas and their wives[1]. This division of the Râgas suggests that the book belongs to the Northern India system. But it must be observed that the current Râgas obtaining in the practice of modern Music of Northern and Southern India differ widely from the definitions given in all the ancient Sanskrit Books such as *Sangîta Ratnâkara, Sangîta Pârijâta, Râgavibodha, Sangîta Darpaṇa* &c.

A few observations on the present work—The text of *Sangîta Makaranda* is inaccurate in many places as it is based on only one manuscript supplied to me by the Baroda authorities. The manuscript is full of the mistakes of the copyist. I have corrected many of these mistakes as far as possible with the help of *Sangîta Ratnâkara,* &c. But in many places there are apparently deviations from the rules of syntax. I did not think it proper to correct these in the absence of another copy. But in such cases I have given the suggested readings in brackets or in footnotes or made a query against the words of the text.

Our author seems to have been different from the Nârada Rishi of the Purâṇas as his name is mentioned by our author in the *Mangala* verse 2 on page 1.

Our author divides musical sounds into five kinds viz. 1 नखज sound produced by playing Vîṇâ-strings with nails, 2 वायुज sound produced by means of wind through wind instruments, 3 चर्मज sound produced by means of leather through instruments, such as drums, &c., 4 लोहज sound produced by metal pieces, such as cymbals &c., 5 शारीरज sound produced by the human throat. As far as I know none of the printed ancient works introduce this peculiar division of Musical sounds.

1. Vide verses 68 to 78, pages 19 and 20.

The families, castes, colours Dweepas (birth-places), Rishis, deities, Chhandas (metres), Gottras, constellations, Râs'is (zodiac signs), Grahas (planets) and Rasas (sentiment) of the seven-notes are mentioned in this work[1]. These are not mentioned in Bharata's *Nâtya S'âstra.* But S'ârngadeva has extracted all these in his *Sangîta Ratnâkara,* except the Gottras, constellations, Râs'is and planets[2].

It is strange that the names of the 22 **S'rutis** given in this book are quite different from those usually mentioned in other books on music such as Bharata *Nâtya S'âstra, Sangîta Ratnâkara, Sangîta Pârijâta* and *Sangîta Darpaṇa.* The names of the 22 **S'rutis** as stated in the present book are :[3]

(षड्जे)—१ सिद्धा २ प्रभावती ३ कान्ता ४ सुप्रभा
(ऋषभे)—५ शिखा ६ दीप्तिमती ७ उग्रा
(गान्धारे)—८ ह्लादी ९ निर्विरी
(मध्यमे)—१० दिरा ११ सर्पसहा १२ क्षान्तिः १३ विभूतिः
(पञ्चमे)—१४ मालिनी १५ चपला १६ बाला १७ सर्वरत्ना
(धैवते)—१८ शान्ता १९ विकलिनी २० हृदयोन्मलिनी
(निषादे)—२१ विसारिणी २२ प्रसूना

But the names given in Bharata, Sangîta Ratnâkara &c. are :

(षड्जे)—१ तीव्रा २ कुमुद्वती ३ मन्दा ४ छन्दोवती
(ऋषभे)—५ दयावती ६ रञ्जनी ७ रतिका
(गान्धारे)—८ रौद्री ९ क्रोधा
(मध्यमे)—१० वज्रिका ११ प्रसारिणी १२ प्रीतिः १३ मार्जनी
(पञ्चमे)—१४ क्षितिः १५ रक्ता १६ सन्दीपिनी १७ आलापिनी
(धैवते)—१८ मदन्ती १९ रोहिणी २० रम्या
(निषादे)—२१ उग्रा २२ क्षोभिणी

Thus all the names differ except उग्रा. But this name though common is assigned to the 7th S'ruti by our author while others give it to the 21st S'ruti.

This circumstance clearly shows that our author must have borrowed these names from some older book which is not now available.

1. Vide page 3 verses 24–48.
2. Vide *Sangîta Ratnâkara* Vol. I pages 45 & 46.
3. Vide page 8, verses 78–84.

Nârada only mentions the names of the 18 **Jatis**[1] described by Bharata but does not give their definitions or examples as is done in the *Sangîta Ratnâkara.*

As regards the Alankâras (combinations of notes for developing a Râga) he has mentioned only 19[2], whereas S'ârngadeva has mentioned about 63 in the *Sangîta Ratnâkara.* The *Sangîta Pârijâta* mentions 68 Alankâras and the *Râgavibodha* gives only 34.

Nârada has enumerated in all 93 different Râgas. *Sangîta Râtnâkara* contains 264 Râgas in all. The *Sangîta Pârijâta* describes 122 Râgas while the *Râgavibodha* enumerates about 50 Râgas.

Nârada mentions 3 species of Râgas viz. 1 पुरुषरागाः Masculine Râgas 2 स्त्रीरागाः Feminine Râgas and 3 नपुंसकरागाः Neuter Râgas[3].

Again he divides the Râgas into three groups viz. 1 मुक्ताङ्गकम्पिताः Râgas which have quivering (कम्पितगमक) throughout, 2 अर्धकम्पिताः Râgas which have partial quivering, and 3 कम्पविहीनाः Râgas which are absolutely free from quivering[4]. The *Sangîta Ratnâkara* and other later books do not mention these divisions.

As regards the Vînâ instrument our author says that there are 18 kinds of it. But the number of the names given comes to 19. They are :—१ कच्छपी २ कुब्जिका ३ चित्रा ४ वहन्ती ५ परिवादिनी ६ जया ७ घोषावती ८ ज्येष्ठा ९ नकुली १० महती ११ वैष्णवी १२ ब्राह्मी १३ रौद्री १४ कूर्मी १५ रावणी १६ सारस्वती १७ किन्नरी १८ सैरन्ध्री १९ घोषका. If we take परिवादिनी as a common name for Vînâ instead of a particular kind, then the number 18 given by the author can be reconciled with the names. He states that these various kinds are due to the difference in the arrangement of the strings[5]. But S'ârngadeva mentions the following 11 kinds of Vînâ :—१ एकतन्त्री २ नकुलः ३ त्रितन्त्रिका ४ चित्रा ५ वीणा ६ विपञ्ची ७ मत्तकोकिला ८ आलापिनी ९ किन्नरी १० पिनाकी and ११ निःशङ्कवीणा. Chatura Kallinâtha, the commentator of *Sangîta Ratnâkara,* says that the last mentioned Vînâ was invented by S'ârngadeva whose honorific title was निःशङ्क.[6]

1. Vide page 10, verses 106–110.
2. Vide page 14, verses 14–17.
3. Vide page 18 verses 53-63.
4. Vide page 20 verses 84–85.
5. Vide page 22 verses 6–8.
6. Vide *Sangîta Ratnâkara* Vol. II. p. 480.

The verses 22–40 on pp. 23–25, describing the merits of the different kinds of singers &c., in this work, are found in *Sangîta Ratnâkara* almost word for word[1]. In our text here they are corrupted by the copyists' mistakes. It is difficult to decide whether the author of the *Sangîta Ratnâkara* inserted them in his work from this book or some one extracted them from the *Sangîta Ratnâkara* and interpolated them in the present work. Arguments might be advanced to support either view. I therefore leave the point for the decision of the experts.

At the commencement of the *Nrityâdhyâya*[2] Nârada gives the descriptions of the Nâtya S'âlâ (Dancing Hall), Sabhâ (audience) Sabhâpati (Chief of the audience) &c. and all these are independent of those given in the *Sangîta Ratnâkara.*

Further he has mentioned 101 Tâlas with their definitions[3] but has not divided them into Mârga and Des'i as is done by S'ârngadeva in the 5th chapter of his *Sangîta Ratnâkara* wherein the number of Des'i Tâlas described is 120.

As regards dancing he has given a very brief account of it. He has enumerated and defined only 33 postures of a dancer within a few verses[4]. But the author of *Sangîta Ratnâkara* has devoted one whole chapter to the subject and has done full justice to it.

The style of the book is very simple like that of Bharata's *Nâtya S'astra.* But the *Sangîta Ratnâkara* is written in highly polished Sanskrit. The arrangement of *Sangîta Ratnâkara* is scientific and it seems to have been written after the art of Music had attained a very high stage of development in all its branches.

Date of Sangîta Makaranda—If we take all the above circumstances into consideration, we are obliged to arrive at the conclusion that *Sangîta Makaranaa* is an older work than *Sangîta Ratnâkara.*

---

1. Vide *Sangîta Ratnâkara* Vol. I. p. 243–246.
2. Vide pages 27 to 29.
3. Vide pages 47 verses 93–100.
4. Vide pages 49 to 51.

Further, the names of writers, mentioned in this work are Hari, Bramhâ, Matanga, Kâs'yapa, Kamalâsya, Chandî, Vyâla, S'ârdûla, Nârada, Tumburu, Shanmukha, Bhringi, Devendra, Kubera, Kus'ika, Mâtrigupta, Râvana, Samudra, Sarasvati, Bali, Yaksha and Vikrama[1]. Many of these names are names of deities and Purânik personages and it is beyond our means to determine their time. But the names of Vikrama and Mâtrigupta are historical. As there have been several Vikramas, it is difficult to say what Vikrama is meant. But the mention of the name of Mâtrigupta, who is also mentioned by S'ârngadeva in his Sangîta Ratnâkara as one of the writers on music, enables us to infer that the present work must have been written not earlier than 7th century A. D. Mâtrigupta, who was a poet and writer on poetics, is said to have lived about the first half of the sixth century being a contemporary of S'ilâditya Pratâpas'îla of Mâlva (A. D. 550–600). My esteemed friend, T. M. Tripâthi Esqr. B. A. of Bombay, informs me that from the *Nâtya Pradîpa* of Sundara Mis'ra it appears that Mâtrigupta has written a commentary on Bharata's *Nâtya S'âstra*.

But there is one circumstance which may help us in deciding the priority of this work to *Sangîta Ratnâkara*. For, Nârada mentions the name of only Mâtrigupta among the names of the historical personages as writers on music, and does not mention the names of the later writers such as Rudrata, Nânya Bhûpâla, Paramardi Somes'a, Lollata, Udbhata, S'ankuka, Abhinava Gupta &c. If Nârada had copied the names of authors from *Sangîta Ratnâkara*, he would not have omitted them. It is likely that S'ârngadeva copied the names of older authors from Nârada's book and added these later names known at his time to the list in his book. Nârada does not seem to have borrowed any verses from *Sangîta Ratnâkara*. The treatment and order of the topics observed in *Sangîta Makaranda* is quite different from that in the *Sangîta Ratnâkara*.

This view is supported by another circumstance which seems to be a stronger proof. S'ârngadeva while giving the definition of

---

1. Vide p. 13 verses 18–21.

the Gândhâra Grâma states that it is according to Nârada's opinion :—

यद्वा धत्रिश्रुतिः षड्जे मध्यमे तु चतुःश्रुतिः ।
रिमयोः श्रुतिमेकैकां गान्धारश्चेत्समाश्रितः ।
पश्रुतिं धो निषादस्तु धश्रुतिं सश्रुतिं श्रितः ॥ ४ ॥
गान्धारग्राममाचष्टे तदा तं नारदो मुनिः ।
प्रवर्तते स्वर्गलोके ग्रामोऽसौ न महीतले ॥ ५ ॥

संगीतरत्नाकर पृ० ४६

Now this very definition is to be found in this *Sangîta Makaranda* of Nârada as follows :—

यदा धत्रिश्रुतिः षड्जे मध्यमे तु चतुःश्रुतिः ।
रिमयोः श्रुतिरेकैका गान्धारस्य समाश्रया ॥ ५४ ॥
पञ्चमश्रुतिरेका च निषादश्रुतिसंश्रया ।
गान्धारग्राममाचष्टे तदा तं नारदोऽब्रवीत् ॥ ५५ ॥
प्रवर्तकः स्वर्गलोके ग्रामोऽसौ न महीतले ।

सङ्गीतमकरन्द पृ० ५-६

From these circumstances we must conclude that *Sangîta Makaranda* of Nârada is an older work than the *Sangîta Ratnâkara* and that it was known to S'ârngadeva (A. D. 1210-1247). Until we get further proof to establish the exact date, we must hold that Nârada, the author of *Sangîta Makaranda* lived sometime in the interval between Mâtrigupta A. D. 550 and S'ârngadeva A. D. 1210-1247, that is, he must have lived between the 7th and 11th centuries.

The Manuscript.

Source of the Manuscript—The present edition of the *Sangîta Makaranda* of Nârada is based upon one single manuscript furnished to me by the Central Library of Baroda.

The credit of having discovered this rare manuscript is due to the wife of Mr. R. Ananta Krishna Shâstry, the officer employed by the Baroda Central Library for search of Sanskrit manuscripts. Mr. Shâstry, while on an official tour in H. E. H. the Nizam's Territory in 1919, was examining Mss. in an old Pandit's house at Gadwâl with his wife when the latter noticed this Ms. Through the kindness of the Hon. Sir Stuart Fraser, K. C. S. I.,

C. I. E., the then Resident of Hyderâbâd Mr. Shâstrî obtained a note on H. H. The Raja Saheb of Gadwal through Mr. M. A. N. A. Hydari, B. A., Judicial Secretary, Hyderabad. Thus Mr. Shâstry got the loan of the manuscript through the kind influence of the Râjâ Sâheb to whom are due the sincerest thanks of *all* lovers of Indian music.

Description of the Manuscript—The manuscript is written in Devanâgarî characters on old Ahmedabad paper of a yellowish tinge. It consists of 32 folios, the size of the folio being $10\frac{1}{4} \times 5\frac{1}{2}$ inches and each side of the folios containing 9 lines. The hand-writing is fair and the headings of the subjects in the body of the text are written in red ink the colour of which has not faded, though the manuscript was written in the Shake year 1599 (A. D. 1677) that is 243 years ago. On the last three pages the copyist has painted 9 different designs of a rosette in black, yellow, red and green colours.

The manuscript begins as follows :—

श्रीमहागणपतये नमः । श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः । श्रीनादब्रह्मणे नमः ।

The colophon is as follows :—

इति सङ्गीतमकरन्दः समाप्तः । शुभमस्तु । शके १५९९ शालिवाहे पिङ्गलनामसंवत्सरे आश्विनमासे शुक्लपक्षे विजयादशम्यां विद्यापुरमहानगरे श्रीमन्महागणपतिदासकृष्णाजीदत्तेनेदं सङ्गीतमकरन्दाख्यपुस्तकं लिखितम् । महागणपतिर्जयति ॥

From this colophon it is evident that the manuscript was copied in Shake 1599 (A. D. 1677) by one Krishṇâjî Datta who was a devotee of the deity Mahâgaṇapati and lived in Vidyâpura.

This Vidyâpura is no other than Vijayanagara which was the capital of the late Vijayanagara Empire and which is now in ruins. The present manuscript was discovered at Gadwâl which, though now a feudatory of the Hyderabad State, was in former times a feudatory or a part of the Vijayanagara Empire. It is probable that after the complete ruin of Vidyâpura alias Vijayanagara the manuscript must have come to Gadwâl which is not very far from the ruined capital. For this information I am indebted to my friend Mr. J. S. Kudâlkar of Baroda Central Library.

सङ्गीतमकरन्दग्रन्थस्य विषयानुक्रमणी ।

सङ्गीताध्याये प्रथमः पादः ।

श्लोकाङ्काः	विषयः	पृष्ठं
१–२	मङ्गलाचरणम्	१
३	गीतादिभेदेन सङ्गीतशास्त्रविभागः	१
	नादोत्पत्तिनिरूपणम्	१
४–६	अनाहताहतनादनिरूपणम्	२
७–९	नखवायुजादिभेदेन पुनः नादस्य पञ्चविधत्वम्	२
१०–१२	षड्जादिस्वराणामुत्पत्तिस्थाननिर्देशः	२
१३–१५	षड्जादिस्वराणां मयूरादिशब्दसाम्यनिरूपणम्	२
१६–१७	रूपालप्तिः रागालप्तिरिति पुनराहतनादद्वैविध्यम्	२
१८–२०	गीतसंप्रदायनिरूपणम्...	३
२१–२४	शिशुपशुसर्पादीनां गीतलुब्धत्ववर्णनम्	३
२५	स्थाय्यादिभेदेन स्वरचातुर्विध्यम्...	३
२६–२७	वादिसंवाद्यादिभेदेन स्वरचातुर्विध्यम्	३
२८–२९	स्वरादीनां जातिकुलादिनिरूपणम्...	३
३०–३२	स्वराणां वर्णकथनम्	४
३३–३६	स्वराणां जम्बुद्वीपादिसमुत्थानवर्णनम्	४
३७	स्वराणां देवतानामनिरूपणम्	४
३८	स्वराणां देवताः	४
३९	स्वराणां छन्दांसि	४
४०–४१	स्वराणां गोत्राणि	४
४२–४३	स्वराणां नक्षत्राणि	४
४४	स्वराणां राशयः	५
४५	स्वराणां राश्यधिदेवताः	५
४६	स्वराणां योनिकथनम्	५
४७–४८	स्वराणां रसाः	५
४९–५६	ग्रामनिरूपणम्	५
५७–५९	षड्जग्रामस्वराः	६
६०–६१	मध्यमग्रामस्वराः	६
६२	गान्धारग्रामस्वराः	६
६३–६५	ग्रामाणां प्राधान्यादिनिरूपणम्	७

श्लोकाङ्काः	विषयः	पृष्ठं
६६–७७	मूर्च्छनालक्षणं तद्भेदनिरूपणं च	७
७८–८९	षड्जादिस्वराणां श्रुतिसंख्यातद्ग्रामकथनम्	७
९०–११०	मूर्च्छनाविभागादिविचारः	७
१११–११२	स्वरप्रकृतिविकृतयः	११
११३–११४	तन्त्रीप्रकृतिविकृतयः...	११

सङ्गीताध्याये द्वितीयः पादः ।

१	मङ्गलश्लोकः	११
२–६	गीतस्वरूपवर्णनम्	११
५–१७	वीणादेहतदङ्गादिनिरूपणम्	१२
१८–२१	सङ्गीतशास्त्रप्रणेतृदेवतादिनामानि	१३
२२–२४	गीतमाहात्म्यम्	१३

सङ्गीताध्याये तृतीयः पादः ।

१	स्वरलक्षणम्	१४
२–९	स्वरग्राममूर्छनारागादिनिर्देशः	१४
१०–१२	प्रातःकाले गेयानां सूर्यांशरागाणां नामानि	१४
१३–१४	मध्याह्नगेयरागनामानि	१५
१५–१९	सायंकाले गेयानां चन्द्रांशरागाणां नामानि	१५
२०–२३	उदयानन्तरमेकप्रहरोपरिगेयरागाः	१५
२४–२६	रागवेलातिक्रमफलादिवर्णनम्	१५
२७–३४	अन्यरागनामानि	१६
३५–३९	संपूर्णरागाणां ग्रहस्वराः	१६
४०–४५	षाडवरागाणां ग्रहस्वराः	१७
४६–५२	औडवरागाणां ग्रहस्वराः	१७
५३–५६	पुंलिङ्गरागाः	१८
५७–५९	स्त्रीरागाः	१८
६०–६२	रागाणां रसप्रयोगविवेकः	१९
६५–६७	रागाङ्गनिरूपणम्	१९
६९–७२	षट्पुरुषरागाणां तत्स्त्रीणां च नामानि	१९
७३–७९	मतान्तरेण षट्पुरुषरागाणां तत्स्त्रीणां च नामानि	२०
८०–८३	प्रसङ्गानुरूपरागविचारः	२०
८४	कम्पितादिभेदेन रागविभागः	२०
८५–९२	शास्त्रविरोधेन तथा शास्त्रानुरोधेन रागादिप्रयोगे फलश्रुतिः	२१

सङ्गीताध्याये चतुर्थः पादः ।

१–५	मृदङ्गलक्षणम्	२१
६–८	वीणाभेदाः...	२२

श्लोकाङ्काः	विषयः	पृष्ठं
९–१२	आनद्धवाद्यविशेषाः	२२
१३–२१	नादोत्पत्तिः नादभेदाश्च	२२
२२–४०	वाग्गेयकारादिगायकभेदाः सलक्षणाः	२३
४१–४७	गीतगुणदोषविवेकः	२५
४८–४९	गीतप्रयोज्यानां स्वराणां नामानि...	२५
५०–५१	आलापविभागः	२६
५२–५६	शुद्धसङ्कीर्णादिभेदेन रागविभागः	२६
५७–५९	रागसंख्यानिर्देशः	२६

नृत्याध्याये प्रथमः पादः ।

१–७	नाट्यशालालक्षणम्	२७
८–९	सभालक्षणम्	२७
१०	विद्वल्लक्षणम्	२७
११	कविलक्षणम्	२८
१२	भटलक्षणम्	२८
१३	गायकलक्षणम्	२८
१४	परिहासकलक्षणम्	२८
१५	इतिहासज्ञलक्षणम्	२८
१६	ज्योतिषलक्षणम्	२८
१७	वैद्यलक्षणम्	२९
१८	पुराणिकलक्षणम्	२९
१९–२४	सभापतिलक्षणम्	२९
२५–२६	नटविशेषः	३०
२७	घर्घरिकः	३०
२८–३६	पात्रलक्षणम्	३०
३७–३९	पुष्पाञ्जलिः...	३२
४०–५४	पञ्चतालोत्पत्त्यादिनिरूपणम्	३२

नृत्याध्याये द्वितीयः पादः ।

१–२	तालकर्तृनामानि	३३
३–१६	एकोत्तरशततालनामानि	३४
१७–७४	ताललक्षणानि	३५

नृत्याध्याये तृतीयः पादः ।

१–५	चतुरस्रादितालविचारः...	३९
६–३२	दशविधतालप्रबन्धाः	३९

श्लोकाङ्काः	विषयः	पृष्ठं
३३–४७	अङ्गताललक्षणानि	४२
४८–५०	तालशब्दनिष्पत्तिः	४३
५१	दशतालप्राणनिर्देशः	४३
५२–५५	काललक्षणम्	४३
५६–५९	मार्गलक्षणम्	४३
६०–६७	मात्रालक्षणम्	४४
६८–७१	देशीक्रिया	४४
७२–७३	दक्षिणमार्गमात्रानामानि	४५
७४–७५	अङ्गानि	४५
७६–७७	ग्रहाः	४५
७८–८३	जातिनिरूपणम्	४५
८४–८८	लयकालनिरूपणम्	४६
८९–९५	प्रस्तारनिरूपणम्	४७
९६–१००	द्रुतादितालाङ्गानां पर्यायाश्चिह्नानि च	४७

नृत्याध्याये चतुर्थः पादः ।

१–९	मृदङ्गोत्पत्तितद्वादनप्रकारादिकथनम्	४८
१०–४३	नटीभावनिरूपणम्	४९

श्रीनारदविरचितः

सङ्गीतमकरन्दः ।

सङ्गीताध्याये प्रथमः पादः ।

[1]प्रणम्य शिरसा देवं शङ्करं लोकशङ्करम् ।
सङ्गीतशास्त्रं सङ्क्षिप्य वक्ष्ये लोकमनोहरम् ॥ १ ॥

ब्रह्मा तालधरो हरिश्च पटही वीणाकरा भारती
वंशज्ञौ शशिभास्करौ श्रुतिधराः सिद्धा[2]स्सुराःकिन्नराः ।
नन्दीभृङ्गिरिटादिमर्दलधराः सङ्गीतको नारदः
शम्भोर्नृत्तकरस्य मङ्गलतनोर्नाट्यं सदा पातु नः ॥ २ ॥

गीतं वाद्यं च नृत्यं च त्रयं संगीतमुच्यते ।
नारदेन कृतं शास्त्रं मकरन्दाख्यमुत्तमम् ॥ ३ ॥

आदौ नादोत्पत्तिर्निरूप्यते ।

अनाहतो हतश्चैव स नादो द्विविधो मतः ।
यत्रोभयोस्तयोर्मध्येऽनाहतोऽपि निरूप्यते ॥ ४ ॥

---

१ एतच्छ्लोकात्पूर्वमादर्शपुस्तके निम्नलिखितः श्लोको वर्तते—

"सङ्गीतमकरन्दाख्यपुस्तकं लिख्यते मया ।
कुर्वविघ्नं महादेव लेखनाय नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥"

परं तु स ग्रन्थप्रतिलिपककर्त्रा निबद्धः न तु ग्रन्थकर्त्रा इति तदर्थतः सुविशदम् । अतो मूले न स निवेशितः । २ °प्सराः किन्न° इत्यशुद्धः पाठः आदर्शपुस्तके विद्यते ।

आकाशसंभवो नादो यः सोऽनाहतसंज्ञितः ।
तस्मिन्ननाहते नादे विरामं प्राप्य देवताः ॥ ५ ॥
योगिनोऽपि महात्मानस्तदानाहतसंज्ञके ।
मनो निक्षिप्य संयान्ति मुक्तिं प्रयतमानसाः ॥ ६ ॥
सोऽप्याहतः पञ्चविधो नादस्तु परिकीर्तितः ।
नखवायुजचर्माणि लोहशारीरजास्तथा ॥ ७ ॥
नखं वीणादयः प्रोक्ता वंशाद्या वायुपूरकाः ।
चर्माणि च मृदङ्गाद्या लोहास्तालादयस्तथा ॥ ८ ॥
देहनादेन ते युक्ता नादाः पञ्चविधाः स्मृताः ।
गीतं वाद्यं च नृत्यं च त्रयं सङ्गीतमुच्यते ॥ ९ ॥
आदौ ब्रह्मा विचार्यैव नाट्यं लोके प्रपञ्चितम्(?)[1] ।
अनाहतात्समाकृष्य सप्तनामानि योजितः ॥ १० ॥
तं नादं सप्तधा कृत्वा तथा षड्जादिभिः स्वरैः ।
नाभिहृत्कण्ठतालुषु नासादन्तोष्ठयोः क्रमात् ॥ ११ ॥
षड्जश्चर्षभगान्धारौ मध्यमः पञ्चमस्तथा ।
धैवतश्च निषादश्च स्वराः सप्त प्रकीर्तिताः ॥ १२ ॥
षड्जं मयूरो वदति [2]चातको ऋषभं तथा(?) ।
अजो विरौति गान्धारं क्रौञ्चः क्वणति मध्यमम् ॥ १३ ॥
पुष्पसाधारणे काले पिकः कूजति पञ्चमम् ।
अश्वश्च धैवतं चैव निषादं च गजस्तथा ॥ १४ ॥
एवं स्वरान् समाकृष्य वीणादिषु निधाय च ।
तेन चाहतनादेन सङ्गीतमकरोत्सदा ॥ १५ ॥
सरस्वत्याश्च वीणायां षड्जादिस्वरसंयुतम् ।
पाठयामास सर्वेषां हृद्यं श्रुतिमनोहरम् ॥ १६ ॥
रूपालप्ती रागालप्तिरिति स द्विविधः स्मृतः ।
[3]रागास्तन्ननतानाद्यरूपतः शब्द उच्यते ॥ १७ ॥

१ अस्य श्लोकस्य पाठोऽशुद्धः वर्तते । पुस्तकान्तरालाभात् आदर्शपुस्तके यथा दृष्टः तथैवात्र निवेशितः । २ 'चातको रिषभं' इति पाठे सन्धिदोषो न स्यात् । ३ 'रागस्तन्ननतानाद्यो रूपकः शब्द उच्यते' इति शुद्धः पाठः स्यात् ।

सामवेदादिदं गीतं संजग्राह पितामहः ।[1]
तद्गीतं नारदायैव तेन लोकेषु वर्णितम् ॥ १८ ॥
गीतेन प्रीयते देवः सर्वज्ञः पार्वतीपतिः ।
गोपीपतिरनन्तोऽपि वंशध्वनिवशं गतः ॥ १९ ॥
सामवेदे ततो[2] ब्रह्मा वीणासक्ता सरस्वती ।
अन्ये च बहवः पूर्वे यक्षदानवमानवाः ॥ २० ॥
अज्ञातहृदयस्त्वातुर्बालः पर्यङ्कधारकः ।
रुदन् गीतामृतं पीत्वा हर्षोत्कर्षं प्रपद्यते ॥ २१ ॥
वनेचरस्तृणाहारः श्रुत्वा मृगशिशुः पशुः ।
लुब्धो लुब्धकसङ्गीते गीते यच्छति जीवितम् ॥ २२ ॥
कृष्णसर्पोऽपि तं नादं श्रुत्वा हर्षं प्रपद्यते ।
तस्य गीतस्य माहात्म्यं कः प्रशंसितुमर्हति ॥ २३ ॥
सर्वाश्रमाणां जातीनां नृपाणां प्रीतिवर्धनम् ।
धर्मार्थकाममोक्षाणामिदमेव हि साधनम् ॥ २४ ॥
स्थायी स्वरेषु सञ्चारी तथारोहावरोहकौ ।
स्वराश्चतुर्विधा ज्ञेया रागोत्पादनगोचराः ॥ २५ ॥
स्वरा वादी च संवादी विवादी च चतुर्विधाः ।
अनुवादी च सर्वत्र प्रयोगे बहुशः स्मृतः[3] ॥ २६ ॥
वादी स्वरस्तु राजा स्यान्मन्त्री संवादिरुच्यते[4] ।
स्वरो विवादी वैरी स्यादनुवादी च भृत्यवत् ॥ २७ ॥
देववंश्यास्तु सगमाः पञ्चमः पितृवंशजः ।
रिधौ ऋषिकुले जातौ निषादोऽसुरवंशजः ॥ २८ ॥
ब्रह्मजाती समौ ज्ञेयौ रिधौ क्षत्रियजातिकौ ।
निगौ वैश्यावितित प्रोक्तौ पञ्चमः शूद्रजातिकः ॥ २९ ॥

---

१ 'सञ्जग्राह' इति पाठः समीचीनः । २ 'रतो' इति समीचीनः पाठः स्यात् । ३ 'स्मृताः' इति बहुवचनान्तः पाठः समीचीनः । ४ 'संवादी' इति शुद्धं पदं, छन्दोभङ्गभिया 'संवादिः' इति रूपं कृतमिति भाति ।

पद्माभः पिञ्जरः स्वर्णवर्णः कुन्दप्रभः सितः ।
पीतः कर्बुर इत्येते तेषां वर्णा निरूपिताः ॥ ३० ॥
षड्जः कमलवर्णः स्यादृषभः पिञ्जरस्तथा ।
गान्धारः स्वर्णवर्णः स्यान्मध्यमः कुन्दवर्णकः ॥ ३१ ॥
पञ्चमः सितवर्णः स्याद्धैवतः पीतवर्णकः ।
नैषादः कर्बुरो वर्णः सप्तवर्णा निरूपिताः ॥ ३२ ॥
जम्बुशाककुशक्रौञ्चशाल्मलीश्वेतनामसु ।
द्वीपेषु पुष्करे चैव जाताः षड्जादयः स्वराः ॥ ३३ ॥
जम्बुद्वीपे च षड्जः स्याच्छाकले ऋषभोद्भवः ।
कुशद्वीपे च गान्धारः क्रौञ्चद्वीपे च मध्यमः ॥ ३४ ॥
शाल्मलीद्वीपनामाख्ये पञ्चमः स्वर उद्भवः (१) ।
श्वेतद्वीपे तथा जन्म धैवतं नामसंज्ञिकम् (१) ॥ ३५ ॥
पुष्करे चैव जातोऽयं निषादः परिकीर्तितः ।
सप्तस्वरान्समुद्धृत्य वीणादिषु निधाय च ॥ ३६ ॥
दक्षोऽत्रिः कपिलश्चैव वसिष्ठो भार्गवस्तथा ।
नारदस्तुम्बुरुश्चैव षड्जादीनां ऋषीश्वराः ॥ ३७ ॥
वह्निर्ब्रह्मा शारदा च शर्वश्रीनाथभास्कराः ।
गणेश्वरादयो देवाः षड्जादीनां तु देवताः ॥ ३८ ॥
क्रमादनुष्टुब्गायत्री त्रिष्टुप् च बृहती तथा ।
पङ्क्त्युष्णिगौ च जगती छन्दांसि परिकीर्तिताः (१) ॥ ३९ ॥
षड्जस्य जमदग्निश्च आत्रेयो ऋषभस्य च (१) ।
गान्धारस्य गौतमस्तु वसिष्ठो मध्यमस्य च ॥ ४० ॥
श्रीवत्सः पञ्चमस्यैव धैवतस्य पराशरः ।
शाण्डिल्यो निषादस्य गोत्राणि कथितानि च ॥ ४१ ॥
षड्जः शतभिषग्जश्च चित्रा च ऋषभस्य च (१) ।
गान्धारस्य धनिष्ठा भं मध्यमस्य मघा स्मृता ॥ ४२ ॥

---

१ 'पञ्चमस्य समुद्भवः' इति पाठः समीचीनः स्यात् । २ क्लिष्टान्वयोऽयं पाठः । ३ असम्बद्धमिव भातीदमत्र श्लोकार्धम् ।

पञ्चमस्योत्तरा भं स्यात्पूर्वाषाढा तु धैवतम् ।
अनुराधा निषादस्य षड्जादीनां तु तारकाः ॥ ४३ ॥
कुम्भस्तुला झषश्चैव सिंहः कन्या धनुस्तथा ।
वृश्चिकश्च तथा राशयः क्रमाज्ज्ञेया बुधैः सदा ॥ ४४ ॥
शनिर्भृगुः शशी चैव सूर्यश्चन्द्रसुतस्तथा ।
गुरुर्भूमिसुतश्चैव [1]चैते राश्यधिदैवताः ॥ ४५ ॥
स्वराः सरिगमाश्चैव चत्वारो राक्षसाः स्मृताः ।
पधौ मानुषसंज्ञौ च निषादं दैवतं विदुः ॥ ४६ ॥
षड्जस्याद्भुतवीरौ च ऋषभस्य च रौद्रकः ।
गान्धारस्य च [2]शान्तं च हास्याख्यं मध्यमस्य च ॥ ४७ ॥
पञ्चमस्य च शृङ्गारो बीभत्सो धैवतस्य च ।
करुणा च निषादस्य सप्तस्थानरसा नव ॥ ४८ ॥
ग्रामः स्वरसमूहः स्यान्मूर्च्छना तु स्वराश्रया ।
षड्जमध्यमगान्धारग्रामत्रयमुदाहृतम् ॥ ४९ ॥
षड्जश्च मध्यमश्चैव चैतौ भूमौ प्रकल्पितौ ।
स्वर्गलोकेऽपि गान्धारः प्रसिद्धो न महीतले ॥ ५० ॥
[3]षड्ग्रामः पञ्चमश्च धैवतश्च श्रुतिक्रमात् ।
मध्यमः पञ्चमः शुद्धषड्जसंवादिरुच्यते ॥ ५१ ॥
अयं तु षड्जग्रामः ।
सोपान्ते पञ्चमस्तिस्रो धैवतस्य चतुःश्रुतिः ।
पञ्चमो धैवतश्चैवर्षभः संवादिरुच्यते ॥ ५२ ॥
अयं तु मध्यमग्रामः ।
अप्रसिद्धोऽपि भूलोके क्रमाल्लक्ष्येऽपि नारदः ।
तत्सु(त्स्व?)रूपं देवलोके ज्ञातव्यं शास्त्रलक्षणैः ॥ ५३ ॥
यद्वाधस्त्रिश्रुतिः षड्जे मध्यमे तु चतुःश्रुतिः ।
रिमयोः श्रुतिरेकैका गान्धारस्य समाश्रया ॥ ५४ ॥

---

१ 'चैता राश्यधिदेवताः' इति समीचीनः पाठः । २ 'शान्तश्च हास्याख्यो मध्यमस्य च' इति पाठः साधुः । ३ अस्फुटार्थोऽयं श्लोकः ।

पञ्चमश्रुतिरेका च निषादश्रुतिसंश्रया ।
गान्धारग्राममाचष्टे तदा तं नारदोऽब्रवीत् ॥ ५५ ॥
इदं लक्षणं ब्रह्मणोक्तम् ।
प्रवर्तकः स्वर्गलोके ग्रामोऽसौ न महीतले ।
गान्धारः श्रूयते नित्यं जरामरणवर्जितः ॥ ५६ ॥

अथ षड्जग्रामस्वराः ।

स रि ग म प ध नि ।

षड्जे तूत्तरमन्द्रा[1] रञ्जनी चोत्तरायता ।
शुद्धषड्जा मत्सरीकृदश्वक्रान्ताभिरुद्गता ॥ ५७ ॥
ताः शुद्धमध्यमार्गेण सप्त पारं च हृष्यकाः (?) ।
मध्यस्थानस्थषड्जेन मूर्च्छनारभ्यते क्रमात् ॥ ५८ ॥
अधःस्थानैर्निषाद्याद्यैः षड्जः स्यान्मूर्च्छना भवेत् ।
षड्जग्रामस्वराः सप्त कथ्यन्ते मूर्च्छनादिभिः ॥ ५९ ॥

मध्यमग्रामस्वराः ।

म ग रि स नि ध प ।

[2]सौवीरी हरिणाश्वा च स्यात्कलोपनता यता (?) ।
शुद्धमध्या तथा चैव [3]मादली पौरवी तथा ॥ ६० ॥
क्रमात्सप्तस्वरा ह्येते मध्यमग्रामसंश्रिताः ।
[4]हृष्यकान्तेति विज्ञेया मध्यमग्रामसुस्वराः ॥ ६१ ॥

अथ गान्धारग्रामसुस्वराः ।

[5]संरा विशाला सुमुखी चित्ता चित्रावती शुभा ।
आलापा चेति गान्धारग्रामे स्युः सप्त मूर्च्छनाः ॥ ६२ ॥

---

१ 'रजनी चोत्तरायता' इति पाठः मुद्रितभरतनाट्यशास्त्रे अ. २८ श्लो. ३० पृ. ३०५ । २ 'सौवीरी हरिणाश्वा च स्यात्कलोपनता तथा' इति पाठः मुद्रितभरतनाट्यशास्त्रे अ. २८ श्लो. ३२ पृ. ३०५ । ३ 'मार्गी स्यात्पौरवी तथा' इति पाठः मुद्रितभरतनाट्यशास्त्रे अ. २८ श्लो. ३२ पृ. ३०५। ४ °हृष्यका चेति विज्ञेया° इति भरतनाट्यशास्त्रस्थः पाठः । ५ भरतनाट्यशास्त्रे गान्धारग्रामो न वर्णितः । संगीतरत्नाकरग्रन्थे 'संरा' इत्यस्य स्थाने 'नन्दा' इति पाठो वर्तते । सं. र. पृ. ५० ।

ग म प ध नि स रि ।

षड्जः प्राधान्यमाद्यत्वादमात्याद्गितस्तथा (?) ।
ग्रामः स्यादथ लोपत्वान्मध्यमस्तु पुरःसरः ॥ ६३ ॥
क्रमाद्ग्रामत्रये देवा ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ।
हेमन्तग्रीष्मवर्षासु ज्ञातव्यास्तु यथाक्रमम् ॥ ६४ ॥
पूर्वाह्णकाले मध्याह्ने अपराह्ने नयाद्भिः ।
षड्जादिमध्यगान्धाराः श्रूयेतैश्वर्यसन्ततिः२ ॥ ६५ ॥
क्रमात्स्वराणां सप्तानामारोहश्चावरोहणम् ।
मूर्छनेत्युच्यते ग्रामद्वये ताः सप्त सप्त च ॥ ६६ ॥
३षड्जग्रामे तु करमम् मन्द्रोपिरटनीयता (?) ।
शुद्धषड्जा मत्सरीकृदश्वक्रान्ताभिरुद्गता ॥ ६७ ॥
ताः शुद्धमध्यमार्गेण सप्त पारं च हृष्यकाः ।
मध्यमस्थानषड्जेन मूर्च्छनारभ्यते क्रमात् ॥ ६८ ॥
अधःस्थानैर्निषादाद्यैः षड्जः स्यान्मूर्च्छनाक्रमात् ।
मध्यमध्यममारभ्य संवीरी मूर्च्छना भवेत् ॥ ६९ ॥
षड्जस्थानपद्योधस्थस्वराद्वारभ्यते क्रमात् ।
षड्जस्थानस्थितैराद्यैरथान्याद्याः परे विदुः (?) ॥ ७० ॥
हरिणाश्वादिरागाद्यैर्मध्यमस्थानसंज्ञितैः ।
षड्जादीन्मध्यमाद्रींश्च ततोऽर्द्धैः सः स्वरः क्रमात् ॥ ७१ ॥
चतुर्धा ताः पृथक् शुद्धाः काकलीकलितास्तथा ।
सान्तराः सद्वयोपेताः षट्पञ्चाशदुदीरिताः ॥ ७२ ॥
श्रुतिद्वयं चेत् षड्जस्य निषादः संश्रयेदसौ ।
सा काकली मध्यमस्य गान्धारस्त्वन्तरः स्वरः ॥ ७३ ॥

---

१ संगीतरत्नाकरेऽस्य श्लोकस्य पाठो दृश्यते यथा—

'षड्जः प्रधान आद्यत्वादमात्याधिक्यतस्तथा ।
ग्रामे स्यादविलोपित्वान्मध्यमस्तु पुरःसरः ॥' सं. र. पृ. ४६

२ °श्रु गातव्या° इति संगीतरत्नाकरे पृ. ४६ । ३ 'षड्जे तूत्तरमन्द्रादौ रजनी चोत्तरायता' इति शुद्धः पाठः स्यात् ।

यस्यां यावन्ति यौ मध्ये तस्येमौ ग्रामयोः क्रमात् ।
मूर्च्छनास्तावदित्येवं भरतेन च चर्चिताः ॥ ७४ ॥
प्रथमादिस्वरारम्भादेकैका सप्तधा भवेत् ।
तांस्तानुच्चारयेदन्यान् पूर्वानुच्चारयेत्क्रमात् ॥ ७५ ॥
श्रुतयोऽथ स्वरा ग्रामौ मूर्च्छनास्तानसंयुताः ।
तानानि (?) वृत्तयश्चैव पुष्पसाधारणे तथा ॥ ७६ ॥
जातयश्चैव वर्णाश्च नानालङ्कारभूषिताः ।
एतत्स्वरगतोद्देशः सङ्क्षेपेणार्थनिर्णयः ॥ ७७ ॥

अथ षड्जादिस्वरेषु श्रुतयो वक्ष्यन्ते ।

शिखा प्रभावती कान्ता सुप्रभा च मनोहरा ।
साधयन्ति श्रुतिः (?) षड्जं प्रजापतिमुखोद्भताः ॥ ७८ ॥
शिखा दीप्तिमती चैव उग्रा चाग्निसमुद्भवा ।
श्रुतयः साधयन्त्येनमृषभं नामतः स्वरम् ॥ ७९ ॥
ह्लादी च निर्विरी चैव श्रुती व्याहृतिसम्भवे ।
गान्धारं च साधयत(ः) यथार्थे गुणसंश्रये ॥ ८० ॥
दिरा सर्वसहा क्षान्तिर्विभूतिस्तदनन्तरम् ।
मध्यमं साधयन्त्येताः श्रुतयः पृथिवीभवाः ॥ ८१ ॥
मालिनी चपला बाला सर्वरत्ना प्रभावती ।
श्रुतयः सोमपुत्रस्तु साधयिष्यन्ति पञ्चमम् ॥ ८२ ॥
शान्ता विकलिनी चैव हृदयोन्मलिनी तथा ।
धैवतं साधयन्त्येता यक्षराजविनिर्मिताः ॥ ८३ ॥
विसारिणी प्रसूना च निषादेन समुत्थितम् ।
श्रुतिः साधयते नित्यं यमराजमुखोद्भवा ॥ ८४ ॥
चतुश्चतुश्चतुश्चैव षड्जमध्यमपञ्चमाः ।
द्वे द्वे निषादगान्धारौ त्रिस्त्रि ऋषभधैवतौ ॥ ८५ ॥

---

१ °चैव एग्रा° इति आदर्शपुस्तकेऽशुद्धः पाठो वर्तते ।

जातिभिः श्रुतिभिश्चैव स्वरा ग्रामत्वमागताः ।
तद्वत्तथैव भूयोऽपि काव्यबन्धप्रतिष्ठिताः ॥ ८६ ॥
स्वराः षड्जादयस्तत्र ग्रामौ द्वौ षड्जमध्यमौ ।
केचिद्गान्धारमप्याहुः स तु नेहोपलभ्यते ॥ ८७ ॥
सप्तस्वरात्रयो ग्रामे चतुर्दश च मूर्च्छनाः ।
तासामेकोनपञ्चाशदित्येतत्स्वरमण्डलम् ॥ ८८ ॥
भूर्लोकाज्जायते षड्जो भुवर्लोकात्तु मध्यमः ।
स्वर्गलोकात्तु गान्धारो नारदस्य मतं यथा ॥ ८९ ॥
आद्या ह्युत्तरमन्द्रा स्याद्रजनी चोत्तरायता ।
चतुर्विधशुद्धषड्जौ पञ्चमी मत्सरीकृता ॥ ९० ॥
अजक्रान्ता तु षष्ठी च सप्तमी ⋯⋯रुद्गता ।
प्रतिपद्यादितिथिषु जाता मन्द्रास्तु संयुताः ॥ ९१ ॥
सनिधपमगरिसा ज्ञातव्याः सप्त मूर्च्छनाः ।
षड्जग्रामाश्रिता ह्येता नारदेन विवक्षिताः ॥ ९२ ॥

मध्यसंवीरादिस्वरः ।

संवीरा हरिणाश्वा च स्यात्कलोपनतायता ।
शुद्धमध्या तथा चैव मार्ङ्गली पौरली तथा ॥ ९३ ॥
कृष्णप्रतिपदः सप्त तिथीषु (?) जनिताः स्वराः ।
तास्वरा (?) मध्यमग्रामे स्थापिता नारदेन च ॥ ९४ ॥
नन्दा विशाला सुमुखी चित्ता चित्रावती शुभा ।
आलापा चेति गान्धारग्रामे स्युः सप्त मूर्च्छनाः ॥ ९५ ॥
कृष्णाष्टम्यादितिथयः स्वराः सप्त हितास्तथा ।
गान्धारे स्थापितास्तेन नारदेन यथाक्रमम् ॥ ९६ ॥
सप्त स्वरास्तथा सप्त मूर्च्छना याः प्रकीर्तिताः ।
तानाश्चतुरशीतिस्तु ता एतस्मिन्निरूपिताः ॥ ९७ ॥

---

१ °सप्त स्वरास्त्रयो ग्रामाश्चतुर्दश° इति शुद्धः पाठः स्यात् । २ °चतुर्थी शुद्धषड्जा च पञ्च° इति भरतनाट्यशास्त्रस्थः पाठः । ३ °अश्वक्रान्ता तथा षष्ठी सप्तमी चाभिरुद्गता° इति भ. ना. पाठः ।

अग्निष्टोमादिनामानि तैरुक्ता नारदादिभिः ।
देवनारदयोगेन तत्पुण्योत्पादनाय ते (?) ॥ ९८ ॥
क्रममुल्लन्घ्य तन्त्रीणां तानान्ये मूर्च्छनासु याः (?) ।
अपूर्णाश्चैव पूर्णाश्च कूटतानास्तु ते स्मृताः ॥ ९९ ॥
पूर्णाः पञ्चसहस्राणि त्रयस्त्रिंशच्च सोभयाः ।
कथयन्ति प्रतिग्राममनुपयोगेन धेनुना ॥ १०० ॥
नृणामुरसि मन्द्रस्तु वंशध्वनि तथा ध्वनिः (?) ।
स एव कण्ठे मध्यः स्यात्तारः शिरसि गीयते ॥ १०१ ॥
दक्षिणावृत्ति चित्रा च वृत्तिस्तानास्त्रयं विधिः ।
प्रधानं गीतमुभयं वाद्यं चेति यथाक्रमम् ॥ १०२ ॥
वाद्यं यद्गीतवृत्तिस्तं (?) समगीतं प्रचक्षते ।
वृत्तयोऽथ प्रयोगज्ञैः शुष्कं तदभिधीयते ॥ १०३ ॥
साधारणेति विज्ञेया स्वरो जात्युपलक्ष्यते ।
स्वरमध्ये तयोः पूर्वं तत्काकल्यां पुरःसराः ॥ १०४ ॥
षड्जश्च ऋषभश्चैव धैवते च निषादके (?) ।
षड्जादिश्चैवरी चैव ततो वै षड्जकैशिकी[1] ॥ १०५ ॥
षड्जमध्या तथा चैव षड्ग्रामसमाश्रिताः ।
अथ रागान्प्रवक्ष्यामि मध्यमग्रामसंश्रयान् ॥ १०६ ॥
शुद्धमध्यस्तथा शुद्धशुद्धतारादिशुद्धकाः ।
गान्धारमध्यमा चैव गान्धारादिव्यवस्थिताः ॥ १०७ ॥
पञ्चमी रागगान्धारी[2] तथा गान्धारपञ्चमी ।
पञ्चमोदिच्यवा चैव सन्धयन्ति तथैव च[3] ॥ १०८ ॥

---

१ भरतनाट्यशास्त्रे अस्य श्लोकस्य पाठः शुद्धो लभ्यते यथा—
'षाड्जी चैवार्षभी चैव धैवती सनिषादिनी ।
षड्जोदीच्यवती चैव तथा वै षड्जकैशिकी ॥'
भ. ना. पृ. ३०७ (नि. सा.)

२ "पञ्चमी रक्तगान्धारी" इति भ. ना. पाठः । ३ 'मध्यमोदीच्यवा चैव नन्दयन्ती तथैव च' इति भ. ना. पाठः ।

कूर्मारवा च विज्ञेया तथानी कैशिकी तथा ।
उच्चनीचा तथारूपा विरूपा विमतायतिः ॥ १०९ ॥
जातयोऽष्टादश ख्येयं ब्रह्मणा गदिताः पुरा ।
तद्विद्भिस्त्वा नारदेन गीतरूपाणि वर्णयन् (?) ॥ ११० ॥

स्वरप्रकृतिविकृतयः ।

प्रकृती द्वे विजानीयात्स्वरतन्त्रेषु संस्थिते ।
तत्रापि च तयोर्मध्ये षड्जादि च निषादकम् ॥ १११ ॥
या सा प्रकृतिर्विज्ञेया भरतेन च चर्चिता ।
विकृतिश्च निषादादिषड्जान्तस्वरपूरिता ॥ ११२ ॥

तन्त्रीप्रकृतिविकृतयः ।

द्वितीया प्रकृतिः संज्ञा कथ्यते नारदेन च ।
षड्जाद्योपश्रुतयश्चत्वारो गुणसंज्ञकाः (?) ॥ ११३ ॥
तेषु सर्वेषु वर्तन्ते वाद्यादयः प्रकल्पिताः ।
अनुवादि च वाद्यन्ताविततं कथ्यते बुधैः ॥ ११४ ॥

इति श्रीनारदकृतौ सङ्गीतमकरन्दे सप्तस्वरोत्पत्तिपश्चनादोत्पत्तिप्रकृतिनिरूपणं
नाम प्रथमपादः ।

सङ्गीताध्याये द्वितीयः पादः ।

अथ सङ्गीतदेहनिरूपणम् ।

चैतन्यं सर्वभूतानां विधृतं जगदात्मना ।
नादब्रह्म तदानन्दमद्वितीयमुपास्महे ॥ १ ॥
गीतस्वरूपं वक्ष्याम्यतिविचित्रं मनोहरम् ।
राज्ञां कौतुकसंलापं विदुषां ज्ञानहेतुकम् ॥ २ ॥

---

१ 'कार्मारवी च विज्ञेया तथान्ध्री कैशिकी तथा' इति भ. ना. पाठः ।

तत्स्वरूपं तन्नादं चालापं स्वरगर्भजम् ।
प्रकृतिशबलं ब्रह्म वीणारूपं तदुच्यते ॥ ३ ॥
तच्चैतन्यं समाश्रित्य व्यवहारस्तु भिन्नतः ।
तदेव वीणाशबलं नारदाय ददौ स्वभूः ॥ ४ ॥
वीणादेहं प्रवक्ष्यामि तदङ्गानि यथाक्रमम् ।
शिरांसि त्रीणि देहस्य ग्रामत्रयमुदाहृतम् ॥ ५ ॥
मन्द्रमध्यमताराख्यमुखानि त्रीणि कथ्यते (?) ।
सानुपादाय चत्वारो गीतजिह्वा प्रकीर्तिता ॥ ६ ॥
वादी स्वराणां राजा स्यान्मन्त्री संवादिरुच्यते ।
स्वरो विवादी वैरी स्यादनुवादी च भृत्यवत् ॥ ७ ॥
तेषां मार्गास्तु चत्वारः सुषिरं घनतन्तुवत् ।
देशी शुद्धस्तदङ्गाख्या उपाङ्गा अङ्गमार्गकाः ॥ ८ ॥
सप्तस्वराणि नेत्राणि गीतदेहस्य सप्त वै ।
द्वाविंशच्छ्रुतयो जाता नारदेन विवक्षिताः ॥ ९ ॥
षड्जमध्यमपञ्चैते (?) चत्वारः श्रुतयो मताः ।
निषादगान्धारौ द्वे द्वे त्रिस्त्रि ऋषभधैवतौ ॥ १० ॥
रागालप्तिरूपलप्ती हस्तौ द्वौ कथितौ मतौ ।
दारुद्वयमलाबूश्च तन्त्री चत्वार एव च ॥ ११ ॥
चन्द्रनं ब्रह्मजातिश्च दारुः क्षत्रियजातिकः ।
अलाबूर्वैश्यजातिश्च तन्त्री शूद्रमवाप्नुयात् ॥ १२ ॥
षाडवौडवसम्पूर्णरागाद्यास्त्रय ईरिताः ।
ब्रह्मा षाडवरागः स्याद्रुद्रः श्वेतौडवः स्मृतः ॥ १३ ॥
सम्पूर्णो विष्णुरूपश्च नीलवर्ण इति क्रमात् ।
अनन्ताः सन्ति सन्दर्भा रागाः सन्तामसंज्ञकाः ॥ १४ ॥
स्थायी सञ्चारिणी चैव तथासंहतिसंहती ।
प्रसन्नादिः प्रसन्नान्तः प्रसन्नाद्यन्त एव च ॥ १५ ॥

प्रसन्नमध्यं च तथा [1]क्रमादुञ्चित एव च ।
बिन्दुर्निवृत्तप्रकृतौ ····[2]प्रेखो (प्रेङ्खः?)विह्लौ ॥ १६ ॥
कम्पितं कुपितश्चैव विजृम्भितविवर्द्धनौ ।
गमकैकोनविंशश्च चरणान्यपि कथ्यते ॥ १७ ॥
हरिर्ब्रह्मा हरिश्चैव मतङ्गः कश्यपो मुनिः ।
विश्वकर्मा हरिश्चन्द्रो भरतः कमलास्यकः ॥ १८ ॥
चण्डी व्यालश्च शार्दूलो नारदस्तुम्बुरुस्तथा ।
वायुर्विश्वावसुः शौरिराञ्जनेयोऽङ्गदस्तथा ॥ १९ ॥
षण्मुखो भृङ्गिदेवेन्द्रः कुबेरः कुशिको मुनिः ।
[3]मात्रागुप्तो रावणश्च समुद्रश्च सरस्वती ॥ २० ॥
बलिर्यक्षः किन्नरेशो विक्रमोऽपि यथाक्रमम् ।
एभिः सङ्गीतके प्रोक्ता [4]मात्रा द्वादशलक्षणाः ॥ २१ ॥
यद्गीतस्य तु देहस्य लक्षणं परिकीर्तितम् ।
ब्रह्मवीणास्वरूपं च न पुंसं न स्त्रियं विदुः ॥ २२ ॥
यः शृणोति स पापेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः ।
पुत्रपौत्रधनं धान्यं लभ्यते शत्रुनाशनम् ॥ २३ ॥
राज्याभिवृद्धिसन्तानं मोक्षैकफलदायकम् ।
सर्वश्रेयस्करं पुंसां नारदस्य मतं यदा ॥ २४ ॥

इति श्रीनारदकृतौ सङ्गीतमकरन्दे वीणादेहनिरूपणं नाम
द्वितीयपादः ।

---

१ °क्रमरेचित° इति संगीतरत्नाकरे वर्तते । २ अत्र वर्णद्वयमादर्शपुस्तके त्रुटितम् । 'प्रेङ्खः' इति भरतनाट्यशास्त्रस्थः पाठः । ३ °मातृगुप्तो° इति शुद्धः पाठः स्यात् । ४ 'मात्राः' इति पाठः स्यात् ।

सङ्गीताध्याये तृतीयः पादः ।

अथ रागनामान्युच्यन्ते ।

श्रुत्यनन्तरभावी यः स्निग्धोऽनुरणनात्मकः ।
स्वरो रञ्जयति श्रोतृचित्तं स स्वर उच्यते ॥ १ ॥
स्वरग्रामो मूर्छनाश्च तथा तानानि वृत्तयः ।
पुष्पसाधारणा वर्णा ह्यलङ्काराश्च धावतः(?) ॥ २ ॥
श्रुतयो जातयश्चैव विधिज्ञा स्वरशासनः ।
गातव्यः समयो योऽयं वीणायां समुदाहृतः ॥ ३ ॥
स्वरग्रामे तथा ताना जात्यैः साधारणक्रियाः ।
अलङ्काराश्च वर्णाश्च जातयश्च शरीरतः ॥ ४ ॥
सुखोपविष्टं वरदं ब्रह्माणं ज्ञानसागरम् ।
कृताञ्जलिपुटो भूत्वा नारदः परिपृच्छति ॥ ५ ॥
कति रागाः प्रगातव्याः प्रभाते सप्त सुस्वराः ।
तथैव कति रागाश्च केनात्र प्रतिपादिताः ॥ ६ ॥
कस्मिन् काले प्रगातव्यं वाद्यं चैव शुभाशुभम् ।
नारदस्य वचः श्रुत्वा ब्रह्मा लोकपितामहः ॥ ७ ॥
साधु साधु महातेजा यत्त्वं मां परिपृच्छसि ।
तत्सर्वं संप्रवक्ष्यामि रागवेलाविनिर्णयम् ॥ ८ ॥
यत्सुरैस्तत्र विज्ञातं नरकिन्नरनायकैः ।
देशीरागरहस्यं च साम्प्रतं शृणु यत्नतः ॥ ९ ॥

अथ सूर्यांशाः ।

गान्धारो देवगान्धारो धन्नासी सैन्धवी तथा ।
नारायणी गुर्जरी च बङ्गालपल(ट?)मञ्जरी ॥ १० ॥
ललितान्दोलश्रीका सौराष्ट्रयजयसाक्षिकौ ।
मल्लारः सामवेदी च वसन्तः शुद्धभैरवः ॥ ११ ॥

---

१ 'धातवः' इति समीचीनः पाठः स्यात् । २ 'जात्यसाधारणक्रियाः' इति पाठः शुद्धः स्यात् ।

वेलावली च भूपालः सोमरागस्तथैव च ।
एते रागास्तु गातव्याः प्रातःकाले विशेषतः ॥ १२ ॥
शङ्कराभरणः पूर्वो बलहंसस्तथैव च ।
देशी मनोहरी चैव सावेरी डोम्बुली तथा ॥ १३ ॥
काम्भोजी गोपिकाम्भोजी कैशिकी मधुमाधवी ।
बहुलीद्वयं मुखारी च तथा मङ्गलकौशिका ॥ १४ ॥
एते रागविशेषास्तु मध्याह्ने परिकीर्तिताः ।
शुद्धनाटा च सालङ्गो नाटी शुद्धवराटिका ॥ १५ ॥
गौलो मालवगौडश्च श्रीरागश्चाहुरी तथा ।
तथा रामकृती रञ्जी छाया सर्ववराटिका ॥ १६ ॥
वराटिका द्राविटिका देशी नागवराटिका ।
कर्णाटद्वयगौडीति इत्येते चन्द्रमौलिजाः ॥ १७ ॥
एते रागविशेषास्तु प्रातःकाले तु वर्जिताः ।
सायमेषां प्रगानेन तस्य श्रीरतुला भवेत् ॥ १८ ॥
ईशानं च हरिं स्मृत्वा मध्याह्नादेरनन्तरम् ।
रागतः शृण्वतो वापि सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ १९ ॥
प्रहरैकोद्वयावर्वाक् प्रहरैकोद्वयोपरि ।
देशाक्षी भैरवा शुद्धा नादं यत्प्रहरोद्भवम् ॥ २० ॥
वराटिका तथा शुद्धा द्रावटीरागसंज्ञिका ।
प्रहरोपरि गातव्या मल्हारी माहुरी तथा ॥ २१ ॥
आन्दोली च रामकृती छायानाटा च रङ्गका ।
मध्याह्नात्परतो यामे गौडरागानि यानि च ॥ २२ ॥
त्रियामोपरि गातव्या शुद्धसालङ्गनाटिका ।
एवं कालविधिं ज्ञात्वा गायेद्यः स सुखी भवेत् ॥ २३ ॥
रागावेलाप्रगानेन रागाणां हिंसको भवेत् ।
यः शृणोति स दारिद्री आयुर्नश्यति सर्वदा ॥ २४ ॥

देवताविषये गीतं पुण्यनामप्रवर्द्धनम् ।
आध्यात्मिकैव योगेन सर्वपापप्रणाशनम् ॥ २५ ॥
विवाहसमये दानदेवतास्तुतिसंयुते ।
अबलंरागमाकर्ण्य न दोषो भैरवीं विना ॥ २६ ॥
श्रीरागो मालवश्चैव तथा मालवकौशिका ।
सावेरी मेघरञ्जी च हेन्दोला कौशिकी तथा ॥ २७ ॥
तुण्डी तुरुष्कतुण्डी च बङ्गाली माहुरी तथा ।
देवक्रिया रागहंसी देशाक्षी भैरवी तथा ॥ २८ ॥
सालङ्गभैरवी चान्या कम्भारी च तथा परा ।
कर्णाटाह्वयबङ्गाला शुद्धहिन्दोलिका तथा ॥ २९ ॥
पुन्नाटः शुद्धनाटश्च तथा सारङ्गनाटिका ।
वेलावली छायनाटी रागरङ्गस्तथैव च ॥ ३० ॥
वराटी द्रावटी चैव तथा नागवराटिका ।
कर्णाटमिश्रनाटी च तथा शुद्धवराटिका ॥ ३१ ॥
कौमोदकी मलहरी सारङ्गो बहुलीद्वयम् ।
त्रोटी पहटिका चैव मुखारी मधुमाधवी ॥ ३२ ॥
मल्वारी गुर्जरी चैव सौराष्ट्री ललिता तथा ।
नागध्वनी च काम्भोजी धनाश्री च तथा परा ॥ ३३ ॥
कोलाहरश्छायगौडा रामा डोम्बुलिका तथा ।
वसन्तभैरवी चैव सावेरी सैन्धवी तथा ॥ ३४ ॥

अथ गृहस्वराः ।

सम्पूर्णरागो देशाक्षी मध्यमादिः प्रकीर्तितः ।
वसन्तभैरवी शुद्धभैरवी मादितः क्रमात् ॥ ३५ ॥
सम्पूर्णमालवीरागो गान्धारादिः प्रकीर्तितः ।
नाटरागश्च सम्पूर्णः स षड्जादिरुदाहृतः ॥ ३६ ॥
मुखहारी च सम्पूर्णो धैवतादिर्निगद्यते ।
सम्पूर्णश्चाहरी प्रोक्तो मध्यमादिरुपक्रमः ॥ ३७ ॥

---

१ °ध्यात्मिकेव योगेन° इति शुद्धः पाठः स्यात् । २ °अनेलराग° इति शुद्धः पाठः स्यात् ।

बलहंसश्च सम्पूर्णो गान्धारादिः प्रकीर्तितः ।
वसन्तः शुद्धसंज्ञश्च सषड्जादिरुदाहृतः ॥ ३८ ॥
रामक्रिया शुद्धसंज्ञा सषड्जादिरुदाहृता ।
वराटिका शुद्धसंज्ञा सषड्जादिरुपक्रमा ॥ ३९ ॥
एवं सम्पूर्णरागाणां गृहस्वर उदाहृतः ।

अथ षाडवरागगृहस्वर उच्यते ।

षाडवो देवगान्धारो गादिर्वर्ज्यो निषादकः (?) ॥ ४० ॥
नीलाम्बरी षाडवः स्याद्गादिर्वर्ज्यो निषादकः ।
श्रीरागः षाडवो रागः सषड्जादिर्गवर्जितः ॥ ४१ ॥
शुद्धबहुली मध्यमादिर्निवर्ज्यस्तु षाडवः ।
शुद्धगौलः षाडवः स्यान्निषादादिर्धवर्जितः ॥ ४२ ॥
ललितः षाडवो रागः सादिर्वर्ज्यो ग च स्वरः (?) ।
मालवश्रीः षाडवः स्यात्षड्जादिश्च रिवर्जितः ॥ ४३ ॥
भूपालः षाडवो रागो गादिः षड्जविवर्जितः ।
पडवञ्जी षाडवश्च रिवर्ज्योऽपि निषादकः ॥ ४४ ॥
गुण्डक्री षाडवश्चैव गान्धारादिर्गवर्जितः ।
कुरञ्जी षाडवो रागो निवर्ज्यो मध्यमादितः ॥ ४५ ॥
सङ्कृत्य नास्त्येनैव गृहस्वरमुदीरितम् ।

अथ औडवरागगृहस्वराः ।

धन्यासी औडवः प्रोक्तः सावेरी[1] धविवर्जितः ॥ ४६ ॥
औडवो गुर्जरी प्रोक्तः सादिर्वर्ज्यौ रिधौ तथा ।
रिधौ वर्ज्यौ मध्यमादिरौडवा मधुमाधवी ॥ ४७ ॥
मेघरञ्जी मध्यमादि धनिवर्ज्यौ तथौडवः ।
वेलावल्यौडवः स्यात्तु गादिर्वर्ज्यौ सरीस्वरौ ॥ ४८ ॥

---

१ °धादी रिधविवर्जितः° इति शुद्धः पाठः स्यात् ।

रामकृत्यौडवः स्यात्तु गादिर्वर्ज्यौ रिधौ स्वरौ ।
नारायणी निषादादिरौडवो धपवर्जितः ॥ ४९ ॥
पालिरौडवः षड्जादिर्वर्ज्यौ मध्यमपञ्चमौ ।
एवं प्रधानरागाः स्युर्लक्षणोक्तं यथाक्रमम् ॥ ५० ॥
अनन्ताः सन्ति सन्दर्भा नानादेश्याः प्रकीर्तिताः ।
सङ्कीर्णरूपिणो रागाः सङ्कीर्णा नाम विश्रुताः ॥ ५१ ॥
ब्रह्मो चा (?) षाडवाश्चैव क्षत्रजा औडवास्तथा ।
सम्पूर्णा मुनिजाः प्रोक्ता भरतज्ञैः प्रशंसिताः ॥ ५२ ॥

अथ पुल्लिङ्गरागाः ।

बङ्गालः सोमरागश्च श्रीरागश्च तथैव च ।
भूपाली छायगौडश्च शुद्धहिन्दोलिका तथा ॥ ५३ ॥
आन्दोली दोम्बुली चैव गौडः कर्णाटकाह्वयः ।
फडमञ्जी शुद्धनाटी तथा मालवगौलकः ॥ ५४ ॥
रागरङ्गच्छायनाटी रागः कोलाहलस्तथा ।
सौराष्ट्री च वसन्तश्च शुद्धसारङ्गभैरवी ॥ ५५ ॥
रागध्वनिस्तथा ह्येते पुंरागाः परिकीर्तिताः ।
नारदेन विचित्रेण सन्ति नामानि वक्ष्यते (?) ॥ ५६ ॥

अथ स्त्रीरागाः ।

तुण्डी तुरुष्कतुण्डी च मल्वारी माहुरी तथा ।
पौरालिकी च काम्भारी भल्लाती सैन्धवी तथा ॥ ५७ ॥
सालङ्गाख्या च गान्धारी देवक्री वेशिनी तथा ।
वेलावली च बहुली गुण्डक्री घूर्जेरी तथा ॥ ५८ ॥
वराटी द्रावडी हंसी गौडी नारायणी तथा ।
अहरी मेघरञ्जी च मिश्रनाटा यथाक्रमात् ॥ ५९ ॥

---

१ °ब्रह्मजा षा° इति शुद्धः पाठः स्यात् ।

अथ नपुंसकरागाः ।

कैशिकी ललितश्चैव धन्नाशी च कुरञ्जिका ।
सौराष्ट्री द्रावडी शुद्धा तथा नागवराटिका ॥ ६० ॥
कौमोदकी च रामश्री सावेरी च तथैव च ।
बलहंसः सामवेदी शङ्कराभरणस्तथा ॥ ६१ ॥
नपुंसका इति प्रोक्ता रागलक्षणकोविदैः ।
एतन्मतं नारदस्य ब्रह्मणा कथितं पुरा ॥ ६२ ॥
रौद्रेऽद्भुते तथा वीरे पुंरागैः परिगीयते ।
शृङ्गारहास्यकरुणं (१) स्त्रीरागैश्च प्रगीयते ॥ ६३ ॥
भयानके च बीभत्से शान्ते गायन्नपुंसके ।
अनेन विधिना ज्ञात्वा गेयं सर्वार्थसाधनम् ॥ ६४ ॥
शृणु चान्यं प्रवक्ष्यामि नादं चैव शुभाशुभम् ।
साम्प्रतं मुनिशार्दूल गीतगानविधिं तथा ॥ ६५ ॥
मध्यमादिर्मालवश्री श्रीकापि जयसाक्षिका ।
वराटी घूर्जरी गौडकोलाहलवसन्तकाः ॥ ६६ ॥
धन्नाश्री देशदेशाख्या बङ्गालादित्रयोदश ।
रागाङ्गरागमाख्यातं नारदेन महात्मना ॥ ६७ ॥
भूपालो भैरवश्चैव श्रीरागः फडमञ्जरी ।
वसन्तमालवी नाटबङ्गालाः पुरुषाः स्मृताः ॥ ६८ ॥
वेलावली मलहरी बहुली भूपयोषितः ।
देवक्रिया च पौराली काम्भारी भैरवस्त्रियः ॥ ६९ ॥
श्रीरागपतिकाम्भोजी भल्लाती च कुरञ्जिका ।
देशी मनोहरी तुण्डी पडमञ्जरियोषितः ॥ ७० ॥
सारङ्गनाटनाटाख्या अहरीनाटयोषितः ।
नारायणी च गान्धारी रञ्जी बङ्गालयोषितः ॥ ७१ ॥

---

१ °करुणे स्त्री° इति शुद्धः पाठः स्यात् ।

पराटी द्रावडी हंसी वसन्तस्य च योषितः ।
गुण्डक्रिया घूर्जरी च गौडी मालवयोषितः ॥ ७२ ॥
स्त्रीपुंसरागमाख्यातं द्वात्रिंशद्रागसंमतिः ।
अन्ये षट्कं च पुरुषाः शट्त्रिंशद्गीतपारगैः ॥ ७३ ॥
श्रीरागोऽपि वसन्तश्च भैरवः पञ्चमस्तथा ।
मेघराजस्तु विज्ञेयो नाटनारायणश्च षट् ॥ ७४ ॥
गौडी कोलाहली चैव द्राविल्यान्दोलिकी तथा ।
माधवी देवगान्धारी श्रीरागस्य वराङ्गनाः ॥ ७५ ॥
शुद्धनाटा च सावेरी सैन्धवी मालती तथा ।
त्रोटिकौमोदकी चैव पञ्चमस्य वराङ्गनाः ॥ ७६ ॥
सौराष्ट्री चैव काम्भारी बङ्गाली मधुमाधवी ।
देवक्री चैव भूपाली मेघरागस्य योषितः ॥ ७७ ॥
वल्लभा माधवी चैव विदग्धा चाभिसारिका ।
त्रिवेणी मेघरञ्जी च नाटनारायणस्य च ॥ ७८ ॥
[1].. ।
.... ॥ ७९ ॥

आयुर्धर्मयशोबुद्धिधनधान्यफलं लभेत् ।
रागाभिवृद्धिसन्तानं पूर्णरागाः प्रगीयते (?)॥ ८० ॥
सङ्ग्रामरूपलावण्यविरहं गुणकीर्तनम् ।
षाडवेन प्रगातव्यं लक्षणं गदितं यथा ॥ ८१ ॥
व्याधिर्नाशी शत्रुनाशी भयशोकविनाशने ।
व्याधिदारिद्र्यसन्तापे विषमग्रहमोचने ॥ ८२ ॥
कामडम्बरनाशे च मङ्गलं विषसंहृते ।
औडवेन प्रगातव्यं ग्रामशान्त्यर्थकर्मणि ॥ ८३ ॥
मुक्ताङ्गकम्पिताः केचित्केचिदर्धविकम्पिताः ।
केचित्कम्पविहीनाश्चेति रागास्त्रिधा कृताः ॥ ८४ ॥

---

१ एकोनाशीतितमश्लोकस्थाने आदर्शपुस्तके त्रुटिचिह्नं लिखितं वर्तते । २ °नाशे इति पाठः समीचीनः स्यात् । ३ °मङ्गले इति पाठः अन्वयानुकूलः स्यात् ।

अकम्पाः कम्पसंयुक्ताः सकम्पाः कम्पवर्जिताः ।
यस्तच्छृणोति मूढात्मा तावुभौ ब्रह्मघातकौ ॥ ८५ ॥
विष्णुरूपो भवेत्तालो नादश्चैव शिवात्मकः ।
प्रणवो ब्रह्म चेत्याहुर्गीतशास्त्रविशारदाः ॥ ८६ ॥
तालं धृत्वा प्रमाणेन पश्चाद्गीतं समारभेत् ।
तथा नादं प्रकुर्वीत पश्चाद्गीतं प्रगीयते ॥ ८७ ॥
अनेनैव प्रकारेण गीतमाकर्णयेद्ध्रुवम् ।
तस्य नाभावदोषोऽस्ति महापातकतत्समः (?) ॥ ८८ ॥
श्रुतिहीनं च यद्गानं वीणावेण्वादिसम्भवम् ।
यः शृणोति स आप्नोति पातकं दुःखमेव च ॥ ८९ ॥
अपस्वरं कुनादं च श्रुतिहीनं तथाधिकम् ।
यः शृणोति स मूढात्मा पतते नरके चिरम् ॥ ९० ॥
शोकसन्तापदारिद्र्यमायुः क्षीणं भवेद्ध्रुवम् ।
राज्यनाशो मनोदुःखं भवत्येव न संशयः ॥ ९१ ॥
ज्ञात्वा सर्वमिदं शास्त्रं यः शृणोति सदा नृपः ।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं लभते वाञ्छितं फलम् ॥ ९२ ॥

इति श्रीनारदकृतौ सङ्गीतमकरन्दे तृतीय-
पादः समाप्तः

सङ्गीताध्याये चतुर्थः पादः ।

अथ मृदङ्गलक्षणम् ।

दक्षिणाङ्गे स्थितो रुद्र उमा वामे प्रतिष्ठिता ।
शिवशक्तिमयो नादो मर्दले परिकीर्तितः ॥ १ ॥
शिवनादे भवेद्व्याधिः शक्त्या दारिद्र्यमाप्नुयात् ।
द्विनादयुक्तः श्रेष्ठश्च श्रुतियुक्तश्च मर्दले ॥ २ ॥
स्त्रीध्वनिः पुरुषाकारः स्त्र्याकारश्चैव पुंस्वरः ।
आयुर्लक्ष्मीहरौ नित्यमश्राव्यौ तावुभौ ध्वनी ॥ ३ ॥

सर्वेषां श्रुतिसंयुक्तमव्यक्तमधुरान्वितम् ।
नादमीदृग्विधं श्रेष्ठमायुर्लक्ष्मीकरं जगुः ॥ ४ ॥
लक्षणं तु मृदङ्गस्य कथ्यते नारदेन च ।
चतुर्विंशतिच्छन्दांसि चर्मग्रन्थीनि तानि च ॥ ५ ॥

अथ वीणालक्षणम् ।

कच्छपी कुब्जिका चित्रा वहन्ती परिवादिनी ।
जया घोषावती ज्येष्ठा नकुलीष्टेति[1] कीर्तिता (?) ॥ ६ ॥
महती वैष्णवी ब्राह्मी रौद्री कूर्मी च रावणी ।
सारस्वती किन्नरी च सैरन्ध्री घोषका तथा ॥ ७ ॥
दशवीणाः समाख्यातास्तन्त्रीविन्यासभेदतः ।
षट्त्रिंशदङ्गुली वीणा विस्तारः षड्भिरङ्गुलैः ॥ ८ ॥

अथ वाद्यविशेषः ।

मृदङ्गो दर्दुरश्चैव पणवस्त्वङ्गसंज्ञिकः ।
झर्झरी पटहादीनि शम्भो मुखरिकास्तथा ॥ ९ ॥
शृङ्गं च केहला[2] चेति सुषिरादिप्रकीर्तिताः ।
हरीतक्याकृतिस्त्वन्या एवमाद्यास्ततोर्ध्वगः (?) ॥ १० ॥
आलिङ्गश्चैव गोपुच्छो मध्यदक्षिणवामगः ।
ढक्का डमरुगा मन्द्रा मड्डुझर्झरडिण्डिमाः ॥ ११ ॥
उड्डुत्रिविधगुञ्जा च कटकाकरणादयः ।
ध्वनिश्च विविधा ज्ञेया नारदेन कृता मताः ॥ १२ ॥

अथ स्वरादयः ।

नादोपासनया देवा ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ।
भवन्त्युपासिता नूनं तस्मादेतत्तदात्मकम् ॥ १३ ॥
आत्मा विवक्षमाणोऽयं मनः प्रेरयते मनः ।
देहस्था वह्निमहती स प्रेरयति मारुतः ॥ १४ ॥

---

१ °नकुली चेति° इति अथवा 'जयघोषावती ज्येष्ठा नकुल्यष्टेति कीर्तिताः' इति पाठः शुद्धः स्यात् । २ 'काहला' इति सङ्गीतरत्नाकरादिग्रन्थान्तरे दृश्यते ।

इति ग्रन्थिस्थितः सोऽथ क्रमादूर्ध्वपदे चरेत् ।
नाभिहृत्कण्ठमूर्धन्येष्वभिघारयते ध्वनिम् ॥ १५ ॥
नादोऽतिसूक्ष्मः सूक्ष्मश्च पुष्टोऽपुष्टश्च कृत्रिमः ।
इति पञ्चविधा धत्ते पञ्चस्थानस्थिताः क्रमात् ॥ १६ ॥
अतिसूक्ष्मश्च सूक्ष्मश्च पुष्टोऽपुष्टस्तथैव च ।
तारश्चेति च विज्ञेयाः पञ्चधा देहजाः स्वराः ॥ १७ ॥
नकारः प्राणमानन्दस्तकारमनलं विदुः ।
जातः प्राणाग्निसंयोगात्तेन नादोऽभिधीयते ॥ १८ ॥
व्यवहारे त्वसौ त्रेधा हृदि मन्द्रोऽभिधीयते ।
कण्ठे मध्यो मूर्ध्नि तारो द्विगुणश्चोत्तरोत्तरः ॥ १९ ॥
सूक्ष्मस्वरो हीनसूक्ष्मस्तद्गातुः श्रुतिगोचरः ।
तारः श्रुतिकठोरत्वात्त्याज्य एव न संशयः ॥ २० ॥
अन्यथा विंशतिर्भेदाः श्रवणाः श्रुतयो मताः ।
हृद्युदानादिसंयुक्ता नाद्या द्वाविंशतिर्मताः ॥ २१ ॥

अथ गायकलक्षणम् ।

वाङ्माधुर्योच्यते ज्ञेयं धातुरित्यभिधीयते[1] ।
वाच्यं गेयं च कुरुते यः स वाग्गेयकारकः ॥ २२ ॥
शब्दानुशासनज्ञानमभिधानप्रवीणता ।
छन्दःप्रभेदवेदित्वमलङ्कारेषु कौशलम् ॥ २३ ॥
रसभाषापरिज्ञानं गीतं स्थितिविचिन्वति (?)[2] ।
अशेषभाषाविज्ञानं कलाशास्त्रेषु कौशलम् ॥ २४ ॥
तूर्यत्रितयचातुर्यं हृद्यशारीरशालिता ।
लयतालकलाज्ञानं विवेकोऽनेककाकुषु ॥ २५ ॥
प्रभूतप्रतिभोत्थानं[3] रम्यं सुभगगेयता ।
देशीरागेष्वभिज्ञानं वाक्पटुत्वं सभाजयः ॥ २६ ॥

---

१ 'वाङ्मातुरुच्यते गेयं धातुरित्यभिधीयते' इति शुद्धः पाठः स्यात् । २ 'रसभावपरिज्ञानं देशस्थितिषु चातुरी' इति संगीतरत्नाकरे दृश्यते (पृ. २४४) । ३ 'प्रभूतप्रतिभोद्भेदभाक्त्वं सुभगगेयता' इति संगीतरत्नाकरस्थः पाठः (पृ. २४४) ।

रो[1]षद्वेषपरित्यागी (गः ?) साधुत्वमुचितज्ञता ।
अ[2]नुद्धतोक्तिसंबद्धो नूत्नधातुविनिर्मकः ॥ २७ ॥
परचित्तपरिज्ञानं प्रबन्धेषु प्रगल्भता ।
द्रुतगीतविनिर्माणं पदान्तरविदग्धता ॥ २८ ॥
त्रि[3]स्थानगमकप्रौढो विविधालसिनैपुणः (?) ।
अवधानगु[4]णैरेभिः परो वाग्गेयकारकः ॥ २९ ॥
विद्धानोऽधिकं [5]वैवं मातुमन्दस्तु मध्यमः ।
धा[6]तुमातुपदप्रौढः प्रबन्धेष्वपि मध्यमः ॥ ३० ॥
रम्यमातुविनिर्माता अधमो मन्दधातुकृत् ।
वरो यस्तु कविर्वर्णकविर्मध्यम उच्यते ॥ ३१ ॥
कू[7]टकारोऽन्यकारस्तु माधुकारः प्रकीर्तितः ।
मार्गं देश्यं च यो वेत्ति स गन्धर्वोऽभिधीयते ॥ ३२ ॥
यो वेत्ति केवलं मार्गं स्वरादिः स निगद्यते ।
हृद्यशब्दः सुशारीरो ग्रहमोक्षविचक्षणः ॥ ३३ ॥
रागरागाङ्गभाषाङ्गक्रियाङ्गोपाङ्गकोविदः ।
प्रबन्धगाननिष्णातो विविधालसितत्त्ववित् ॥ ३४ ॥
सर्वस्थानादिगमकेष्वनायासलसद्गतिः ।
आयत्तकण्ठस्तालज्ञः सावधानी जितश्रमः ॥ ३५ ॥
शुद्धस्थानलयाभिज्ञः सर्वकाकुविशेषवित् ।
अपारस्थायिसञ्चारः सर्वदोषविवर्जितः ॥ ३६ ॥
क्रियापरोचितालापः सुस्वरो धारणान्वितः ।
स्फू[8]र्जन्निर्भ्रजनो हारीरहकृद्धपनोद्वरः (?) ॥ ३७ ॥

---

१ 'रागद्वेषपरित्यागः साधुत्वमुचितज्ञता' इति सङ्गीतरत्नाकरे (पृ. २४४)। २ 'अनुच्छिष्टोक्तिनिर्बन्धो नूत्नधातुविनिर्मितिः' इति सङ्गीतरत्नाकरे। ३ 'त्रिस्थानगमकप्रौढिर्विविधालसिनैपुणम्' इति सङ्गीतरत्नाकरे। ४ °गुणैरेभिर्वरो वाग्गेय° इति सङ्गीतरत्नाकरस्थः पाठः। ५ °धिकं धातुं मातुमन्दस्तु मध्यमः° इति सङ्गीतरत्नाकरगतः पाठः। ६ °धातुमातुविदप्रौढः प्रब° इति सङ्गीतरत्नाकरे। ७ 'कुट्टिकारोऽन्यधातौ तु मातुकारः प्रकीर्तितः' इति सङ्गीतरत्नाकरे। ८ 'स्फूर्जन्निर्जवनो हारिरहःकृद्भजनोद्धुरः' इति सङ्गीतरत्नाकरे।

सुसम्प्रदायो गीतज्ञैर्गीयते गायनाग्रणीः ।
इत्युत्तमस्तु विज्ञेयो गीतज्ञः प्रतिपादितः ॥ ३८ ॥
गुणैः कतिपयैर्हीनो निर्दोषो मध्यमोत्तमः (मतः ?) ।
महामाहेश्वरेणोक्तः सदोषो गायकाधमः ॥ ३९ ॥
शिक्षाकारोऽनुकारश्च रसिको रञ्जकस्तथा ।
भावकश्चेति[1] विज्ञेया गायकाः पञ्चधा जगुः (?) ॥ ४० ॥
व्यक्तं पूर्णं प्रसन्नं च सुकुमारमलङ्कृतम् ।
समं सुरक्तं श्लक्ष्णं च निकृष्टं मधुरं तथा ॥ ४१ ॥
दिश्यैते स्युर्गुणानं ते (?) तत्र वक्ता (व्यक्तः) स्फुटस्वरः ।
प्रकृतिः श्रुतयश्चोक्तं छन्दोरागपदैः स्वरैः ॥ ४२ ॥
सुसम्पूर्णं च पूर्णाङ्गं प्रसन्नं प्रकटार्थकम् ।
सुकुमारं कण्ठभवं त्रिस्थानोक्तमलङ्कृतम् ॥ ४३ ॥
स्वरवर्णलयस्थानं स्वय(सम ?)मित्युच्यते बुधैः ।
सुरक्तं वल्लकीवंशकण्ठोत्थान्येकतागुणम् (?) ॥ ४४ ॥
मीचोच्चधृतिमध्यादौ श्लक्ष्णता श्लक्ष्णउ(मु)च्यते ।
उच्चैरुच्चारणादुक्तं निकृष्टं भरतादिभिः ॥ ४५ ॥
मधुरं धुर्यलावण्यं पूर्णं जनमनोहरम् ।
दृष्टं लोके न शास्त्रेण श्रुतिकालविरोधि च ॥ ४६ ॥
घोनैरुक्तं (?)-कलाबाह्यं गतश्रममघोदकम् ।
ग्राम्यं संदिग्धमित्येवं दशधानी तु दुष्टता ॥ ४७ ॥
एवं सङ्गीतशास्त्रज्ञैः कथिता लोकविश्रुताः ।

इति गीतदोषाः ।

षड्ज ऋषभगान्धारौ मध्यमः पञ्चमस्तथा ॥ ४८ ॥
धैवतश्च निषादश्च स्वराः सप्त प्रकीर्तिताः ।
षड्जादिस्वरसंमिश्रं गानं च परिकीर्तितम् ॥ ४९ ॥

---

१ 'भावुकश्चेति गीतज्ञाः पञ्चधा गायनं जगुः' इति सङ्गीतरत्नाकरे ।

आलापा द्विविधा ज्ञेयाः स्वरसंयोजने तथा ।
रागालप्तिरूपलप्ती द्वयं च परिकीर्तितम् ॥ ५० ॥
रागाक्तिस्समनादि रूपको गीतमुच्यते ।
स्वरे रागाः प्रगीयन्ते शुद्धसालङ्गसंज्ञिकम् ॥ ५१ ॥
यथा ह्युपक्रमेणैव रागः शुद्ध उदाहृतः ।
उपक्रम्य यथा रागो मेलनं सममिश्रकम् ॥ ५२ ॥
पुनस्तन्मार्गगमकं रागरङ्गः प्रकीर्तितः ।
सङ्कीर्णरागमिश्राणां रागः सङ्कीर्ण उच्यते ॥ ५३ ॥
षाडवौडवसंपूर्णरागाः स्युस्त्रिविधास्तथा ।
एकस्वरविहीनस्तु षाडवः परिकीर्तितः ॥ ५४ ॥
पञ्चस्वरसमायुक्त औडवः परिकीर्तितः ।
सप्तस्वरसमायुक्तः सम्पूर्ण इति कथ्यते ॥ ५५ ॥
एवं विवक्ष्यामि समस्तरागान्
गायेत धीमानधिकप्रयत्नः ।
चित्रेण वार्कं (?) रभसा स्वरेण
द्रुतेन वा दोषविवर्जितः स्यात् ॥ ५६ ॥
षाडवौडवसम्पूर्णा रागा द्वात्रिंशसंमिताः[1] ।
अनन्ताः सन्ति सन्दर्भा नाना देश्यास्तथैव च ॥ ५७ ॥
मन्द्रमध्यमतारादिस्वरैर्गायेत गायकः ।
पूर्णाः पञ्चशता (?) रागाः षाडवा द्विशतास्तथा ॥ ५८ ॥
औडवाः शतसङ्ख्याश्च तत ऊर्ध्वं यथाक्रमम् ।
एवं विज्ञाय भगवान्नारदो मुनिरब्रवीत् ॥ ५९ ॥

इति श्रीनारदकृतौ सङ्गीतमकरन्दे चतुर्थः पादः ।

सङ्गीताध्यायः समाप्तः ।

---

१ °द्वात्रिंशत्संमिताः° इति स्यात् (?)

अथ नृत्याध्यायो निरूप्यते ।

अनाहतकृपीरूपं योगिध्येयं मनोहरम् ।
तद्रूपं च नमस्कृत्य नृत्याध्यायं करोम्यहम् ॥ १ ॥

आदौ नाट्यशालालक्षणमाह ।

षडशीतिहस्तमात्रचतुरस्रसमन्विता ।
चतुर्विंशतिकस्तम्भनानाचित्रसमन्विता ॥ २ ॥
नानाविकारसम्पन्नप्राकारा चित्रशोभिता ।
चतुरशीतिबन्धाश्च लेखनीया मनोहराः ॥ ३ ॥
रत्नैरनेकैर्विविधैः पट्टकैश्च चामरैः ।
पताकतोरणैर्युक्ता चतुर्द्वारादिसंयुता ॥ ४ ॥
मध्ये तु वेदिका रम्या चतुर्विंशतिहस्तका ।
कार्या सर्वगुणोपेता नानापरिमलान्विता ॥ ५ ॥
अनेन विधिना कार्या नाट्यशाला मनोहरा ।
तल्लक्षणं न हि कृतं राज्ञां दोषमवाप्नुयात् ॥ ६ ॥
तस्यां मनोहरं रम्यं सिंहासनमनर्घ्यकम् ।
तदग्रे फलपुष्पाणि स्थापयित्वा विराजितम् ॥ ७ ॥

अथ सभालक्षणम् ।

विद्वत्कविभटगायकसहास्यहासकज्योतिषवैद्यपौराणिकाः ।
एभिर्नवभिर्युक्ता या सभा राजसभेति तैरुक्ता ॥ ८ ॥
विद्वांसः कवयो भट्टा गायकाः परिहासकाः ।
इतिहासपुराणज्ञाः सभासप्ताङ्गलक्षणम् ॥ ९ ॥

विद्वल्लक्षणम् ।

सभाजयो वादविचारखण्डनाः
समस्तशास्त्रार्थविचारदक्षकाः ।
कृतानुरागा जनरञ्जने रताः
अमी बुधाः साधुसभाविभूषणाः ॥ १० ॥

---

१ °मनर्घकम्° इति स्यात् । २ इदं पद्यमार्याच्छन्दोवद्भासते, तथापि तल्लक्षणाङ्गमहीनमेव दृश्यते ।

अथ कविलक्षणम् ।

शुचिर्दक्षः शान्तः सुजनविनतः सूनृततरः
कलावेदी विद्वानतिमृदुपदः काव्यचतुरः ।
रसज्ञो दैवज्ञः सरसहृदयः सत्कुलभवः
शुभाकारश्छन्दोगुणगणविवेकी स एव कविः ॥ ११ ॥

भटलक्षणम् ।

अनेकभाषासु विशेषबुद्धयो
नृपालवंशावलिकीर्तनक्षमाः ।
प्रबन्धविद्यापठने प्रवीणा
महीशयोग्या मगधा महीतले ॥ १२ ॥

अथ गायकलक्षणम् ।

षाडवौडवसम्पूर्णगायने जनरञ्जकाः ।
काकुवर्जितशारीरा गायका राजवल्लभाः ॥ १३ ॥

अथ परिहासकलक्षणम् ।

क्रियाङ्गभाषाङ्गसमस्तवञ्चना-
लसत्प्रसङ्गात्मिकवक्रयुक्तयः ।
प्रस्तावहास्योचितवाग्विलासा
बुधैः प्रशस्ताः परिहासका (के) गुणाः ॥ १४ ॥

इतिहासज्ञलक्षणम् ।

पुराणैरवशिष्टाद्यैः व्याख्यानकथने क्षमाः(?) ।
इतिहासविदः साक्षाद्गीतवाद्यविचक्षणाः ॥ १५ ॥

अथ ज्योतिषलक्षणम् ।

प्रतिप्रयाणान्बहुजातकादीन्
ज्ञेयः सुसिद्धान्तविचारदक्षकः ।
ग्रहोपरागादिषु शुद्धलक्षणः
स पण्डितो देवगुरोः समानः ॥ १६ ॥

अथ वैद्यलक्षणम् ।

पाण्डुश्वासकफातिसारविषजाः कर्मज्वरा भूतजाः
प्रेत्योद्रेककफोद्भवा हिमभवा वातानशीतिः क्रमात् (?) ।
तिस्रो वैद्यकसंहितासु निपुणः शास्त्रेषु बोधात्मवान्
दृष्टस्पृष्टविचित्ररोगहरणः सद्वैद्यधन्वन्तरिः ॥ १७ ॥

अथ पुराणिकलक्षणम् ।

आलापोक्तिषु चातुर्यं श्रुतिज्ञः सर्वशास्त्रवित् ।
पौराणिकः पुराणेषु कुशलः कथितो बुधैः ॥ १८ ॥

अथ सभापतिलक्षणम् ।

अनेकशृङ्गारविचित्ररूपः
सर्वज्ञचातुर्यरसान्वितोऽसौ ।
सङ्गीतसाहित्यकलानुरक्तो
निर्मत्सरो वाक्सुगुणैरुपेतः ॥ १९ ॥
तद्वामपार्श्वेऽपि पुराणभट्टाः
तद्दक्षिणेऽमात्यपुरोहिताश्च ।
तत्पृष्ठभागेऽपि च कोषरक्षकः
समीपविद्वत्कविबान्धवैर्युतः ॥ २० ॥
ततः सुविप्राबहुलक्षणान्वितः
कालप्रवीणो बहुजातकादिमत् (?) ।
ततो भिषग्दैवविदौ समीपे
संस्थापयेद्दक्षिणकोविदैः क्रमात् ॥ २१ ॥
महीशवामे वरमन्त्रिमण्डलं
संस्थापयेत्सैन्यपतिं क्रमाच्च ।
पार्श्वोभयोर्बन्दिभटप्रवीणा[1]
शृङ्गारगानज्ञवरान्कवींश्च ॥ २२ ॥

---

[1] °प्रवीणान्° इति शुद्धः पाठः स्यात् ।

विलासिनोऽन्तःपुरतो विसारिणः
स्वकङ्कणैः कूजितकिङ्किणीरवैः ।
अतिस्वरूपा बहुवल्गुभाषिणः
स चामराः पार्श्वगता विरञ्जिताः ॥ २३ ॥
डोलचामरकराग्रवर्तिनो
वैरविवेककविवाद्यकारकाः (?) ।
सर्वशास्त्रवनुरक्षकाद्यः
पार्श्ववर्तिजनिरीक्षणोत्कयः (?) ॥ २४ ॥

(अथ) नटविशेषः ।[1]

चतुर्धाभिनयाभिज्ञो नटो भाषाविवेकवित् ।
नर्तनः सूरिभिः प्रोक्तो मार्गनृत्यकृतश्रमः ॥ २५ ॥
अनुभावविभावजानता
रसभावादिकरञ्जकश्रियः ।
नटभावविवेकबन्धनो
रचिताकालविभेददेशिकः ॥ २६ ॥

अथ घर्घरिकः ।

बिभ्रन्मुण्डशिखाविलिप्तविभवो भस्माङ्गशारीरको
बिभ्रद्धर्घरिकाश्च पेशलकलातालप्रवीणस्तथा ।
पश्चाङ्गे कुशलो (लः) सभापति[2] ....
घर्घर्याः पटुदीर्घकाललगमास्तालज्ञकैर्वर्णिताः ॥ २७ ॥

अथ पात्रलक्षणम् ।

समेलनैः सर्वकलासुशोभितै-
रनेकवस्त्राभरणैरलङ्कृतैः ।
उपाङ्गतालाङ्गमृदङ्गचातुरैः
समेत्य पात्रा जवनीतटे स्थिताः ॥ २८ ॥

---

१ अस्मिन् रथोद्धतावृत्तपादे आद्यगुर्वक्षरस्थाने लघुद्वयप्रयोगात् छन्दोभङ्गः स्फुटः । २ आदर्शपुस्तके त्रुटितोऽयमंशः ।

सा चित्रिणी शङ्खिनिहस्तिनी क्रमात्
सा पद्मिनी रूपविलाससंभ्रमाः ।
आपाङ्गलावण्यविदग्धयौवना
बिम्बाधरा शोभितचन्द्रिकाननाः ॥ २९ ॥
पीनोन्नतोत्तुङ्गकुचाभिशोभिताः
सकञ्चुका रत्नविचित्रभूषणाः ।
तद्रम्यरूपाः कुचकुम्भशोभिता
विचित्रहारा मणिमौक्तिकैर्युताः ॥ ३० ॥
सपादहस्ताब्जमुखाब्जरेखाः
सलक्षणा युक्तकपोलरम्याः ।
कुचौ विशालौ मृदुवेणिभेदाः
पुष्पाण्यलङ्कृत्य मनोहराणि ॥ ३१ ॥
लज्जान्विता मृदुवचो (?) मधुस्वगीता
लावण्यहंसगमना मधुलास्ययुक्ताः ।
गन्धर्वशास्त्रनिपुणा रमणाश्च रम्भा-
तिलोत्तमा और्वशिमेनका मताः (?) ॥ ३२ ॥
राज्यर्पिता दृष्टिरमोघयौवना
विद्याकलारागसुगर्वरञ्जकाः ।
पुष्पाञ्जलिं दापयितुं समारभे-
द्रङ्गप्रदेशं प्रति लज्जितागताः ॥ ३३ ॥
अङ्गेनालम्बयेद्गीतं हस्तेनार्थं प्रदर्शयेत् ।
नेत्राभ्यां भावयेद्भावं पादाभ्यां तालनिर्णयः ॥ ३४ ॥
एवं भावमनो धृत्वा पुष्पाञ्जलिपुरःसरम् ।
महीन्द्रस्य समीपाग्रे रङ्गपीठे समर्पयेत् ॥ ३५ ॥
हस्तपात्रेऽर्पितकुचौ कटौ विप्रणिताकृती ।
नेत्रजातिसमेत्यैवं नीराजनकृता नृपम् (?) ॥ ३६ ॥

अथ पुष्पाञ्जलिः ।

ब्रह्मा तालधरो हरिश्च पटही वीणाकरी भारती
वंशाङ्गौ शशिभास्करौ श्रुतिधराः सिद्धाप्सराः किन्नराः ।
नन्दीभृङ्गिरिटादिमर्दलधराः सङ्गीतको नारदः
शम्भोर्नृत्तकरस्य मङ्गलतनोर्नाट्यं सदा पातु नः ॥ ३७ ॥
लक्ष्मीस्ते सदने सदा निवसतां चित्ते च चिन्तामणिः
स्वर्धेनुस्तव गोकुले सुरतरुश्चारामभूमौ तव ।
वाणी ते वदने दया नयनयोर्दानं करे तेऽन्वहं
विष्णुश्चेतसि ते मतिश्च सुकृते कीर्तिश्च लोकत्रये ॥ ३८ ॥
इन्दुं कैरविणीव कोकपटरीवाम्भोजिनीबान्धवं
मेघं चातकमण्डलीव मधुपश्रेणीव पद्माकरम् ।
माकन्दं पिकसुन्दरीव रमणीवात्मेश्वरं प्रोषितं
चेतोवृत्तिरियं मम क्षितिपते त्वां द्रष्टुमुत्कण्ठते ॥ ३९ ॥

इति पूर्वपुष्पाञ्जलिः ।

अथ पञ्चतालोत्पत्तिनिरूपणमाह ।

सदाशिवमुखोद्भूतास्तालाः पञ्चविधाः स्मृताः ।
सद्योजातमुखात्पूर्वमृग्वेदादुद्भवस्तथा ॥ ४० ॥
तस्माच्चञ्चत्पुटो ज्ञेयः कान्तिर्गोक्षीरवर्णकः ।
ब्रह्मजातिसमाख्यातो गोपुच्छ इति संज्ञकः ॥ ४१ ॥
वामदेवे दक्षिणे च मुखे याजुषसम्भवम् ।
तस्माच्चाञ्चुपुटाख्यं (?) हि तालः क्षत्रियजातिकः ॥ ४२ ॥
पिपीलिका इति ज्ञेया वर्णकुङ्कुमकेसरी ।
दक्षिणे यजुषामाहुर्नारदेन प्रकीर्तितः ॥ ४३ ॥
अघोरे पश्चिमे संज्ञे मुखे जातो ह्यथर्वणः ।
षट्पितापुत्रकस्तालस्तस्मादुद्भवयिष्यते (?) ॥ ४४ ॥
वैश्यजातिरिति प्रोक्तः कनकाभ इति स्मृतः ।
मुरजा इति नामाख्यं नारदेन प्रशंसितम् ॥ ४५ ॥

---

१ °पटलीवा° इति समीचीनः पाठः स्यात् ।

तत्पुरुषेत्युत्तरे च मुखे सामवेदोद्भवं तथा ।
सम्पद्वेष्टिक्रतालोऽयं तस्मात्सम्भवमुच्यते (?) ॥ ४६ ॥
गान्धर्वमिति संज्ञं च मणिवर्णप्रशंसितम् ।
रिगमा इति संज्ञं तु ऋषिभिः प्रतिपादितम् ॥ ४७ ॥
ईशानोर्ध्वमुखे जातः शास्त्रागमसमन्वितः ।
तस्मादुद्भव उद्घट्टस्तालोऽयं नामतः क्रमात् ॥ ४८ ॥
नानाजातिर्नीलवर्णो यतिः समयतिः क्रमात् ।
रुद्रपञ्चमुखेभ्यश्च तालाः पञ्चविधा मताः ॥ ४९ ॥
ब्रह्महा च सुरापानी स्वर्णस्तेयी च तल्पगः ।
तत्संयोगी पञ्चमश्च येऽतिपातकिनः स्मृताः ॥ ५० ॥
तद्दोषपरिहारार्थं प्रायश्चित्तमुदीरितम् ।
गणैर्नन्दीश्वराद्यैश्च ऋषिभिर्नारदादिभिः ॥ ५१ ॥
आदितालादितालानामेकोत्तरशतं क्रमात् ।
शृण्वतां पातकहरं राज्ञां क्रतुफलं लभेत् (?) ॥ ५२ ॥
राज्याभिवृद्धिसन्तानं रणे शत्रुविनाशनम् ।
सौभाग्यारोग्यमतुलं कामशास्त्रविवर्धनम् ॥ ५३ ॥
लास्याङ्गे संपरिज्ञानं कलावेदिनमुत्तमम् (?) ।
सर्वसङ्गीतसुभगं नृपाणां कीर्तिवर्धनम् ॥ ५४ ॥

इति श्रीनारदकृतौ सङ्गीतमकरन्दे नृत्ताध्याये नाट्यशालासभासभापतिपात्रपुष्पाञ्जलिपञ्चतालोत्पत्तिनिरूपणं नाम प्रथमः पादः ।

नृत्याध्याये द्वितीयः पादः ।

सदाशिवो हरिर्ब्रह्मा भरतः कश्यपो मुनिः ।
मतङ्गो यश्च दुर्गा च शक्तिशार्दूलकोहलाः ॥ १ ॥
हनूमांस्तुम्बुरुश्चैव अङ्गदश्चैव नारदः ।
एते साहित्यसर्वज्ञा बुधास्तालान्प्रचक्रमुः ॥ २ ॥

एकोत्तरशततालाः उच्यन्ते ।

चच्चत्पुटश्चाचपुटः षट्पितापुत्रकस्तथा ।
सम्पक्वेष्टिक उद्धट्ट आदितालश्च दर्पणः ॥ ३ ॥
चर्चरी सिंहलीलश्च कन्दर्पः सिंहविक्रमः ।
श्रीरङ्गो रतिलीलश्च रङ्गतालः परिक्रमः ॥ ४ ॥
हंसलीलो वर्णभिन्नो राजचूडामणिस्तथा ।
प्रत्यङ्गो गजलीलश्च त्रिभिन्नो वीरविक्रमः ॥ ५ ॥
रङ्गद्योतो राजतालः सिंहविक्रीडितस्तथा ।
वनमाली वर्णतालस्ततो रङ्गप्रदीपकः ॥ ६ ॥
हंसनादः सिंहनादो मल्लिकामोदसंज्ञकः ।
भवेच्छरभलीलश्च रङ्गाभरण एव च ॥ ७ ॥
ततस्तुरङ्गवि(व)ल्ली स्यात्ततस्तु सिंहनन्दनः ।
जयश्री विजयानन्दः प्रतितालो द्वितीयकः ॥ ८ ॥
मकरन्दः कीर्तितालो विजयो जयमङ्गलः ।
राजविद्याधरो मण्ठो जयतालः कुडुक्कः ॥ ९ ॥
ततो निःसारिणी क्रीडा मल्लतालश्च दीपकः ।
अनङ्गलीलो विषमो नान्दीतालो मुकुन्दकः ॥ १० ॥
एकतालश्च कङ्कालश्चतुस्तालश्च दोम्बुलिः ।
अभङ्गो रायभङ्गालस्तथैव लघुशेखरः ॥ ११ ॥
प्रतापशेखरश्चान्यो जगझम्पश्चतुर्मुखः ।
झम्पश्च प्रतिमण्ठश्च तथा तालस्तृतीयकः ॥ १२ ॥
तस्मादुपरि विज्ञेयो वसन्तललितो रतिः ।
करुणाख्यायितश्चैव षट्तालो वर्धमस्तथा ॥ १३ ॥
ततो वर्णयतिश्चैव रायनारायणस्तथा ।
मदनश्चैव विज्ञेयः पार्वतीलोचनस्तथा ॥ १४ ॥
ततो गारुगितालः स्यात्ततः श्रीनन्दनो जयः ।
लीलाविलोकितश्चान्यो ललितप्रियमेव च ॥ १५ ॥

जनको [illegible] ।
उत्सवश्चेति तालानाम[illegible] ॥ १६ ॥
तल्लक्षणं च वक्ष्येऽहं [illegible] ।

अथताललक्षणमाह ।

ताले चचत्पुटे ज्ञेयं गुरुद्वन्द्वं लघुप्लुतम् ॥ १७ ॥
गुरुर्लघुर्गुरुश्चैव भवेच्चाचपुटाभिधे ।
पलगा गलपाश्चैव षट्पितापुत्रकस्तथा ॥ १८ ॥
मगणः स्यात्प्लुताद्यन्तं (:) संपक्वेष्टाख्यसंज्ञके ।
उद्ध(द्घ)ट्टो मगणस्त्वेक आदितोऽतिलघुः स्मृतः ॥ १९ ॥
दर्पणः स्याद्द्रुतद्वन्द्वं गुरुश्चैव प्रकीर्तितः ।
अष्टगुर्वेकचर्चर्यां विरामं च द्रुतौ लघुः ॥ २० ॥
सिंहलीले विधातव्यं लघ्वाद्यन्तं द्रुतत्रयम् ।
द्रुतद्वयं –[1]कारश्च कन्दर्पे परिकीर्तितः ॥ २१ ॥
सिंहविक्रमतालस्तु मगणो लपलो गपौ ।
श्रीरङ्गसंज्ञके ताले सगणो लगपौ मतः ॥ २२ ॥
रतिलीले विधातव्यं लघ्वोर्मध्ये गुरुद्वयम् ।
चत्वारो रङ्गताले स्याद्द्रुतौ(ता)गुरुस्ततः परम् ॥ २३ ॥
परिक्रमे द्रुतद्वन्द्वं यगणस्तदनन्तरम् ।
प्रत्यङ्गसंज्ञके ताले मगणः स्याल्लघुद्वयम् ॥ २४ ॥
लघुचतुष्कं विरामान्त्यं गजलीले प्रकीर्तितम् ।
लघुर्गुरुः प्लुतश्चैव त्रिभिन्ने परिकीर्तितः ॥ २५ ॥
वीरविक्रमताले तु लौ द्रुतौ च गुरुस्तथा ।
सविरामं लघुद्वन्द्वं ताले स्याद्धंसलीलके ॥ २६ ॥
वर्णभिन्नाभिधे ताले द्रुतद्वन्द्वं लघुर्गुरुः ।
राजचूडामणौ ताले द्रुतौ लश्च द्रुतौ लगः ॥ २७ ॥
रङ्गद्योतेन तालेन मगणो लप्लुतावपि ।
गपौ द्रुतौ गलो(लः)पश्च राजताले प्रकीर्तितः ॥ २८ ॥

---

1 अत्र आदर्शपुस्तकेऽक्षरमेकं त्रुटितम् ।

द्रुला पो गगलो(लः)पश्चसिंहविक्रीडिते लपौ ।
द्वौ द्रुतौ लो द्रुतौ चैव वनमाली गुरुस्तथा ॥ २९ ॥
गुरुर्लघुद्रुतौ गुश्च वर्णः स्याच्चतुरस्रके ।
लघुद्रुतौ लघू गश्च तिस्रवर्णः प्रकीर्तितः ॥ ३० ॥
प्रतितूर्यविरामान्त्यं मिश्राख्यो द्वादशद्रुताः ।
प्लुतो गुरुद्रुतद्वन्द्वं गद्वयं लो गुरुस्तथा ॥ ३१ ॥
रङ्गप्रदीपताले स्यात्सगणाद्गप्लुतो यदि ।
गप्लुतौ द्रुतयुग्मं च हंसनादे प्रकीर्तितः (तम्) ॥ ३२ ॥
यगणो लगुरुश्चैव सिंहनादो निरूपितः ।
ताले स्यान्मल्लिकामोदे गद्वयं लचतुष्टयम् ॥ ३३ ॥
लघुद्रुतचतुष्कं स्याल्लघुः शरभलीलके ।
तगणो लो प्लुतौ गश्च रङ्गाभरणसंज्ञके ॥ ३४ ॥
तुरङ्गलीलताले स्याद्द्रुतद्वन्द्वं लघुस्तथा ।
तपा लगद्रुतौ गालपलपालश्च लद्वयम् ॥ ३५ ॥
निषद्धं (निःशब्दं) लचतुष्कं स्यात्ताले स्यात्सिंहनन्दने ।
रगणो लगुरुश्चैव जयश्रीरिति गण्यते ॥ ३६ ॥
भवेयुर्विजयानन्दे लद्वयं गुरवस्त्रयः ।
ललितौ प्रतिताले स्याद्गतौ लश्च द्वितीयके ॥ ३७ ॥
मकरन्दे द्रुतद्वन्द्वं लघुत्रयमतो गुरुः ।
लगौ पगौ लपौ गश्च कीर्तिताले प्रकीर्तितः ॥ ३८ ॥
प्लुतो गश्च प्लुतो गश्च ताले विजयसंज्ञके ।
सकारश्च सकारश्च जयमङ्गलनाम च ॥ ३९ ॥
लघुवक्रो द्रुतौ ताले राजविद्याधराभिधे ।
सकारो मण्ठताले स्यात्कल्पितं चचतुष्टयम् (?) ॥ ४० ॥
भारो रोघो गुरुद्वन्द्वं निःशब्दं मठतालके ।
अथवा नगणो जश्च लघुश्चैव प्रकीर्तितः ॥ ४१ ॥
जगणो लो द्रुतौ पश्च जयताले निरूपितः ।
द्रुतद्वयं लघुद्वन्द्वं भवेत्ताले कुडुक्के ॥ ४२ ॥

लघुद्वन्द्वं विरामान्त्यं ताले निःसारुके भवेत् ।
द्रुतद्वन्द्वं विरामान्त्यं क्रीडाताले प्रकल्पितम् ॥ ४३ ॥
चन्द्रनिःसारुनीताले प्लुतमेवाभिधीयते ।
सकारो गुरुलश्चैव त्रिभङ्गिरभिधीयते ॥ ४४ ॥
कोकिलप्रियताले स्यात्क्रमाद्गुरुलघुप्लुताः ।
ताले निःसारुके ज्ञेयो लघुश्चैव विधीयते (?) ॥ ४५ ॥
श्रीकीर्तिसंज्ञके ताले गुरुद्वन्द्वं लघुद्वयम् ।
भकारो बिन्दवो गुर्वोर्मध्ये स्याद्बिन्दुमालिके ॥ ४६ ॥
समताले लघुद्वन्द्वं विरामान्त्यं द्रुतत्रयम् ।
तौ द्रुतौ च प्लुतस्यान्ते ताले स्यान्नन्दनाभिधे ॥ ४७ ॥
किञ्चिद्गुरुद्वयोर्मध्ये बिन्दुयुग्मं प्रचक्षते ।
उद्वीक्षणे लघुद्वन्द्वं गुरुरेकस्ततः परम् ॥ ४८ ॥
मट्टिकायां विधातव्यं गुरुर्बिन्दुः प्लुतः क्रमात् ।
विरामादि व्योमयुग्मं लद्वयं च द्विमट्टिका ॥ ४९ ॥
ढिङ्कीकारङ्गणं तस्यास्तस्याः सायोजने तथा ।
कौ बिन्दू लश्च बिन्दू च विज्ञेया वर्णमण्टिका ॥ ५० ॥
लद्वयं बिन्दुयुग्मं च गुरुश्चैवाभिनन्दके ।
विधातव्यान्तरक्रीडा विरामान्त्यं द्रुतद्वयम् (?) ॥ ५१ ॥
समल्लताले द्विलघु विरामान्त्यं द्रुतद्वयम् ।
द्रुतद्वन्द्वं लघुद्वन्द्वं गुरुद्वन्द्वं च दीपके ॥ ५२ ॥
लघुप्लुतौ सकारश्च स्यादनङ्गेऽभिधीयते ।
वेदद्रुतौ विरामान्तौ द्वौ पदौ विषमद्रुतः ॥ ५३ ॥
नान्दीताले समुद्दिष्टा लघुबिन्दुर्लघुर्गुरुः ।
मुकुन्दसंज्ञिके ताले लघुर्बिन्दुर्लघुर्गुरुः ॥ ५४ ॥
अन्ये मुकुन्दलध्वादिषड्बिन्दु लचतुष्टयम् ।
लघुद्वन्द्वं साकारेण कुडुक्कः परिकीर्तितः ॥ ५५ ॥
एकेनैव द्रुतेन स्यादेकतालेतिसंज्ञितः ।
चतुर्विधान्यकङ्कालः पूर्वखण्डसमागमः ॥ ५६ ॥

पूर्णे लघुचतुष्टेन गुरुणा लघुना क्रमात् ।
द्रुतद्वन्द्वं लघुः खण्डे गुरुद्वन्द्वं लघुः समे ॥ ५७ ॥
एको गुरुर्लघुद्वन्द्वं कङ्काले विषमे भवेत् ।
चतुस्ताले गुरुः पूर्वं ततो बिन्दुत्रयं भवेत् ॥ ५८ ॥
विरामान्त्यं लघुद्वन्द्वं डोम्बुलीति प्रकीर्तितः ।
लघुमेव परं त्वन्ये कालबन्धनकाभिधे ॥ ५९ ॥
अभङ्गकालकर्तव्यं गुर्वेकं लघुप्लुतम् ।
रगणो बिन्दुयुग्मेव रायभङ्काल इष्यते ॥ ६० ॥
एकेन सविरामेण लघुना लघुशेखरः ।
प्रतापशेखरेऽस्यङ्गविरामान्तं द्रुतद्वयम् ॥ ६१ ॥
झगझम्पे गुरुस्त्वेको विरामान्त्यं द्रुतत्रयम् ।
चतुर्मुखाभिधे ताले जगणो रन्तरद्रुतम् (?) ॥ ६२ ॥
व्योमद्वयं विरामान्त्यं लघु झम्पे विधीयते ।
जगणो मगणो वापि प्रतिमण्ठे बुधैः स्मृतः ॥ ६३ ॥
तालज्ञैरयमेवान्यैर्झल्लकः परिकीर्तितः ।
तृतीयताले बिन्दुः स्याद्विरामान्त्यं द्रुतद्वयम् ॥ ६४ ॥
वसन्तताले कर्तव्या द्रुतद्वन्द्वं लघुर्गुरुः ।
ताले ललितसंज्ञे च द्रुतद्वन्द्वं लघुर्गुरुः ॥ ६५ ॥
रतिताले लघुः कार्यः सतस्त्वेको गुरुः स्मृतः ।
ताले करण इत्याख्ये ज्ञेयं बिन्दुचतुष्टयम् ॥ ६६ ॥
षट्तालसंज्ञके ताले बिन्दुषट्कं निरन्तरम् ।
वर्धने बिन्दुयुगलं ततः कार्यौ गुरुः स्मृतः ॥ ६७ ॥
वर्णमण्ठाभिधे ताले लघुद्वन्द्वं नभस्त्रयम् ।
रायनारायणे बिन्दुद्वितयं जगणो गुरुः ॥ ६८ ॥
द्रुतद्वन्द्वं प्लुतश्चैको मदने परिकीर्तितः ।
पार्वतीलोचने ताले तद्रुतौ तगणः क्रमात् ॥ ६९ ॥
अथवा मगणो लश्च गुरुद्वन्द्वं द्रुतत्रयम् ।
गारुगे कथ्यते प्राज्ञैर्विरामान्त्यं चतुर्द्रुताः ॥ ७० ॥

श्रीनन्दनस्य तालः स्याज्जगणः द्रुत इत्यपि ।
जयके जगणश्चैव बिन्दुयुग्मं द्रुतस्तथा ॥ ७१ ॥
बिन्दुर्लघुः द्रुतश्चैव लीलाताले प्रकीर्तितः ।
विलोके च लघुर्वक्रव्योमयुग्मं ततः द्रुतम् ॥ ७२ ॥
ललितप्रियताले स्यात्सगणोऽनन्तरा लघुः ।
जनताभिधताले स्याज्जगणोऽथ परं गुरुः ॥ ७३ ॥
बिन्दुद्वयं विरामान्तं लघुनी रागवर्धने ।
उत्सवः कथितः प्राज्ञैर्व्योमद्वयं द्रुते लघुः ॥ ७४ ॥
एवं प्रकारः कथितो नारदेन महात्मना ।

इति श्रीनारदकृतौ सङ्गीतमकरन्दे नृत्याध्याये एकोत्तरशततालाख्यानिर्णयो नाम द्वितीयः पादः समाप्तः ।

अथ नृत्याध्याये तृतीयः पादः ।

चतुरस्रादितालानामेतानि कथितान्यहम्[1] ।
प्रस्तारसहितं लक्ष्म तद्भेदांश्च पृथग्विधान् ॥ १ ॥
तपोभागद्व्यालापो पुमा पामगणेति च (?) ।
पञ्चकार्यप्रबन्धा च नन्दिकेश्वरकल्पितम् ॥ २ ॥
शब्दाडम्बरनामाख्यं तालं द्रुतचतुष्टयम् ।
द्रुतद्वयं गुरुस्तिस्र आडम्बरस्ततो लघुः ॥ ३ ॥
न तालं न च वादित्रमन्यतालेन योज्यते (?) ।
मध्ये मध्ये तथा कुर्यात्तालमात्रं समन्वितम् ॥ ४ ॥
सर्वशब्दसमायुक्त अरेख इति कीर्तितः ।
सततसुरचनेशेषु (?) प्रसिद्धो नारदेन च ॥ ५ ॥

अथ दशविधतालप्रबन्धा उच्यन्ते ।

गुरुद्वन्द्वं लघुद्वन्द्वं गुरुरेकश्चिभङ्गके ।
चतुर्लघुलकारश्च लघुतश्च चतुर्मुखे ॥ ६ ॥

---

१ °कथयाम्यहम्° इति पाठः स्यात् ।

पञ्चतालप्रबन्धः स्याद्द्रुताद्यन्तं द्रुतश्चतुः(?) ।
तमसा पञ्चलघुना षट्तालश्च प्रकीर्तितः ॥ ७ ॥
द्रुतौ गुर्वो (रु)र्लघुश्चैव सुलादिरभिधीयते ।
लघुरित्युच्यते तालं गीतज्ञैः पूर्वसूरिभिः ॥ ८ ॥
अष्टमङ्गलतालः स्याद्व्योमाद्यन्तं नवद्रुतम् ।
यः द्रुतो गलपो लोपो(पः) समगौ नवतालके ॥ ९ ॥
षड्भञ्जनं दीर्घषट्कं गुरुद्वन्द्वं लघुत्रयम् ।
दशरूपप्रबन्धः स्यात्रिंशन्मात्रं लघुस्तथा ॥ १० ॥
धरारसतनू भौ मो लघुद्वादशबिन्दवः ।
निःशब्दो लश्च चत्वारताल एकादशो भवेत् ॥ ११ ॥
व्यञ्जनो (ने?) सरलो दीर्घद्वादशसामसम्भवम् ।
गपव्योमयुतं चैव तालः स्यादर्कमालिका ॥ १२ ॥
एतानि दशतालानि वाद्यन्ते श्रूयते नरैः ।
तत्पूर्वसर्वकार्येषु सर्वोत्कृष्टश्च जायते ॥ १३ ॥
विजयो जयमानन्दो जयश्रीर्जयमङ्गलम् ।
जयतालश्च पञ्चैते श्रुत्यं (मृत्युं) जयकरं शुभम् ॥ १४ ॥
द्रुतो गपो नगो राजौ जभव्योमद्वयं पुनः ।
पञ्चतालप्रबन्धः स्याच्छ्राव्यं जयकरं शुभम् ॥ १५ ॥
मदनोत्सवलक्ष्मीशक्रीडाकीर्तिस्तथा रतिः ।
सिंहलीलश्च सप्तैते मार्तण्डजयदः क्रमात् ॥ १६ ॥
चच्चत्पुटश्चाचपुटः षट्पितापुत्रकस्तथा ।
प्रत्यङ्गो गजलीलश्च षट्तालश्च प्रबन्धकम् ॥ १७ ॥
ध्रुवा मठा प्रतिमठा लम्बको रासकस्तथा ।
अष्टतालश्चैकतालः सुलादीत्युच्यते बुधैः ॥ १८ ॥

लघुसुलादिः ।

रङ्गद्यूतो राजतालो वनमाली त्रिधा मतः ।
त्रिभङ्गी तालवृन्दं च नारदेन यथाक्रमम् ॥ १९ ॥

एकतालश्च कङ्कालश्चतुस्तालश्च दोम्बुलिः ।
चतुर्मुखप्रबन्धं स्याच्छ्रूयते शत्रुनाशनम् ॥ २० ॥
कन्दर्पो बिन्दुमाली च समतालश्च नन्दनः ।
राजविद्याधरो झम्पा विषमः कन्दुकस्तथा ॥ २१ ॥
सङ्गीतज्ञमनोरम्यमष्टमङ्गलनामकम् ।
प्रबन्धं च शृणोत्यत्र विषमग्रहमोचनम् ॥ २२ ॥
उत्कूटः सिंहनादश्च अभङ्गो वीरविक्रमः ।
ततः शरभलीला च सिंहविक्रीडितो मतः ॥ २३ ॥
प्रतापशेखरश्चान्यः सिंहविक्रम एव च ।
रायनारायणो नाम नवतालप्रबन्धकम् ॥ २४ ॥
यमौ जपौ लघुव्योम वक्रपापविरामजौ ।
लपो तपो लपो वक्र सपो लघुगपो लघु ॥ २५ ॥
विरामान्तं लघुद्वन्द्वं पुनस्तत्र विरामकम् ।
चतुर्बिन्दु ललव्योमौ जगुरुः स्यान्नवाभिधे ॥ २६ ॥
अभिनन्दान्तरक्रीडा मल्लतालश्च दोम्बुलिः ।
कुडुक्का प्रतिमठो मकरन्दश्च चर्चरी ॥ २७ ॥
परिक्रमो हंसनाद एभिस्तालैः समन्वितम् ।
दशरूपप्रबन्धं च श्रूयते कीर्तिवर्धनम् ॥ २८ ॥
नान्दी तृतीयकारस्तु लघुशेखरसंज्ञकः ।
प्रतापशेखरश्चैव तथैवानङ्गलीलकः ॥ २९ ॥
वर्णमट्ठश्च चर्चर्यो वर्णतालो द्वितीयकः ।
उत्सवो मदनश्चैवमेकादश निरूपितम् ॥ ३० ॥
वनमाली राजचूडो वर्णतालः प्रदीपकः ।
रङ्गाभरण उत्कलो रतिकीर्तिश्च नन्दनः ॥ ३१ ॥
वीरविक्रमलक्ष्मीश उत्सवश्च ततः परम् ।
प्रबन्धमर्कमालाख्यं श्रूयते पापनाशनम् ॥ ३२ ॥

(इति दशतालः प्रबन्धः समाप्तः ।)

अङ्कतालाः क(थ्यन्ते) ।

गुरवः षोडश ज्ञेया द्वात्रिंशल्लघवः पुनः ।
चतुःषष्टिर्द्रुताश्चैव तालो यक्षपतिर्भवेत् ॥ ३३ ॥
विरामार्धार्धचन्द्रार्धमातृकात्रितयं तथा ।
व्यञ्जनं च लयं खण्डं लघुद्वन्द्वं द्रुतं ततः ॥ ३४ ॥
अनुद्रुतद्वन्द्वलघुस्तालोऽयं वाद्यविभ्रमः ।
इति सङ्गीतकैः प्रोक्तो ग्रावडीदश विश्रुतः ॥ ३५ ॥
भरताले नकारः स्याद्भगणो ल ततो लगः ।
ततश्च बिन्दुयश्चैव कल्पितं भचतुष्टयम् ॥ ३६ ॥
पुनर्मठभकारश्च निःशब्दं च गुरुद्वयम् ।
आलापमध्ये चार्द्धेन्दुः सूरिभिश्च विरच्यते ॥ ३७ ॥
गुरुर्बहुकलायुक्ता प्लुतयुग्मं ततः परम् ।
ब्रह्मताले भवेत्तत्र नारदस्य मतं यतः ॥ ३८ ॥
प्लुतमेकं लघुद्वन्द्वं निःशब्दो लत्रयं भवेत् ।
द्रुतमल्प(?) मया प्रोक्तो लघून्याभ्यो निरूपितः ॥ ३९ ॥
गीतझम्पाख्यके ताले व्यञ्जनं द्रुतमिश्रलः ।
वाद्यं झम्पा विरामान्त्यं द्रुतद्वन्द्व च बन्धनम् ॥ ४० ॥
ब्रह्माण्डतालेऽनुद्रुतो द्रुतसात्यं त्यकल्पनम् (?) ।[1]
पद्रुतास्त्वर्धबिन्दुश्च लघुश्चैव द्रुतद्वयम् ॥ ४१ ॥
तद्भेदबिन्दुलश्चैव ततो मिश्रलघुद्वयम् ।
द्रुतद्वयं विरामान्त्यं रायकोलाहलः स्मृतः ॥ ४२ ॥
द्रुतत्रयं लघुद्वन्द्वं त्रिरावृत्ता भका ततः ।
मातृकाद्वितयं चैव तालः प्रोक्तो महाशनिः ॥ ४३ ॥
अव्यक्तं व्यञ्जनं बिन्दु तिस्रो लघुः पुनः पुनः (?) ।
व्यञ्जनं वलयं द्वन्द्वमव्यक्तं तिस्रलस्तथा ॥ ४४ ॥
तिस्रलो व्यञ्जनो बिन्दु(ः) तिस्रमात्रेकमेव च ।
तिनाभेरिरिति प्रोक्तो वाद्यविद्याविशारदैः ॥ ४५ ॥

---

१ °द्रुतसाद्यन्त्यकल्पनं° इति स्यात् ।

गगनिःशब्दलघ्वेकद्वितीयं लगलद्रुतम् ।
नगलो द्वौ द्रुतं दीसं यगणो लघलः स्मृताः ॥ ४६ ॥
गुरवः सप्त विज्ञेयाः सरलानि च षोडश ।
द्रुता विंशतिराख्यातास्तालो वाद्यगजाङ्कुशः ॥ ४७ ॥

(अथ) तालशब्दनिष्पत्तिः ।

तालशब्दस्य निष्पत्तिः प्रतिष्ठार्थेन धातुना ।
गीतं वाद्यं च नृत्यं च भाति ताले प्रतिष्ठितम् ॥ ४८ ॥
संयोगे च वियोगे च वर्तते च तयोर्द्वयोः ।
स्थापितोऽपि दश प्राणैः स कालस्तालसंज्ञिकः ॥ ४९ ॥
शिवशक्त्यात्मकं पुण्यं यशस्यं भुक्तिमुक्तिदम् ।
दशप्राणात्मकं तालं यो जानाति स तत्त्ववित् ॥ ५० ॥
कालमार्गक्रियाङ्गानि गृहजातिकलालयाः ।
यतिप्रस्तारकं चैव तालप्राणा दश स्मृताः ॥ ५१ ॥

अथ काललक्षणम् ।

उपर्युपरि विन्यस्य पद्मपत्रशतं सकृत् ।
स कालः सूचिसंभेदात्तत्क्षणस्य कलं प्रति ॥ ५२ ॥
लवः क्षणैरष्टभिः स्यात्काष्ठा चाष्टलवात्मिका ।
अष्टकाष्ठा निमेषः स्यान्निमेषैरष्टभिः कला ॥ ५३ ॥
ताभ्यां चैव चतुर्भागचतुर्भागनामनुद्रुतः(?) ।
अनुद्रुताभ्यां बिन्दुश्च बिन्दुभ्यां तु लघुर्भवेत् ॥ ५४ ॥
लघुद्वन्द्वं गुरुश्चैव त्रिलघु प्लुतमुच्यते ।
इतिमानगतिः प्रोक्ता तालज्ञैः पूर्वसूरिभिः ॥ ५५ ॥

अथ मार्गलक्षणम् ।

दक्षिणो वार्तिकश्चैव तथा चित्रविचित्रकः ।
तथा चित्रतरस्तु स्यादतिचित्रतरो मतः ॥ ५६ ॥

षड्वधः कथितो मार्गस्तस्य रूपं निरूप्यते ।
एतदेव नारदस्य मतमिष्टं यथाक्रमम् ॥ ५७ ॥
अष्टमात्रा कला ज्ञेया मार्गे दक्षिणसंज्ञके ।
वार्तिकस्य तु चतुर्मात्रा कला चित्रा द्विमात्रिका ॥ ५८ ॥
द्रुता चित्रतरे तस्या लघुश्चित्रतरो मतः ।
अतिचित्रतरो मार्गकलाश्च द्रुतसंज्ञिकः(?) ॥ ५९ ॥

मात्रालक्षणम् ।

लघ्वक्षराणां पञ्चानां मानमुच्चारणे हि तत् ।
तत्प्रमाणं परिज्ञेयं मार्गस्तालस्ततो बुधैः ॥ ६० ॥
मार्गदेशीगतत्वे च तत्राद्यस्य क्रिया द्विधा ।
तद्विधं कथयिष्यामि नारदो मार्गलक्षणी (णम्) ॥ ६१ ॥
तत्र चोवादनिष्क्रामं विक्षेपं च प्रवेशनम् ।
चतुर्विधं च कल्पेत निःशब्दः कथितो बुधैः ॥ ६२ ॥
शम्यतालो द्रुतश्चैव संनिपातस्तथा परम् ।
सशब्देन च संयुक्तो विज्ञेयश्च चतुर्विधः ॥ ६३ ॥
सर्वाङ्गुलिसमाक्षेप औपाद इति कीर्तितः ।
निष्क्रामोऽथ गतिस्तस्या अङ्गुलीनां प्रसारणम् ॥ ६४ ॥
तस्य दक्षिणतः कालो विक्षेप इति कथ्यते ।
विवर्णनं च हस्तस्य प्रवेशोऽधोमुखस्य च ॥ ६५ ॥
तस्य हस्तनिपातस्तु शम्यतालस्तु वामतः ।
हस्तयोरुभयोर्घातौ संनिपातद्रुतौ स्मृतौ ॥ ६६ ॥
एतदष्टप्रकारास्तु मार्गभेदा विवक्षिताः ।
तत्रा(द्य)द्वित्रिचतुरकलासु प्रतियोषितः (नः) ॥ ६७ ॥

अथ देशीक्रिया ।

देशीयोग्यं (ग्यान्) प्रवक्ष्यामि व्यापारान् ध्रुवकादिकान् ।
ध्रुवका सर्पिणी कृष्या पद्मिनी च विसर्पिका ॥ ६८ ॥

---

१ °षड्विधः कथि° इति शुद्धः पाठः स्यात् । २ °चावाप° इति शुद्धः पाठः स्यात् । ३ °आवाप° इति शुद्धः पाठः स्यात् ।

विक्षिप्ताख्या पताकाख्या मातृका त्वरितक्रमी ।
अमात्रापि (इति) विज्ञेया कथितं नारदेन च ॥ ६९ ॥
सशब्दो ध्रुवका ज्ञेया सर्पिणी वामगामिनी ।
कृष्णा दक्षिणतः पातः पद्मिनी स्यादधोमुखा ॥ ७० ॥
विसर्पिका बहिर्याता विक्षिप्ता कुलजात्मिका ।
पताका चोर्ध्वगमना पतिता करपातना ॥ ७१ ॥

दक्षिणमार्गमात्रानामानि ।

ध्रुवका सर्पिणी चैव पताका परिकथ्यते ।
चतुर्मात्रा कला ज्ञेया वार्त्तिकेऽपि न योजयेत् ॥ ७२ ॥
ध्रुवकापतिते चित्रसरिविन्यादिकान् द्रुतान्(?) ।
अनेनैव प्रकारेण कालमार्गक्रिया भवेत् ॥ ७३ ॥

अथ अङ्गानि ।

अनुद्रुतो द्रुतश्चैव लघुर्गुरुस्ततः परम् ।
प्लुतश्चेति क्रमेणैव तालाङ्गानि च पञ्चधा ॥ ७४ ॥
द्रुतस्य देवता शम्भुर्लघोश्चाद्रिपतेः सुता ।
गौरी च श्रीश्चापि गुरोः प्लुते ब्रह्मादयस्त्रयः ॥ ७५ ॥

अथ ग्रहाः ।

ग्रहास्त्रिधा [1]समा नीतास्तथानागत इत्यपि(?) ।
तल्लक्षणं च वक्ष्यामि नारदो मुनिपुङ्गवः ॥ ७६ ॥
निकोतीते [2]त्वतीतस्य तालादौ त्वनागतः ।
समः समग्रहः प्रोक्तस्तालज्ञैः पूर्वसूरिभिः ॥ ७७ ॥

अथ जातिः कथ्यते ।

[3]चतुरस्त्रस्तिस्रमिश्रस्तालं खण्डाभिधे तथा(?) ।
चतुर्विधो भवेत्तालस्तत्स्वरूपं निरूप्यते ॥ ७८ ॥

---

१ °समो नीतस्तथा° इति शुद्धः पाठः स्यात् । २ °नीतोऽतीते° इति पाठः शुद्धः स्यात् । उद्देशे (श्लो. ७६) 'नीतः' इत्येव पाठदर्शनात् । ३ 'चतुरस्त्रस्तिस्रमिश्रस्तालः खण्डामिश्रस्तथा' इति शुद्धः पाठः स्यात् ।

तत्र चचत्पुटः प्रोक्तश्चतुरस्रो मनीषिभिः ।
तथा चाचपुटस्तिस्रस्तथा भेदा भवन्ति च ॥ ७९ ॥
गुरुत्रयं समारभ्य द्विगुणं द्विगुणं क्रमात् ।
एवं पूर्वव्यतीते तु स्वं(?)षड्विधकल्पना ॥ ८० ॥

३।१२।२४।४८।९६ इयं जाति कला ज्ञेया ।

चतुर्गुरुं समारभ्य द्विगुणं द्विगुणं क्रमात् ।
शतं चाष्टाविंशतिश्च चैवं षड्विधकल्पना ॥ ८१ ॥

४।८।१६।३२।६४।१२८। चतुरस्रजातिकला ज्ञेया ।

युग्मौ च मिश्रणान्मिश्रतालः प्रोक्तो विचक्षणैः ।
मिश्रतालमितिश्चैव[2] नारदो मुनिरब्रवीत् ॥ ८२ ॥
विषं(?) निवेद्य तालाङ्गैर्यथा तत्क्रियते बहु ।
भङ्गिभिश्च सतालः स्यात्तालः खण्डसंज्ञकः ॥ ८३ ॥

चतुरस्रजातिमध्यस्था गुरुश्च गुरुबहुविधा जातास्तदा लैश्चतुरस्रजातीनां खण्डाः विभागा भविष्यन्ति । तत्र तदा खण्डार्थताला इति ख्याता जायन्ते । एते सर्वजातिसामान्या इति वाच्या इत्यर्थः ।

अथ लयकालो ज्ञेयः ।

कालान्तरालघृत्तिर्याम्लकबिल्व[3]....वत् ।
कथितो नारदेनैव काललक्षणवेदिना ॥ ८४ ॥
धत्ते मध्यार्धकालस्य मध्यकालस्वभावतः ।
विलम्बो दीर्घकालस्य त्रिकालस्त्विति निश्चितः ॥ ८५ ॥
अयनार्धे यतिः सम्यक्कीर्तितो भरतादिभिः ।
एतन्मतं ममैवेति नारदो मुनिरब्रवीत् ॥ ८६ ॥
[4]समश्रोतोवहयतिर्गोपुच्छा चेति सा त्रिधा(?) ।
[5]एकयोर्वलयो यस्य धृती सा स्यात्समाभिधा(?) ॥ ८७ ॥

---

१ अस्मिन् पादे एकमक्षरं त्रुटितम् । २ °मिश्रतालमितिं चैवं न्वर° इति पाठः स्यात् । ३ अत्र आदर्शपुस्तके त्रीण्यक्षराणि लुप्तानि । तानि 'कपित्थ' इति भवेयुः । ४ °समा स्रोतोवहा यतिर्गो° इति पाठः स्यात् । ५ °एक एव लयो यस्या धृतः स्या° इति पाठः स्यात् ।

द्रुताद्यः क्रमाद्यत्र यतिः स्रोतोवहा मता ।
गोपुच्छा इति विज्ञेया द्रुतादीनां विपर्ययात् ॥ ८८ ॥

अथ प्रस्तारः ।

अन्येऽपि सन्ति[1] भूयिष्ठास्तालास्ते लक्ष्यवर्त्मनः ।
प्रसिद्ध[2]विधिरत्रैव शास्त्रेऽस्मिन्प्रतिपादितः ॥ ८९ ॥
तथेति[3] तत्क्रयार्थं तु (?) लघूपाया भवन्त्यमी ।
प्रस्तार[4]सङ्ख्या नष्टं चोद्दिष्टं पातालकस्तथा ॥ ९० ॥
द्रुतमेरुर्लघुमेरुर्गुरुमेरुः प्लुतस्य च ।
मेरुः संयोगमेरुश्च खण्डप्रस्तारकं तथा ॥ ९१ ॥
प्राचां चतुर्णां मेरूणां नष्टोद्दिष्टं पृथक् पृथक् ।
एकोनविंशतिरिति प्रति[5]स्थानं ब्रुवेऽधुना ॥ ९२ ॥

प्रस्तारो यथा—

[6]न्यस्याल्पमध्यमहतोऽधस्ताक्षेपं यत्नोपरि (?) ।
प्रागूने वाम[7]धःस्थाप्यं संभवे महतो लिखेत् ॥ ९३ ॥
अल्पानसंभवे तालपूर्त्यै भूयोऽप्ययं विधिः ।
सर्वद्रुतावधिः कार्यः प्रस्तारोऽयं लघौ गुरौ ॥ ९४ ॥
प्लुतो व्यस्ते नन्यते च चाक्षराणि चतुर्विधम् (?) ।
संज्ञया तत्परिज्ञेयं प्लुतं लघुगुरुप्लुतम् ॥ ९५ ॥
प्रत्येकं तु प्लुतादीनां भवेत्कार्यसपञ्चकम् (?) ।
अनुद्रुतमर्धचन्द्रं व्यञ्जनं चारु नासिकम् ॥ ९६ ॥
अव्यक्तं चेति पञ्चैते पर्यायाख्यमनुद्रुते ।
अर्धमात्रद्रुतं व्योम वलयं बिन्दुके द्रुतम् ॥ ९७ ॥

---

१ °भूयांसस्तालास्ते लक्ष्यवर्त्मनि° । इति सङ्गीतरत्नाकरे पाठो दृश्यते । २ °प्रसिद्धिविधुरत्वेन शास्त्रेऽस्मिन्न प्रदर्शिताः° । इति पाठः सङ्गीतरत्नाकरे । ३ °तद्भेदप्रत्ययार्थं तु लघू° इति पाठः सङ्गीतरत्नाकरे । ४ °प्रस्तारसङ्ख्ये न° इति पाठः सङ्गीतरत्नाकरे । ५ °प्रत्ययार्थं ब्रुवेऽधुना° इति सङ्गीतरत्नाकरपाठः । ६ 'न्यस्याल्पमाद्यान्महतोऽधस्ताच्छेषं यथोपरि' इति सङ्गीतरत्नाकरे । ७ °प्रागूने वामसंस्थांस्तु संभवे° इति सङ्गीतरत्नाकरे ।

लघु त्रिमात्रकं द्रुतमर्धमात्राक्षरं तथा ।
द्विमात्रं च कला चक्रं दीर्घं च गुरु कीर्तितम् ॥ ९८ ॥
द्रुतत्रयं त्रिमात्रं च दीर्घं तालत्रयं तथा ।
अनुद्रुतस्वरूपं च तत्कालेन्दुकलात्मकम् ॥ ९९ ॥
द्रुतस्तु वलयाकारो लघुरूर्ध्वशराकृतिः ।
गुरुर्वक्रधनुर्ज्ञेयं प्लुतस्य शिखरो गुरुः ॥ १०० ॥
पञ्चाङ्गानां स्वरूपादि कथितं नारदेन च ।

इति श्रीनारदकृतौ सङ्गीतमकरन्दे नृत्याध्याये तालप्रस्तारनिरूपणं नाम तृतीयः पादः समाप्तः ।

नृत्याध्याये चतुर्थः पादः ।

अथ मृदङ्गोत्पत्तिलक्षणमाह—

चन्दनं सुकुमारं च सुघृतं च मनोहरम् ।
वक्रकोटरवर्ज्यं हि आनयेदेकखण्डकम् ॥ १ ॥
अष्टषष्टिभिरित्यत्र अङ्गुलीपर्वसंमितैः ।
गणयेन्मृदङ्गौत्सत्यं प्रमाणं प्राह यन्मुनिः ॥ २ ॥
द्वात्रिंशत्सर्वसङ्ख्ये तु मध्ये तत्र नियोजयेत् ।
मृदङ्गस्य मुखे द्वे च पर्व षोडश षोडश ॥ ३ ॥
शिवशक्तिमयौ प्रोक्तौ चर्मौचक्रमनुच्यते (?) ।
दक्षिणे शिवसम्बन्धो वामे शक्तिसमन्वितः ॥ ४ ॥
स षट्त्रिंशति (?) छन्दांसि तन्तवो बन्धनं ततः ।
ब्रह्मविष्णुमहेशानां बन्धनं ग्रन्थिका भवेत् ॥ ५ ॥
समपादतले कृत्वा गृहीत्वा वादनं क्रमात् ।
नमस्कृत्य उभौ हस्तौ समवाद्यं च कारयेत् ॥ ६ ॥
तद्धितोटयशब्देन पञ्चाङ्गुलि निवेदयेत् ।
दक्षिणे चाङ्गुली द्वे च वामे करतलेन वै ॥ ७ ॥

समध्वनिसमायुक्तं श्रूयते पुत्रवर्धनम् ।
राज्याभिवृद्धिरतुलं रणे शत्रुपलायनम् ॥ ८ ॥
एकमेकं भिन्नरूपं ध्वनिं यत्र शृणोति यः ।
शिवनादे भवेद्व्याधिः शक्त्या दारिद्र्यमाप्नुयात् ॥ ९ ॥

(इति मृदङ्गलक्षणम् ।)

अरेखा सारिणी चैव सम्प्रसारी ततः परम् ।
समगैकैव कैवालं हस्तसंयुक्तमेव च ॥ १० ॥
अरेखा सम्पुटीयुक्ते पुरोदृष्टिमवेक्षते ।
सारिणीं दक्षिणभुजे करौ खण्डयुतौ द्रुतौ ॥ ११ ॥
प्रसारिणी वामभुजे हस्ते हस्तकनिष्ठिके ।
अङ्गुली कङ्कणाभावे वेष्टितावग्र आन्त्यकौ ॥ १२ ॥
समगैकेति विख्याता हस्तौ वामस्तने धृतौ ।
कैवालं दक्षिणकुचे लग्नौ चूचुकदर्शनम् ॥ १३ ॥
चतुरं च कुवलं च धृतहस्तमनूरणम् ।
परिक्रमं च पञ्चैते चासंयुतमतं विदुः ॥ १४ ॥
चतुरं कमलं हस्तमुन्नतपार्श्वदक्षिणे ।
वामे पताकवद्धृत्वा चलनं च कुवालकम् ॥ १५ ॥
कनिष्ठाङ्गुलिमुखेन वलये धृतहस्तकम् ।
समपादतलौ दृष्टिपार्श्वेकैककरो मतः ॥ १६ ॥
ससर्पफणिपद्मेन ऊर्ध्वान्तलपुरो यदि ।
दक्षिणे कटिनृत्यं च करोति च मनूरणम् ॥ १७ ॥
वामपार्श्वे तु वलयं हस्तं यत्र करोति सः ।
तर्जन्यङ्गुष्ठकं रन्ध्रं परिक्रममुदीरितम् ॥ १८ ॥
कुरुडायी चित्रतरं तथा चित्रकलीति च ।
घनरवं नागबन्धं चक्रभ्रमरिका तथा ॥ १९ ॥
अतिचक्रभ्रमरी विधूतभ्रमरिका ततः ।
अष्टभ्रमरिकाप्येव नारदेन विचर्चिता ॥ २० ॥

कुरुजायी शिरोभ्रम्यं स्थितं दक्षिणपार्श्वके ।
पार्श्वे दृष्टिर्भिन्नचन्द्र उद्योतगमनं तत ॥ २१ ॥

शिरोभ्रमणम् ।

वामे कटिभ्रमणकं विक्षेपं पा····णे ।
वामस्कन्धं च दृष्टिं च स्थाप्यचित्रकुली तथा ॥ २२ ॥
भ्रमणं दक्षिणकटे (टौ) पादं विक्षिप्य वामके ।
वामस्कन्धे दृष्टिं···· चत्वरं भ्रमणं च तत् (?) ॥ २३ ॥
शिरोभ्रमणकं कृत्वा स्कन्धमध्ये निवेदयेत् ।
समदृष्टिः समगतिर्नागबन्धं कराङ्गुलिम् ॥ २४ ॥
कट ऊर्ध्वं भ्रमणकं कटे लग्नं तु वामकम् ।
वामपार्श्वे तु गमनं चक्रभ्रमरिका भवेत् ॥ २५ ॥
सवैष भ्रमणं कुर्याद्धस्तौ दक्षिणकव्यपि (?) ।
निवेश्य दक्षिणगतिरतिभ्रमरकं भवेत् ॥ २६ ॥
सर्वाङ्गभ्रमणं कुर्यात्समदृष्टिरधो द्वयोः ।
मध्ये मध्ये च नटनं धूतभ्रमरिका भवेत् ॥ २७ ॥
बोटावणी चिगुरुश्च समगात्रं यथाक्रमम् ।
वीरगात्रं विषमकमर्धगात्रं तथैव च ॥ २८ ॥
वीरगात्रफणीवालं चिटिबोटवणिस्तथा ।
शिरांसि नवसङ्ख्यानि नारदस्य मतानि तु ॥ २९ ॥
उन्नतं च शिरः कृत्वा भ्रूविक्षेपश्च वीक्षकैः ।
उद्धृतौ च करौ कृत्वा चलनं बोटवेणिकम् ॥ ३० ॥
वामहस्ते शिरः स्थाप्य (?) कटाक्षैर्वीक्षितो गतिः ।
मध्ये मध्ये च भ्रमकं चिगुरुः कथ्यते बुधैः ॥ ३१ ॥
तथैव दक्षिणे हस्ते स्थापयेच्च शिरो दृशः ।
मध्यमध्ये विरामं च समगात्रमिति स्मृतम् ॥ ३२ ॥

---

१ [illegible] पुस्तके [illegible] त्रुटितानि । २ [illegible] पुस्तके [illegible] ।

अधोदृष्टिशिरःपातवक्त्रं विहृतालुकम्(?) ।
[1]..................तं वरगात्रमिति स्मृतम् ॥ ३३ ॥
अर्धपार्श्वगतिं शीर्षं वक्रकटिसमन्वितम् ।
वामहस्तेऽङ्कुलितटं कटकं विषगात्रकम् ॥ ३४ ॥
अर्धगात्ररञ्जिशिरः पुरोहस्तौ कटीतटौ ।
धृत्वा रञ्जितसर्वत्रनृत्यं नृत्यं च कोहलम् ॥ ३५ ॥
तथैव वामजङ्घोरु शिरो निक्षिप्य दृष्टयः ।
गमनं च फणीवालं [2]........भवेत्तथा ॥ ३६ ॥
अन्तःशिरो बाह्यशिरो(रः) ऊर्ध्वाधो बाहुकुट्टनम् ।
भ्रमति भ्रम्यचतुरो विटभाटावणिक्रमम् ॥ ३७ ॥
चित्रं चैवातिचित्रं च वदन्ति सम एव च(?) ।
चत्वारश्चरणा भेदाः कथिता नारदेन च ॥ ३८ ॥
वक्रपादाङ्कुलीरम्यं नटभावं विनिर्दिशेत् ।
नीचोच्चगमनं कुर्याच्चित्रलक्षणमुच्यते ॥ ३९ ॥
उभौ पादाङ्कुली वक्रौ (क्रे) कृत्वा गमनमादिशेत् ।
मध्ये भ्रमणकं कुर्यादतिचित्रं वदन्ति च ॥ ४० ॥
पादमालाङ्कुलौ गम्यमधोहस्तौ कृतौ नटः ।
अर्धपार्श्ववक्रभेदं भवेद्विदन्ति तालगाः ॥ ४१ ॥
समपादौ समा दृष्टिः समचारीकृतान्विताः ।
समभ्रमणनटत्वं सममित्युच्यते बुधैः ॥ ४२ ॥
त्रयस्त्रिंशन्नटीभावाः सर्वदेशेषु संमताः ।
सर्वशास्त्रसमा भावाः कथिता नारदेन च ॥ ४३ ॥

इति श्रीनारदकृतौ सङ्गीतमकरन्दे नृत्याध्याये हस्तकप्रकरणं नाम चतुर्थपादः समाप्तः ॥

इति सङ्गीतमकरन्दः समाप्तः[3] ।

---

१ अत्रादर्शपुस्तके सप्ताक्षराणि लुप्तानि । २ अत्रादर्शपुस्तके चत्वार्यक्षराणि त्रुटितानि ।
३ इतोऽग्रे आदर्शपुस्तके लेखकेन आदर्शपुस्तकलेखनकालः स्वाभिधानादिकं च निरूपितं यथा—
"शके १५९९ शालिवाहे पिङ्गलनामवत्सरे आश्विनमासे शुक्लपक्षे विजयदशम्यां विद्यापुरमहानगरे श्रीमन्महागणपतिदासकृष्णाजीदत्तेनेदं सङ्गीतमकरन्दाख्यपुस्तकं लिखितम् । महागणपतिर्जयति" ॥

परिशिष्टम् १

श्रुतीनां संख्यानामशुद्धविकृतस्वरप्रदर्शकतालिका ।

श्रुतिसङ्ख्या	श्रुतिनामानि	शुद्धस्वर-नामानि	शुद्धस्वर-श्रुतिसंख्या	विकृतस्वरनामानि	विकृतस्वरगत-श्रुतिसंख्या
१	सिद्धा	०	०	कैशिकनिषादः	त्रिश्रुतिकः
२	प्रभावती	०	०	काकलीनिषादः	चतुःश्रुतिकः
३	कान्ता	०	०	च्युतषड्जः	द्विश्रुतिकः
४	सुप्रभा	षड्जः	चतुःश्रुतिकः	अच्युतषड्जः	०
५	शिखा	०	०	०	०
६	दीप्तिमती	०	०	०	०
७	उग्रा	ऋषभः	त्रिश्रुतिकः	०	०
८	ल्हादी	०	०	विकृतर्षभः	चतुःश्रुतिकः
९	निर्विरी	गान्धारः	द्विश्रुतिकः	०	०
१०	दिरा	०	०	साधारणगान्धारः	त्रिश्रुतिकः
११	सर्पसहा	०	०	अन्तरगान्धारः	चतुःश्रुतिकः
१२	क्षान्तिः	०	०	च्युतमध्यमः	द्विश्रुतिकः
१३	विभूतिः	मध्यमः	चतुःश्रुतिकः	अच्युतमध्यमः	०
१४	मालिनी	०	०	०	०
१५	चपला	०	०	०	०
१६	बाला	०	०	त्रिश्रुतिपञ्चमः, कैशिकपञ्चमो वा	त्रिश्रुतिकः
१७	सर्वरत्ना	पञ्चमः	चतुःश्रुतिकः	०	०
१८	शान्ता	०	०	०	०
१९	विकलिनी	०	०	०	०
२०	हृदयोन्मलिनी	धैवतः	त्रिश्रुतिकः	०	०
२१	विसारिणी	०	०	विकृतधैवतः	चतुःश्रुतिकः
२२	प्रसूना	निषादः	द्विश्रुतिकः	०	०

परिशिष्टम् २

प्राचीनसंगीतग्रन्थानां ग्रन्थकर्तृणां च नामावली जिज्ञासुजनोपकारार्थमत्र प्रकाशिता । तत्र ये ग्रन्था मुद्रितास्तेषां नामानि नक्षत्रचिह्नेन दर्शितानि ।

ग्रन्थनामानि	ग्रन्थकर्तृनामानि
अनूपसंगीतविलासः	भावभट्टः
अभिनयमुकुरम्	... ...
अभिनवभरतसारसंग्रहः	मुम्मडिचिक्कभूपालः
अर्जुनभरतम्	अर्जुनः
अष्टोत्तरशततालक्षणम्	... ...
आदिभरतम्	भरताचार्यकृतम्
आनन्दसंजीवनम्	राजा मदनमालः
औमापत्यम्	उमापतिः
कल्पतरुः	गणेशदेवः
गीतालङ्कारः	अनन्तनारायणः
तालदशप्राणदीपिका	गोविन्दः
तालदीपिका	डिप्पभूपालः
तालप्रस्थम्	... ...
तालप्रस्तारः	... ...
ताललक्षणम्	नन्दिकेश्वरः
तालादिलक्षणम्	... ...
तालाभिनयलक्षणम्	नन्दिकेश्वरः
ध्रुवपदटीका	भावभट्टः
नर्तननिर्णयः	पुण्डरीकविट्ठलः
नाददीपिका	भट्टाचार्यः
नारदी शिक्षा	नारदः
नृत्यरत्नावली	गणपतिदेवसेनः
नृत्याध्यायः	अशोकमल्लः
पञ्चमसारसंहिता	नारदः
*भरतनाट्यशास्त्रम्	भरतमुनिः
भरतभाष्यम्	न्यायदेवः
भरतलक्षणम्	... ...
भरतशास्त्रम्	रघुनाथः
भरतशास्त्रसङ्गीतम्	... ...

ग्रन्थनामानि	ग्रन्थकर्तृनामानि
भरतसारसङ्ग्रहः	चन्द्रशेखरः
मतङ्गभरतम्	लक्ष्मणभास्करः
मुक्तावलिप्रकाशिका	... ...
मुरलीप्रकाशः	भावभट्टः
मेलाधिकारलक्षणम्	... ...
रागकौतूहले नृत्यप्रकरणम्	रामकृष्णभट्टः
रागचन्द्रोदयः	विमलः
रागतत्त्वविबोधः	श्रीनिवासः
रागध्यानादिकथनाध्यायः	... ...
रागनिरूपणम्	नारदः
रागप्रस्तारः	... ...
*रागमञ्जरी	पुण्डरीकविट्ठलः
रागमाला	पुण्डरीकविट्ठलः
रागमाला रागमाला वा	क्षेमकरणः
रागरत्नाकरः	गन्धर्वराजः
रागलक्षणम्	... ...
रागविचारः	श्रीरामः
*रागविबोधः	सोमनाथः
रागविवेकः	... ...
रागादिस्वरनिर्णयः	रघुनाथदासप्रसादः
रुद्रडमरुभवसूत्रविवरणम्	... ...
वीणावाद्यलक्षणम्	... ...
वीरपराक्रमः	वासुदेवः
श्रुतिभास्करः	भीमदेवः
षड्रागचन्द्रोदयः	... ...
सप्ताङ्गलक्षणम्	... ...
*सद्रागचन्द्रोदयः	पुण्डरीकविट्ठलः
सङ्कीर्णरागाध्यायः	... ...
सङ्गीतकल्पतरुः	... ...
सङ्गीतचिन्तामणिः	कमललोचनः
सङ्गीतदर्पणम्	हरिवल्लभः
*सङ्गीतदर्पणम्	दामोदरः
सङ्गीतदामोदरः	शुभङ्करः
सङ्गीतदीपिका	निम्बभूपालः

ग्रन्थनामानि		ग्रन्थकर्तृनामानि
सङ्गीतनारायणः		... ...
सङ्गीतनारायणः		पुरुषोत्तममिश्रः
सङ्गीतपाठः		... ...
*सङ्गीतपारिजातः		अहोबलः
सङ्गीतपुष्पाञ्जलिः		... ...
*सङ्गीतमकरन्दः		नारदः
सङ्गीतमकरन्दः		वेदः
सङ्गीतमीमांसा		कुम्भकर्णमहीमहेन्द्रः
सङ्गीतमुक्तावली		देवाणाचार्यः
,, ,,		देवेन्द्रः
सङ्गीतमेरुः		कोहलः
सङ्गीतरत्नमाला		... ...
*सङ्गीतरत्नाकरः		श्रीशार्ङ्गदेवः
सङ्गीतरत्नावली		सोमदेवपरमर्दी
*सङ्गीतरत्नकरटीका		कल्लिनाथः
* ,, ,,	(अध्याय १)	सिंहभूपालः
,, ,,		कुम्भकर्णनरेन्द्रः
,, ,,	(हिंदीभाषा)	गङ्गारामः
,, ,,		हंसभूपालः
सङ्गीतराघवः		वोमभूपालः
सङ्गीतराजः		कुम्भकर्णः
सङ्गीतविनोदः		... ...
सङ्गीतवृत्तरत्नाकरः		विट्ठलः
सङ्गीतशिरोमणिः		... ...
सङ्गीतसमयसारः		पार्श्वदेवः
सङ्गीतसमयसारः		... ...
सङ्गीतसर्वार्थसारसङ्ग्रहः		... ...
सङ्गीतसारामृतम्		तुलजेन्द्रः
सङ्गीतसारावली		... ...
सङ्गीतसारोद्धारः		हरिभट्टः
सङ्गीतसुधा		... ...
सङ्गीतसुधाकरः		सिंहभूपालः
सङ्गीतसुधाकरः		हरिपालः
सङ्गीतसुन्दरः		सदाशिवदीक्षितः
सङ्गीतसुरामृतम्		तञ्जावरनिवासि भोसले इत्युपाह्वतुलाजिमहाराजः

ग्रन्थनामानि	ग्रन्थकर्तृनामानि
सङ्गीतसेतुः	गङ्गारामः
सङ्गीतामृतम्	कमललोचनः
सङ्गीतोपनिषत्	सुधाकलशः
सारसंहिता	नारदः
स्वरप्रस्तारः	... ...
स्वरमञ्जरी	... ...
स्वरमेलकलानिधिः	... ...
*स्वरमेलकलानिधिः	रामामात्यः
*हृदयप्रकाशः	हृदयनारायणदेवः
*हृदयकौतुकम्	हृदयनारायणदेवः

Additional List of Sanskrit Works on Music

(Supplied by the Central Library, Baroda, as found in several Mss.-Catalogues and Reports.)

Dr. Bhandarkar's Report 1887-91.

१. संगीतरागकल्पद्रुम.

India office Library Catalogue–Tawney & Thomas.

२. संगीतनारायण. by नारायण.

Buhler's Catalogue–Gujarat, Kathiawad, etc.

३. संगीतरत्नाकर. by सारंगदेव (as distinguished from शार्ङ्गदेव which is also mentioned in the same place)

४. संगीतोपनिषत्सार.

Oudh Catalogue.

५. संगीतसुधा. by भीमनारीन्द्र.

६. संगीतनृत्य. „ शारंगदेवसूरि.

७. संगीतनृत्याकर. by भरताचार्य.

Bodleian Library Catalogue.

८. हस्तरत्नावली. by राघव.

India office Catalogue-Pt. 2-Eggeling.

९. ताललक्षण. by कोहलाचार्य.

Oppert's List.

१०. संगीतसुधाकर. (संगीतरत्नाकरव्याख्या) by शिंगभूपाल.

Tanjore Catalogue-Burnell.

११. दत्तिलकोहलीयम्. by दत्तिलकोहल.
१२. अभिनयदर्पण ,, नंदिकेश्वर.
१३. बांधव्यहस्तलक्षण.
१४. हस्तलक्षण.
१५. अभिनयलक्षण.
१६. भरतार्णव by सुमति (Condensed from नंदिकेश्वर's भरतार्णव.)
१७. नाट्यलक्षण.
१८. भरतीयनाट्यलक्षण.
१९. षाड्वित. by डुंडिव्यास.
२०. कीर्तन
२१. राघवप्रबंध.

Mysore & Coorg Catalogue-Rice.

२२. नंदिभरत. by नन्दी.

Mysore Catalogue.

२३. संगीतपद्यावली.
२४. अभिनयप्रकरण. (शिवतत्वरत्नाकरांतर्गत)
२५. संगीतचूडामणि. by हरिपालमहीपति.
२६. संगीतलक्षणदीपिका. by गौरणार्य.
२७. संगीतलक्षण.
२८. संगीतसारसंग्रह. by पार्श्वदेव.

Central Library, Baroda.

२९. संगीतचूडामणि. by कविचक्रवर्ति.
३०. मानकौतूहल. (संकीर्णाध्याय only) in हिंदी.
३१. भावप्रकाशन. by शारदातनय.
३२. मानमनोरंजन. by मयाशंकर.
३३. संगीतराज by कुम्भकर्ण-
which is a संगीतमीमांसा of 16,000 granthas consisting of five Ratnakos'as: (1) पाठ्यरत्नकोश (2) गीतरत्नकोश (3) वाद्यरत्नकोश (4) नृत्यरत्नकोश (5) रसरत्नकोश, of which No. 2 consisting of about one third of the work is yet to be secured.

Rajendralal Mitra's Notices of Sanskrit Mss.

३४. रागमाला. by जीवराजदीक्षित.

Bikaner Catalogue.

३५. सुबोधिनी. (कल्पतरुव्याख्या) by गणेशदेव.

३६. संगीतसार.

३७. संगीतरत्नाकर. by बूनरक son of लक्ष्मणाचार्य.

Madras Oriental Library.

३८. अभिनयशास्त्र. by कोहल.

३९. स्वररागसुधारस. (तालदशप्राणप्रकरण) तेलगूभाषांतरसहित.

४०. नाट्यचूडामणि. by सोमनार्य.

४१. भरतार्थचंद्रिका. by नंदिकेश्वर.

४२. मृदंगलक्षण.

४३. रागवर्णनिरूपण.

४४. रागसागर.

४५. संगीतरत्नाकर. (आंध्रभाषाटीकासहित)

Mr. T. C. Krishnaswami Iyer of Mylapore gave the following names in the "Hindu" of Madras:—

Miscellaneous

४६. संगीतरत्न. } Both by राधामोहन सेन.
४७. संगीतरंग. }

४८. नाटकदर्पणसूत्र.

४९. संगीतसूत्रधार. by हरिजीवनब्राह्मणिक.

५०. संगीतसूत्र by मनोमधधनदि (ति?) (Probably मम्मट).

५१. संगीतकौमुदी by नारायण.

५२. अष्टमातृकाप्रबन्ध.

५३. गीतप्रकाश.

५४. हस्तमुक्तावलि.

सङ्गीतमकरन्दग्रन्थस्थानां पारिभाषिकादिशब्दानां वर्णानुक्रमणी।

	पृष्ठं
अङ्गतालाः	४२
अङ्गदः	१३,३६
अङ्गानि	४५
अतिचित्र	५१
अतिभ्रमरकं	५०
अत्रि	४
अद्भुत	५
अनाहत	१,२
अनुराधा	५
अनुवादी	३,१२
अनुष्टुब्	४
अन्तर	७
अभिरुद्गता	६
अरूपा	११
अरेखा	४९
अवरोही	३
अश्वक्रान्ता	६
आञ्जनेयः	१३
आत्रेयः	४
आयति	११
आरोही	३
आलापा	६
आलिङ्ग	२२
आहतः	२
इतिहासज्ञः	२८
उग्रा	८
उच्चनीचा	११
उडु	२२
उत्तरमन्द्रा	६
उत्तरा	५
उत्तरायता	६
उष्णिक	४
ऋषभः	३
औडवः	१२,२६
कच्छपी	२२
कण्टक	५१
कटका	२२
कन्या	५
कपिलः	४
कमलास्यकः	१३
कम्पित	१३
करणा	२२
करुणा	५
कल्लोपनता	६
कविः	२८
कश्यपः	१३,३३
काकली	७
कान्ता	८
काललक्षणम्	४३
काहला	२२
किन्नरी	२२
किन्नरेशः	१३
कुपित	१३
कुबेरः	१३
कुब्जिका	२२
कुम्भ	५
कुरुडायी	५०
कुवलं	४९
कुशद्वीप	४
कुशिकः	१३
कूटकारः	२४
कूटतानः	१०
कूर्मारवा	११
कूर्मी	२२
कैवालं	४९
कैशिकी	११
कोहलं	५१
कोहलः	३३

	पृष्ठं
क्रमादुच्चितः	१३
क्रौञ्चद्वीपः	४
क्षान्तिः	८
गणेश्वरः	४
गान्धारः	३
गान्धारग्रामः	५
गान्धारमध्यमा	१०
गान्धारपञ्चमी	१०
गायकः	२८
गायकलक्षणम्	२३
गायत्री	४
गायनः	२५
गीतं	१,३
गीतदोषाः	२५
गुञ्जा	२२
गुरुः	५
गोपीपतिः	३
गोपुच्छः	२२
गौतमः	४
ग्रहः	४५
ग्रामः	५
घनरवं	५०
घर्घरिकः	३०
घोषका	२२
घोषावती	२२
चक्रभ्रमरिका	५०
चण्डी	१३
चतुरं	४९
चन्द्रसुतः	५
चपला	८
चर्माणि	२
चिगुरुः	५०
चिता	६
चित्रकली	५०
चित्रं	५१
चित्रा	४,२२
चित्रावती	६

	पृष्ठं
जगती	४
जमदग्निः	४
जम्बुद्वीपः	४
जया	२२
जातिः	१०,४५
ज्येष्ठा	२२
ज्योतिषः	२८
झर्झरः	२२
झर्झरी	२२
झषः	५
डमरुगा	२२
डिण्डिमः	२२
ढक्का	२२
तन्त्रनादिः	१२
तारः	१०
तालप्रबन्धः	३९
तालभेदाः	३४
ताललक्षणानि	३५
तालशब्दनिष्पत्तिः	४३
तालोत्पत्तिः	३२
तुम्बुरुः	४,१३,३३
तुला	५
त्रिष्टुब्	४
दक्षः	४
दक्षिणमार्गः	४५
दर्दुरः	२२
दिरा	८
दीप्तिमती	८
दुर्गा	३३
देशीक्रिया	४४
धनिष्ठा	४
धनुः	५
धृतभ्रमरिका	५०
धृतहस्तं	४९
नकुली	२२
नखं	२
नटः	३०

	पृष्ठं
नागबन्धं	५०
नाट्यं	१
नाट्यशाला	२७
नादभेदाः	२३
नादोत्पत्तिः	१
नारदः	१,३,४,५,६,१३,३३
निर्विरी	८
निवृत्तः	१३
नृत्यं	१
पङ्क्ती	४
पञ्चमोदीच्यवा	१०
पटहः	२२
पणवः	२२
पराशरः	४
परिक्रमं	४९
परिवादिनी	२२
परिहासकः	२८
पात्रलक्षणं	३०
पार्वतीपतिः	३
पुराणिकः	२९
पुष्कर (द्वीप)	४
पुष्पाञ्जली	३२
पूर्वाषाढा	५
पौरकी	६
प्रकृतः	१३
प्रकृतिः	११
प्रभावती	८
प्रसन्नमध्यः	१३
प्रसन्नादिः	१२
प्रसन्नाद्यन्तः	१२
प्रसन्नान्तः	१२
प्रसूना	८
प्रस्तारः	४७
प्रेङ्खः	१३
फणिबालं	५१
बलिः	१३
बाला	८

	पृष्ठं
बिन्दुः	१३
बीभत्सः	५
बोटावणी	५०
बृहती	४
ब्रह्मा	२,४,१३,३३
ब्राह्मी	२२
भटः	२८
भरतः	१३,३३
भार्गवः	४
भास्करः	४
भूमीसुतः	५
भृगुः	५
भृङ्गिदेवेन्द्रः	१३
मघा	४
मड्डुः	२२
मतङ्गः	१३,३३
मत्सरीकृत्	६
मध्य	१०
मध्यमग्रामः	५
मनूरणं	४९
मन्द्रः	१०
मन्द्रा	२२
मर्दलः	२१
महती	२२
मात्रा	४४
मात्रा (तृ) गुप्तः	१३
मादली	६
मार्गः	१२
मार्गलक्षणम्	४३
मालिनी	८
मुखरिका	२२
मूर्च्छना	७
मृदङ्गः	२२,४८
मृदङ्गलक्षणम्	२१
यक्षः	१३
योगिनः	२
रजनी	६

	पृष्ठं
रागगान्धारी	१०
रागनामानि	१४
रागरङ्गः	२६
रागालप्तिः	१२,२६
रावणः	१३
रावणी	२२
रूपालप्तिः	२,१२,२६
रौद्रः	५
रौद्री	२२
लघुसुलादिः	४०
लयकालः	४६
लोहाः	२
वह्निः	४
वरगात्रम्	११
वर्णकविः	२४
वसिष्ठः	४
वहन्ती	२२
वाग्गेयकारकः	२३
वादी	३,१२
वाद्यं	१
वायुः	२,१३
विकलिनी	८
विकृतिः	११
विक्रमः	१३
विजृम्भितं	१३
विदन्ति	५१
विद्वान्	२७
विभूतिः	८
विमता	११
विरूपा	११
विवर्द्धन	१३
विवादी	३,१२
विठ्ठलः	१३
विशाला	६
विश्वकर्मा	१३
विश्वावसुः	१३
विस्तारिणी	८

	पृष्ठं
वीणा	२
वीणालक्षणं	२२
वीणादेहः	१२
वीरः	५
वृश्चिकः	५
वृत्तिः	१०
वैद्यः	२९
वैष्णवी	२२
व्यालः	१३
शक्तिः	३३
शतभिषक्	४
शनिः	५
शम्भुः	२२
शर्वः	४
शशी	५
शाकलद्वीपः	४
शार्दूलः	१३,३३
शान्तं	५
शान्ता	८
शारदा	४
शालङ्कायनः	४
शाल्मलीद्वीपः	४
शिखा	८
शुद्धतारः	१०
शुद्धमध्यः	१०
शुद्धमध्या	६
शुद्धषड्जा	६
शुद्धसालगः	२६
शुभा	६
शुष्क	१०
शृङ्गं	२२
शृङ्गार	५
शौरिः	१३
श्रीनाथः	४
श्रीवत्सः	४
श्रुतयः	८
श्वेतद्वीपः	४

	पृष्ठं		पृष्ठं
षड्जः	२,३	सम्प्रसारी	४९
षड्जकैशिकी	१०	संरा	६
षड्जग्रामः	५	संवादी	३,१२
षड्जमध्या	१०	संवीरी	६
षड्जादि	१०	सामवेदः	३
षण्मुखः	१३	सारस्वती	२२
षाडवः	१२,२६	सारिणी	४९
सदाशिवः	३३	सिद्धा	८
सभापतिः	२९	सिंहः	५
सभालक्षणं	२७	सुप्रभा	८
समं	५१	सुमुखी	६
समगात्रं	५०	सूर्यः	५
समगीतं	१०	सैरन्ध्री	२२
समगैका	४९	स्थायी	३,१२
समुद्रः	१३	स्वरः	१४
सरस्वती	२,१३	हतः	१
सर्पसहा	८	हनुमान्	३३
सर्वरत्ना	८	हरिः	१३,३३
सङ्कीर्णरागाः	२६	हरिणाश्वा	६
सङ्गीतं	१	हरिश्चन्द्र	१३
सञ्चारिणी	१२	हृदयोन्मलिनी	८
सञ्चारी	३	हृष्यका	६
सन्धयन्ती	१०	ल्हादी	८
सम्पूर्णः	१२,२६		